अंक-72-73
जून-सितं० 2014

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

भोजपुरी भाषा पर विशेष

स्व० रघुवंशनरायण सिंह के साथ भोजपुरी भाषा पर डा० रघुवंशमणि पाठक, प्रगत द्विवेदी, राजीव पाराशर। डा० गदाधर सिंह के ललित निबंध। भोजपुरी सेवी पाण्डेय कपिल । श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह से साक्षात्कार । तैयब हुसैन, रमाशंकर श्रीवास्तव, आशारानी लाल, राजगुप्त, विनोद द्विवेदी, रामेश्वर सिन्हा, अतुलमोहन प्रसाद के कहानी। अंक के खास कवि शशि प्रेमदेव के साथ आसिफ रोहतासवी, अशोक द्विवेदी, भालचंद त्रिपाठी, विजयानंद तिवारी के कविता। एकरा आलावे गतिविधि आ कसौटी/समीक्षा, आजकल आदि स्तम्भ

सांस्कृतिक मूल्यबोध के देश-गीत

■ अशोक द्विवेदी

(एक) जहवाँ हेरइलें आके
बड़-बड़ ज्ञानी...., उहे देसवा
झरे पथरो से पानी; उहे देसवा
हवे मोर देसवा !

जोगिया करेलें धन-संपति स्वाहा
दुलहा बनेलें जहाँ शिव बउराहा
दुलहिन गउरा के हवे रजधानी !
उहे देसवा....झरे पथरो से पानी !
हवे मोर देसवा!

तप करें जहाँ रिसि सत चित खातिर
देहियाँ तजेलें लोग परहित खातिर
झुकि-झुकि जालें बड़-बड़ अभिमानी !
उहे देसवा....झरे पथरो से पानी !
हवे मोर देसवा।

रतिया चढ़ावेले अँजोरिया के चानी
किरिन पखारे भोरे सोनवाँ के पानी
रूख-सूख खाइ हँसे सरग-पलानी !
उहे देसवा....झरे पथरो से पानी !
हवे मोर देसवा।

सहला के सीमा तूरे लोगवा इहाँ के
बाकि स्वाभिमान बदे लड़े छतिया के
नित उतसर्ग के गढ़ेला कहानी !
उहे देसवा.....झरे पथरो से पानी !
हवे मोर देसवा।

मिलि-जुलि पूरे जहँ जन गन सपना
प्रकृति रचेले नित नव-नव रचना
खोंइछा भरेलें जहाँ औढरदानी !
उहे देसवा.....झरे पथरो से पानी !
हवे मोर देसवा।

■■

(दू) मोके देसवा क बाटे गुमान
तिरंग - रंग लहरल करे
जेकर कीरति बा जग में महान
तिरंगा लहरल करे !

परबत घाटी नदिया पोखर/सजे सबुज धरती बन-तरुवर
प्रेम शान्ति के छंद सुनावे/त्याग अउर बलिदान सिखावे
जहाँ चहकत-चिरइयन क गान
तिरंगा लहरल करे !

जेकर पगरी हिमगिरि धारे/चरन, समुन्दर रोज पखारे
विन्ध्य-हिमाचल जेकर गहना/गंडक सरजू गंगा जमुना
नित मलि मलि करावे असनान
तिरंगा लहरल करे !

प्रेम-भगति-रस छलकत गगरी/संत-गुनी, जोगियन के नगरी
चमके जेकर हरदम पानी/कन-कन लागे सोना-चानी
इ धरतिया हऽ रतनन क खान
तिरंगा लहरल करे !

विद्यापति जायसी कबीरा/तुलसी सूर समर्पित मीरा
परहित-धरम, ज्ञान के गरिमा/गुरुनानक अस गुरु के महिमा
करीं कतना ले केकर बखान
तिरंगा लहरल करे !

कतने बेरि देंहि रउनाइल/मन पर इचिको आँच न आइल
जगल बिबेकानन के स्वर से/गान्ही तिलक सुभाष अमर से
फिरू जागल सुतल अभिमान
तिरंगा लहरल करे !

ए' धरती के सौ-सौ रँग बा/सँग-सँग जिये-मुवे के ढँग बा
गोबर लीपल राम-मड़इया/अँगना उचरेले गवरइया
जहाँ उतरेला पूनो क चान
तिरंगा लहरल करे !

■■

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

अंक: 72-73 | www.bhojpuripaati.com | जून-सितं० 2014

आजीवन सदस्य/संरक्षक-

तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), जे.जे. राजपूत (भडूच, गुजरात), राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (रामपुर उदयमान, बलिया), डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर, बिहार), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ) एवं श्री कन्हैया पाण्डेय (मैरीटार, बलिया)।

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

उप-संपादक
विष्णुदेव तिवारी

सह-संपादक
हीरा लाल 'हीरा', सान्त्वना,
सुशील कुमार तिवारी

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

डिजाइन-ग्राफिक्स
शैलेश कुमार, आस्था

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

विशेष प्रतिनिधि

सुशील कुमार तिवारी (नई दिल्ली), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), आर्या नीलम भारवि (बक्सर, बिहार) रामयश अविकल (आरा), विजयराज श्रीवास्तव (लखनऊ), अजय कुमार ओझा (जमशेदपुर), डॉ० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), डॉ० कमलेश राय (मऊ, आजमगढ़), डॉ० वशिष्ठ अनूप, विनोद द्विवेदी (वाराणसी), आकांक्षा (मुम्बई), आनन्द संधिदूत (मिर्जापुर), कुबेर नाथ पाण्डेय (गाजीपुर), शशि प्रेमदेव (बलिया), प्रभात कुमार तिवारी (तूरा, मेघालय), रामानन्द गुप्त (सलेमपुर, देवरिया), प्रशान्त द्विवेदी (कोलकाता)।

संपादन-कार्यालय:-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001
एवं श्रीरामविहार कॉलोनी, जिला जेल के पीछे, बलिया
मो०-08004375093, +91-9919426249
e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com

एक अंक पर सहयोग-40/-
सालाना सहयोग 180/
(डाक व्यय सहित)

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में....

हमार पन्ना – • देश दुनिया आ हिन्दुस्तान/3-4

भाषा-चिन्तन – • तनी हट-हटा के/प्रगत द्विवेदी/5-6

थाती – • भोजगण आ भोजपुरी भासा/स्व० रघुवंशनारायण सिंह/35-40

साक्षात्कार – • नागेन्द्र प्रसाद सिंह से बात/दिलीप कुमार/7-11

सामयिकी – • अब आई भोजपुरी भासा के अच्छा दिन/राजीव पाराशर/41-42

हस्तक्षेप – • भोजपुरी हिन्दी का भेद में भाषिक निजता/डा० रघुवंशमणि पाठक/31-32

भोजपुरी सेवी – • पाण्डेय कपिल/आनन्द संधिदूत/12-13

ललित निबंध – • रखबो नयन के हुजूर/गदाधर सिंह/14-15

कविता/गीत/गजल

• अशोक द्विवेदी/कवर पेज- 2 • शिवबहादुर प्रीतम/6 • मिथिलेश गहमरी/16,
• शिवजी पाण्डेय रसराज/16 • विजयानंद तिवारी/17 • आसिफ रोहतासवी/28,
• भालचंद त्रिपाठी/40 • शिलीमुख/कवर-3

कहानी

• सपना जगावत रही/रमाशंकर श्रीवास्तव/18-20
• लमहर सफर आ पंचर पहिया/तैयब हुसैन पीड़ित/21-24
• पवित्रा/आशारानी लाल/25-26

अंक के खास कवि – • शशि प्रेमदेव/27-28

लघुकथा

• पहिचान पर संकट/रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष/20 • काशी में मोक्ष/विनोद द्विवेदी/30
• 'असर' आ 'बन्हुवा मजदूर'/अतुलमोहन प्रसाद/34

सोच-विचार – • सबमें साँस बा/डॉ० जनार्दन राय/29-30

व्यंग्य कहानी – • हिटलरी/राजगुप्त/33-34

कसौटी/समीक्षा

• कविता में कुछ खीस कुछ प्रीत/विष्णुदेव तिवारी/43-44
• एगो नया कथा-विन्यास/शशि प्रेमदेव/44
• आत्मानुभूति के सहज अभिव्यक्ति/अशोक द्विवेदी/45

गतिविधि

• 'पाती' अक्षर सम्मान आ विश्व भोज० सम्मेलन के अधिवेशन/नवचन्द्र तिवारी/46-47
• बिहार भोजपुरी अकादमी के गोष्ठी/विष्णुदेव तिवारी/47-50
• डा० राममनोहर लोहिया सेवा संस्थान भागलपुर के आयोजन/हीरालाल हीरा/50
• स्वतंत्रता दिवस पर मैथली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली के आयोजन/सान्त्वना/51

आजकल – • कुछ तीर कुछ तुक्का/ऋचा/52

देश-दुनिया आ हिन्दुस्तान

प्राकृतिक संसाधनन क अपना-अपना ढंग से धुआँधार दोहन का साथ विज्ञान तकनीकीं प्रौद्योगिकी आ संचारतंत्र का सहारे संसार में दिन दूना-रात चौगुना विकास आ व्यापार भइला के खबर सुनत, इहे लागेला कि दुनियाँ कहाँ से कहाँ चलि गइल। कमाल ई कि ऊ 'चान मामा' आ 'मंगल काका' का धरती पर पहुँच के जीवन खोजे लागल। ए विकास यात्रा में कतना-कतना विध्वंस आ बिनाश के बीया बोआइल। कहीं कहीं त पूरा देश का, मानवी-समाजे खतम हो गइल आ अभी खतम हो रहल बा। अबे हालहीं में यूक्रेन, अफगानिस्तान, ईराक आ गाजापट्टी में अहंकार आ हठधर्मिता वाला वर्चस्व का लड़ाई में होत नरसंहार सवाले खड़ा करत बा। कहीं 'हमास', कहीं 'आइ एस आइ एस' त कहीं इजराइल आ बगदाद, कहीं 'तालिबान' त कहीं 'अलकायदा' कहीं शीया-सुन्नी यहूदी त कहीं फलस्तीनी। मुवे-मराये वाला लोगन के दोस अतने बा कि ऊ लोग कवनो मानव जाति, धरम या भौगोलिक क्षेत्र में पैदा भइला के अपराध कइले बा। एही अजीबोगरीब माहौल में हमनी का आपन अड़सठवाँ स्वतंत्रता दिवस मनावत एक बेर फेर अपना बुढ़ात-सुराज के नफा-नुकसान का गुणा-भाग में जुट गइल बानी जा। केके, का भेटाइल भा का मिलल? देश के विकास भइल त का, हमरा प्रदेश भा हमरा 'एरिया' क ना भइल। ई हो गलत नइखे। देश में त हर क्षेत्र के बढ़े, बिकसे के बराबर मोका मिले के चाहीं, ई ना कि खाली बड़का नेता भा मंत्री का एरिया के तरक्की हो जाव आ आस-पास भंभ लोटे। सोचे के एगो ईहो तरीका होखे कि 'सुराज' का बाद हम, अपना समाज आ देश के का दिहनी? नव-निर्माण आ विकास में हमार आपन भूमिका का रहे? जवना माटी में हम पैदा भइनी, ओकरा खातिर का कइनी?

दरसल जवना पैमाना पर विकास के नाप-जोख करे क प्रचलन बा, ओमे क्षेत्र क भौतिक समृद्धि, उपार्जन के पुरान-नया स्रोत का साथ आदमी के गरीबी-अमीरी, जीवन स्तर आ ऊ संसाधन बा, जवना से छोट बड़ सबकर शिक्षा-स्वास्थ्य, रोजी-रोटी, सुरक्षा आ न्याय मिलत बा। छाछठ-सतसठ बरिस से हमनी का ईहे कुल्हि सझुरावे-सइहारे में लागल बानी जा। सँगही के आजाद भइल चीन अतना तेजी से बढ़ल-मोटाइल कि देखि के अहस लागत बा। समृद्धि आ शक्ति के नया इतिहास रचत, अब ऊ अपना 'वर्चस्व' खातिर बेचैन बा। 'जियऽ आ जिये दऽ' के नारा त हमनी के रहे। हमनिये का अपना देश का भीतर एकर कतना पालन-पोसन कइनीं जा? विकास आ तरक्की

का एह उठापठक में कुछ नया ताम झाम हर बेर जुट जाला। बिजली पानी, सड़क-पुल, अस्पताल, स्कूल, बाजार, आ सुरक्षा के मसला त खैर पैदाइशी मसला हऽ। बाकि विकास का एह 'ग्लैमर' में कबो आँखि सपना जाले, कबो ओम्मे से लुत्ती फेंके लागेला। कारन हमन क सोच-सरोकार आ नजरिया बा कि हमहन एके कवना रूप में देखत-समझत आ अपनावत बानी जा।

आपन स्वतंत्रता फइलावे में दुसरा के स्वतंत्रता हजम कइल हमनी का सुराज के खासियत बनल जात बा। विकास के नाम पर मानवता आ मानवीय संवेदना के अन्तः प्रवाह रोकत, संस्कार आ संस्कृति के ढकेलत, सबका कल्यान का बजाय कुछ खास लोगन के फायदा-नुकसान आड़े आ जाला। आधुनिकता आ विकास सबकर भविष्य गढ़े-बनावे आ नया 'विजन' देबे का कामे आवे त का पूछे के? बाकिर जब ऊ मानवीय सम्बन्ध आ मानवीय-गरिमा के दरकचे लागी त प्रकृति, पर्यावरण, खेती-बारी, गाँव-गिराँव, नदी-तलाब, पहाड-जंगल आ ओकरा संग रहे वालन का आत्मा प खरोंच लागी। मानवता मानवी मूल्य आ ओकरा गरिमा के खेयाल कइला बिना, तरक्की आ विकास के कवनो माने नइखे। दबंगई, लंपटई आ लूटे हथियावे वालन पर कठोर अंकुश लगवला बिना कूल्हि विकास बेकार हो जाई।

ई साँच बा कि सवा सौ करोड़ लोगन के एक्के ढंग-ढर्रा पर, एक्के लबिदा से ना हाँकल जा सके। भाषा संस्कृति आ संस्कार के क्षेत्रीय बुनावट वाला जनमानस के, ओकरा बुनियादी सोच आ चिन्ता के समझला बगैर ओकर सही आकलन हड़बड़ी में ना कइल जा सके। बाकिर अब त सुराज के साठन बरिस बीत

गइल। एह जनमानस के राजनीतिक उपयोग का अलावा, अउर का भइल? एगो दूगो ना, कई गो राजनीतिक दल जनमले स, बाकि आज ले निदान ना भइल। इ दूसर बात बा कि जवना मूल (बेसिक) पर जम के काम होखे चाहत रहे, ऊ जस के तस बा याने अब फेर से उहें से शुरू करे के बा। बाढ़, भूस्खलन आ चट्टान घसकला, बादर फटला का चपेट में जिये खातिर जूझत लोगन के फौरी सहायता-आड़ छांह आ रोटिये देहला तक सीमित रहित त कवनो बात ना रहित। बात एकरा से आगा ओ मनुष्यता आ ओकरा मूल्यन के बा, जेकरा पोसन पालन के क्रियाशीलता एह विकसित तंत्र में नइखे। कोरम पूरा कइला आ दिल से मदद कइला में फरक होला। आपदा शिविरन में भा ओकरा से बाहर तड़फड़ात असहाय लोगन का गरिमा का रच्छा के साथ सहायता आ संबल का बजाय ओकरा मजबूरी के फायदा उठावे वाला लोग एही विकसित समाज के बा। अइसनका लोग अबहियों साँड़ लेखा छूट के चरत बा। इन्सान जब इंसानी फर्ज आ कर्म के भूल जाइ त एह सभ्यता और विकास के का फायदा?

सभ्यता आ विकास का एवरेस्ट प चढ़े का जुनून आ हामाहूमी (प्रतिस्पर्धा) में इन्सानी हैवानियत, बेशर्मी आ क्रूरता अतना बिकराल रूप ध लेले बिया कि लोगन के महतारी, बाप, भाई-बहिन आ बेटी ले नइखे चिन्हात। नैतिकता के अनैतिक निषेध करत हमहन अतना 'माडर्न' हो गइलीं जा कि स्वतंत्रता के स्वच्छन्दता आ अराजकता से जोड़ि के निजी विस्तार आ अतिक्रमण के मान्यता देबे लगनी जा। इन्सानी फर्ज आ इन्सानी कर्म त दूर' अपना गलत व्यवहार आ आचरन के नकली आडंबर भा तर्क से तोपत उहे करत चलल जात बानी जा, जवना से 'इन्सानियत' मर सके।

जाति, धर्म, वर्ग, लिंग आदिमिये के होला आ कुल्हि मिलिये के कवनो समाज आ देश बनेला। भेदभाव वर्चस्व कायम करे बदे दुसरा के दबावल-दरकचल आ नेस्तनाबूद करे वाली पशुता त आदमी के आदमी रहही ना देई। इन्सान अगर दुसरा का दुख, पीरा आ संकट देखि के खुश होई त समझ लेवे के चाही कि इन्सानियत मर गइल। फेर चाहे हमहन विज्ञान तकनीकी आ दोसर संसाधन कतनो बढ़ा लीं जा। मानव-संस्कृति आ मानवीयता बाँचल रही, तबे एह विकास के उपयोगिता बा।

भोजपुरिहा संस्कृति त अन्याय अधर्म आ दमन का प्रतिकार के संस्कृति हऽ। सबके सँगे जोरि-नाथि के चले के सामूहिक-भाव वाली संस्कृति ओह सह अनुभूति आ सह अस्तित्व के संस्कृति हऽ, जवना में एगो च्यूंटी आ चिरई तक के रच्छा-संरक्षा कइल जाला। देश का आजादी खातिर चढ़ बढ़ि के लड़े आ त्याग बलिदान करे वाला भोजपुरिहा अब काहें अपने में लड़त-मुवत बाड़न सऽ। जे देश के आजादी खातिर अगुवाइल रहें ऊ देश के नव-निर्माण आ विकास खातिर काहें पछुवाई? जे मानवी-मूल्यन के सबसे बड़ पोषक रहे ऊहे काहे मानवीय मूल्यन के विध्वंस होखे दी? सम्प्रदायिकता का नाँव प चिचियाये वाला आजु ले सबके बँटलही बाड़न सऽ। ई झुठिया राजनीतिक नौटंकी आ नकली चिचियाहट बन हो जाइत त देश क ज्यादा भला होइत। दुर्भाग से कुछ राजनीतिक दल अपना दुकानदारी प खतरा देख के एक बेर फेर ऊहे पुरान दाँव अजमावें में जुटल बाड़न स। ई हमन क काम आ हमन के फर्ज हऽ कि विकास क ऊँचाई चढ़त खा अपना 'मानवता' के मशाल जरवले रहीं जा। अपना सामरथ आ पुरूषार्थ के बटोरि के अपना समाज आ देश के विकास खातिर आपन काम निष्ठा से करीं जा। अपना अधिकार का संगे अपना कर्तव्य के निरवाह करीं जा। पाँच लोग आगा बढीं त खुद व खुद हजार लोग संगे आ जाई। जय भोजपुरी ! जय हिन्द!! जय भारत!!! ■■

अशोक द्विवेदी

तनी हट-हटा के....

■ प्रगत द्विवेदी

बचपन से आजु ले पिताजी के 'भोजपुरी'– भोजपुरी रटत देखत अइलीं। ऊ आजु ले ना थकलन, बाकिर हमनी का जरूर घबड़ा गइली जा। भोजपुरी के पहिचान, ओकरा प्रसार आ विकास के बात–बखान सुनत हम बलिया से आके दिल्ली रहे लगनी बाकि आजु ले हमके ई ना बुझाइल कि कवि, साहित्यकार आ समीक्षक लोग एगो 'खास गोलाई' (फिक्स सर्किल) में काहें घूमेला? ई साँच बा कि भोजपुरी अपना खास मौलिकता आ सहजता का कारण बोले– बतियावे में आपन विशेष पहिचान बनवले बिया, ऊ मजबूतो भइल बिया बाकि गौर करीं त पता चली कि आज का स्थिति आ माहौल में भोजपुरी एगो 'अजबे दशा' में पहुँचल जात बिया। एह 'अजबे दशा' भा 'अजबे स्थिति' का बारे में जेतने भोजपुरिहा लोगन से पूछल–जानल जाव, ऊ ओतना तरह के बिचार आ तर्क देत भेंटाइ जाई। कुछ लोग इतिहास, कुछ वर्तमान, कुछ भविष्यो का बारे में आपन राय देत नजर आई लोग। एह तरह से कवनो एगो सामूहिक कोसिस खातिर राह ना बनि पाई। आज हमहूँ त एकरा बारे में एगो वैचारिक–पोटली बन्हले एह पन्ना के सियाही से रँग रहल बानी। त काहे ना हमनी का सब केहू तनी हट–हटा के सोचल–समझल आ चलल जाव?

भोजपुरी का नाँव पर खाली कुछ गावे–बजावे वाला, संस्था चलावे वाला आ साहित्यकार लोगन का क्रियाशीलता से काम न चली। लगभग पचहत्तर पर्सेन्ट भोजपुरिया लइका, प्रोफेश्नल क्लास, नोकरी–पेशा वाला युवा वर्ग के त ई पते नइखे कि भोजपुरी में कुछ लिखलो–पढ़ल जाता आ अपना एह भाषा के पढ़े–पढ़ावे वाला साहित्यो बा। ढेर लोग त आजुओ इहे बूझत बा कि भोजपुरी खाली एगो बोली हऽ आ ओकरा के यू पी/बिहार/मध्यप्रदेश में बोलल जाला राह में केहू भोजपुरी में बोलत–बतियावत मिल जाव त इहे समझी कि ई अपने ओर के हउवन, चलऽ अपनापन मिली, मनसायन रही भा कम से कम राह में सुविस्ता रही; बस! आज एकरा से आगा बढ़ि के बूझे–बुझावे खातिर कुछ पहल कइला क जरूरत बा। पहिला पहल साहित्यिक लोग करे त नीक होई। कई बरिस से बलिया–गाजीपुर–बनारस आवत–जात सबकर बात–व्यवहार समझत हमार निजी समझ ईहे कहत बा कि जबले बोलले–बतियवला लेखा, भोजपुरी लिखलो–पढ़ला के गति तेज ना होई त आपन पहिचान, आ बड़प्पन देखवला से कुछ नइखे होखे–जाये के। साहित्यिक, समाजसेवी आ बुद्धिजीवी भोजपुरिहा लोगन के, बोलले–बतियवला नियर आपन लिखलो–पढ़ला के युवा वर्ग में रचावे बसावे खातिर पूरा जोर लगावे के परी।

युवा वर्ग पर कई किसिम के बोझ बा, पढ़ाई, कैरियर, जाब, प्रोफेशन, स्टेटस, भरन–पोसन, प्रतिस्पर्द्धा में बनल रहल आ सबका सँग–सँग भोजपुरियो संस्कृति में बनल रहल। स्कूल कालेज सभा समारोह आ सोसाइटी फंक्शन में भोजपुरी भाषा के लोप त होते बा; संचार साधन जइसे इन्टरनेट– हवाट्सऐप, फेसबुक, ट्विटर आदि में भोजपुरी कन्टेन्ट (विषयवस्तु) के अभाव लउकत बा। या कहीं कि विषयवस्तुओ (कंटेन्ट) त बाटे बाकि प्रसार बढ़े बढ़ावे में भारी कमी बा। एही तरे जवन आज लिखल–पढ़ल आ गुनल जाता ओकरा के 'आडियो–वीडियो' प्रारूप में अधिक से अधिक बढ़वला के जरूरत बा।

अक्सर हम देखेनी कि जहाँ चार गो समाजसेवी भा बुद्धिजीवी साहित्यकार लोग लउकेला कैसेट आ भोजपुरी सिनेमा वाला छिछिल फूहड़पन के गरियावत लउकेला। भाई जवन बजार में आई भा परोसल जाई ऊहे न लोग देखी–जानी। एमे दखल देबे खातिर बुद्धिजीवी, समाजसेवी आ साहित्यिक समझदार लोगन के खुदे कूदे आ कुछ पाजिटिव काम करे के परी। अगर आज एह विषय पर एगो बइठकी बोला दिहल जाव त पता चली कि लोग एह टापिक पर अतना बोल दी, अतना ढकच दी कि टापिके बन्न हो जाई। बात कहला ले ढेर कइला के बा, कुछ कइले से रास्ता बनी। हम अपना जवानी के बीसन साल पार करत बानी एही आशा में कि साहित्यकार आ संस्था वाला लोग एह दिसाईं बहुत काम कर रहल बा, पत्र–पत्रिका निकाल रहल बा, जरूर आगा कुछ न कुछ होई बाकिर साँच इहे बा कि खाली प्रसार विहीन प्रिन्ट मीडिया का बदउलत हमनी का पुरनकी जगहा से तनिकी भर आगा घुसुकल बानी जा, एसे ढेर ना। आजुओ ज्यादातर लोग ओही पुरान ढंग–ढर्रा आ सोच पर काम कर रहल बा, भा सेवा कर रहल बा, जवना से ऊ 'लक्ष' नइखे भेंटा पावत, जवन अबले भेंटाइ गइल चाहत रहे।

हमार कुछ हटा हटा के सोचे के आदत बा आ हट हटा के करे के कोसिस; बाकिर एह कोसिस आ कहला–सुनला में कुछ न कुछ अइसनो छुवे क, उदबेगे क कोसिस करब जवन दुखइबो करी, बाकिर जब धीरे–धीरे सही होखे लागी, त बदलाव भा हलुक–पातर परिवर्तन का बाद सहज आ अनुकूल लागी। कुछ अइसन लक्ष्य पर काम कइल जरूरी बा जवना से भोजपुरी ओह सब वर्ग से जुड़ जाव..... बड–छोट,ब्यूरोक्रेट,अफसर, प्राइवेट सेक्टर मध्यवर्गी समाज, आई.टी.सेक्टर, फैक्ट्री, दुकान, कम्पनी चाहे लाला के दोकान, बूढ़–पुरान, लइका–लइकी, मेहरारू सभे भोजपुरी सुने, देखे पढ़े या लिखे लागे। एकरा खातिर स्वयंसेवी हर बड़ शहर में (वालन्टियर) भाव से काम करे के पड़ी– नाम, सम्मान, पद, पुरस्कार, के लालच छोड़ि के अपना भाषा खातिर सेवापरक भाव लेके व्यक्तिगत– प्रतिबद्धता (कमिटमेन्ट) का साथ कुछ काम शुरू करे के पड़ी। हमरा कवनो मान–सम्मान, पदवी पुरस्कार के लालसा नइखे ना लिखास–छपास के भूखि बा, एगो चिनगारी जरूर बा भितरी, जवन कुछ अच्छा करे के जज्बा–जोश जगावत बा। एह कालम का जरिये, रउरा जइसन कई लोगन से संबाद आ मिलला क जरूरत पड़ी एह अपेक्षा का साथ एह अंक में, बस अतने..... । ■ ■

कुण्डलिया

■ शिवबहादुर 'प्रीतम'

थपरी सभकर बा अलग, अलगे सभकर राग, कतहीं बरखा होत बा, कतहीं लहकत आग।
कतहीं लहकत आग, जरल मड़ई आ खोंता, जे बा आपन लोग, भइल सभ लोग अलोता।
आपन बाटे राज, चलत बा मुर्गा-मछरी, केहू पीटे ढोल, बजावत केहू थपरी।। 1।।

मेला बढ़ते जात बा, बाकिर सभ बेमेल, बानर-बनरी नाचिके, दिखलावत बा खेल।
दिखलावत बा खेल, करत बा खूब तमासा, बइठि मदारी जोर, लगा पीटत बा तासा।
महंगी तुरलसि डांड़, भइल जिनिगी बा ठेला, केहू नइखे साथ, भरल आदिमी से मेला।।2।।

ताजा-ताजा बाय फल, बबुरी पर अब आम, नेता लेखा रूप बा, डाकू के बा काम।
डाकू के बा काम चकाचक पहिरे चोला, दारू पीए रोज, मिलाके कोकाकोला।
गइल समुन्दर सोख, चुनाइल जब से राजा, चूजा के बा मांग, हमेशा चाहीं ताजा।। 3।।

महंगी सुरसा बनलि बा, ठाढ़े घोंटी आज, शासन का करिहें भला, नकली बड़ुए ताज।
नकली बड़ुए ताज, उहो बाटे बेचारा, लागल कसि के भूखि, खात बाटे पशुचारा।
उफनत बा गोदाम, अनाजे लटकल डहंगी, केकर देईं दोष नरेटी चपलस महंगी ।। 4।।

चउरस्ता पर बा परल, लोकतंत्र के लास, कुक्कुर नोंचत खात बा, नइखे तन पर मास।
नइखे तन पर मासु, नेह के नाता छूटल, सुन्नर बड़ुए रूप, भागि के बड़ुए फूटल।
बिकल जात बा देस, मिले ना कुछऊ रस्ता, इज्जति रोज लुटाय, तबो चुप बा चउररस्ता।।5।।

साक्षात्कार

नागेन्द्र प्रसाद सिंह से बातचीत

['पाती' का निर्देश आ कार्यक्रम–निर्धारण का बाद भोजपुरी–हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार नागेन्द्र प्रसाद सिंह से युवा साहित्यकार दिलीप कुमार (सह संपादक : भोजपुरी विश्व) से उहाँ के जीवन–साहित्य आ भोजपुरी भाषा–साहित्य–संस्कृति के लेके लमहर बातचीत भइल। प्रस्तुत बा ओह बातचीत के मुख्य अंश।]

सवाल : 'भोजपुरी' में लिखे के पीछे प्रयोजन का रहे ?

भोजपुरी लेखन में राउर रुचि आ रुझान के कारण?

जबाब : अपना जीवन–निर्वाह खातिर जब हम जय दुर्गा प्रेस के स्थापना कइलीं आउर साहित्यिक आ शैक्षणिक मुद्रण के काम करे लगनी, तब ओह क्रम में भोजपुरी, मगही, मैथिली आ वज्जिका के रचनाकार लोग के रचना हमारा इहाँ से मुद्रित होखे लागल। एही क्रम में सन् 1962 में एम0ए0 के परीक्षा खातिर विशेष–पत्र का रूप में पढ़ल लोकसाहित्य के पूर्व पीठिका हमरा पास मौजूद रहे। जीवन के पहिलका सोलह बरिस गाँव में बीतल रहे जवना क्रम में भोजपुरी लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा आदि बहुत सुनले रहीं। हमार सर्जनात्मकता जब कुलबुलाये लागल त हम भोजपुरी में कुछ लिखे लगलीं। हमरा बुझाइल कि कविता आ निबंध लिखल हमरा खातिर संभव बा। भोजपुरिया लेखक–कवि लोगन के साथ–संगत हमरा के भोजपुरी लेखन के ओर प्रेरित कइलस। छोट–छोट गोष्ठी प्रेस के हाता में होखे, जवना में नया–नया रचना कवि लेखक सुनावस। हमरो ओह गोष्ठियन में आपन नया रचना सुनावे के अनिवार्यता हो गइल रहे। एही क्रम में हमार लेखन आगे बढ़ल।

सवाल : राउर पहिल रचना कवन रहे आ ऊ कहाँ प्रकाशित भइल रहे ?

जबाब : अइसे त हिंदी में हमार रचना बहुत कमे उमिर में सन् 1951 ई0 में छपरा (सारन) से प्रकाशित होखे वाला साप्ताहिक 'योगी' आ पाक्षिक 'नारद' में आवत रहे बाकि पहिलका हिंदी निबंध बाद में दैनिक 'आर्यावर्त' (पटना) के साप्ताहिक विशेषांक में छपल। भोजपुरी में लिखल हमार पहिल रचना 'उचार' में सन् 1979 ई0 में छपल रहे। बाद में, पहिलका पुस्तक 'नवरंग' (नव गो निबंधन के संग्रह) सन् 1978 ई0 में प्रकाशित भइल रहे। अब तक लगभग निजी लेखन के दस–एगारह गो आ संपादित पाँच–छव गो पुस्तक छप चुकल बा। कुछ छपे के क्रम में बा। हिंदी में भोजपुरी विषयक् निबंधो हिंदी पत्र–पत्रिकन में छपत रहल।

सवाल : निबंध आ आलोचना में एह गहिर अभिरूचि के पीछे का कारण बा ?

जबाब : सृजन में भावना आ तर्क (विचार आ विश्लेषण)–दूगो पक्ष होला। हमरा लागता कि हमार दुसरका पक्ष हमरा पर हमेशा हावी रहल। जब कबो ऊ ढील–ढाल भइल त गीत–गजल आ कविता के सृजन हो गइल, बाकिर दोसरके पक्ष हमरा के प्रेरणा आ प्रोत्साहन दिहलस। भोजपुरी साहित्यकारन के बीच हमार पहचान निबंध–लेखन, आलोचक आ इतिहास लेखक के रूप में बनत–बिगड़त रहल। हमरो एही में कुछ लिख के आनंद के अनुभूति होला। यद्यपि एह में श्रम आ समय जादे लागेला।

सवाल : भोजपुरी–लेखन, प्रकाशन आ संयोजन में रउआ कई दशक बितवनी। का अपना अवदान से रउआ संतुष्ट बानीं ?

जबाब : साँच कहल जाव त भोजपुरी के मुद्रण, प्रकाशन आ साहित्यिक आंदोलन में हम सन् 1962 से सक्रिय रहनीं। एक क्रम में जे रचना होत गइल ऊ कवनो ना कवनो भोजपुरी पत्रिका, स्मारिका में प्रकाशित होत रहल आ आकाशवाणी, पटना के भोजपुरी कार्यक्रम 'आरती' में प्रसारित होत रहल। बहुत रचना हमरा असावधानी के कारण भुला गइल, बाकिर जवन हमरा मिलल ऊ सभ पुस्तकाकार छपत गइल। दू–चार साल पहिले 'श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह रचनावली' नाम से चार–चार सौ पृष्ठ के पाँच खण्ड में प्रकाशित करे के योजना बनल, जवना में अबतक चार खण्ड प्रकाशित हो चुकल बा आ पाँचवाँ खण्ड पर काम चल रहल बा। रचनाकार के संतुष्टि ओकर निधन ह। एह से लिखे–पढ़े से असमर्थ भइला के बावजूद

कम्प्यूटर आ आशुलेखन के माध्यम से हमार रचनाकर्म अबो चालू बा। हम आगहूँ कुछ ना कुछ भोजपुरी के देत जाईं, इहे हमार संकल्प बा।

सवाल : संविधान के आठवीं अनुसूची में 'भोजपुरी' के अबहीं ले शामिल ना हो पावेके पीछे कवन प्रमुख कारण बा? का रचनात्मक साहित्य समृद्ध ना रहे भा कवनो अउरी कारण रहे?

जबाब : सामान्यतः संविधान निर्मात्री समिति के अधीने अष्टम अनुसूची में रखे के प्रस्ताव महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी कहले रहीं, बाकिर डॉ0 सच्चिदानंद सिन्हा आ डा0 राजेन्द्र प्रसाद के ई कहला पर कि भोजपुरी हमरा घर के गूर (गुड़) ह, अबहीं एकरा के ओइजे राखल जाव, बाद में देखल जाई। पहिले भोजपुरी के सात्यिकार लोग रचना करत रहे आ स्थानीय भा जिला–स्तर पर होखे वाला कवि–सम्मेलन में सुना देत रहे। छपे–छपावे के ओर लोग के ध्यान ना रहे। सन् 1947 के बाद पुस्तकाकार भोजपुरी रचना आवे लगली सन। ओकरा पहिले राहुल जी के कुछ छोट–छोट नाटको प्रकाशित भइल। 1947 तक कवनो पत्र–पत्रिका ना रहे, जहवाँ भोजपुरी रचना छपे। वाराणसी से निकलेवाला 'आज' में कुछ रचना छपत रहे। 1947 में 'भोजपुरी' (संपा. रघुवंश नारायण सिंह) पत्रिका प्रकाशित होखे लागल। 1959 से पटना से 'अंजोर' निकले के शुरू भइल। एह बीचे स्थानीय स्तर पर अनेक पत्रिका आ भोजपुरी पुस्तक प्रकाशित होखे लगली सन; बाकिर वितरण के कवनो व्यावसायिक व्यवस्था विकसित ना भइला से भोजपुरी के साहित्यिक प्रगति के जानकारी हिंदी के वर्चस्ववादी विद्वानन के उपलब्ध ना रहे। संगठनों बहुत विलम्ब से बनल, जवन अपना हर अधिवेशन में संविधान के आठवीं अनुसूची में भोजपुरी के स्थान देवे के प्रस्ताव कइलस, सरकार के पास भेजाइल; बाकिर कवनो आंदोलन के पृष्ठभूमि एकरा ना मिलल। बहुत विलम्ब से कुछ आंदोलनो भइली सन। संसद में महाराजगंज संसदीय क्षेत्र के सांसद प्रभुनाथ सिंह कई बार एह सवाल के संसद में उठवलन। लोकसभाध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी आ मीरा कुमार के अलावे गृहमंत्री पी0 चिदम्बरम् आश्वासनो दिहल लोग। सुने में आइल हा कि कैबिनेट से प्रस्तावो पारित हो गइल बा; बाकिर दुर्भाग्य के बात बा कि एकरा से कमतर साहित्यवाला, कम बोलेवाला दोसर–दोसर भाषा सभ के राजनैतिक कारण से संवैधानिक मान्यता दे दिहल गइल; बाकिर भोजपुरी के सवाल अबहीं तक लटकल बा। भोजपुरी भाषी लोगन के अपना साहित्य के प्रति उदासीनता आ हिंदी के प्रति उदारता साहित्यकारन आ साहित्यिक संस्थान के सांगठनिक सोच में आंदोलनधर्मी ना भइला आ हिंदी के तथाकथित विद्वानन के विरोध कइला के कारण भोजपुरी के अष्टम् अनुसूची में स्थान देवे के सवाल अबहीं लटकल बा।

सवाल : का भोजपुरी भाषा के पूरा प्रतिष्ठा ना मिले के पीछे खुद भोजपुरी भाषी जादे जिम्मेदार बाड़न? भोजपुरी भाषा आ साहित्य के प्रतिष्ठा ना मिले में कवन–कवन अवरोधक तत्व बा?

जबाब : खुद भोजपुरी भाषी के जिम्मेवारी पहिल बा, आ दुसरका बा आश्वासनधर्मी नेता लोगन के धोखाधड़ी आ साजिश। भोजपुरी में अब अतना परिमाण में साहित्य–रचना हो गइल बा कि निष्पक्ष होके ए भाषा के तुरत संविधान में स्थान दिहल जरूरी बा। जबतक ई सवाल टल रहल बा, टल रहल बा, लेकिन भीतरे–भीतर भोजपुरीभाषी लोगन के मानसिकतो बदल रहल बा। आ एगो बड़ आंदोलन होखे के सुगबुगाहट होखे शुरू हो गइल बा, जवन मुख्य रूप से भोजपुरी भाषी युवकन से प्रांरभ होखी। भारत के पाँच–छव गो विश्वविद्यालयन में भोजपुरी के पढ़ाई स्नातकोत्तर स्तर तक हो गइल बा आ हजारों युवक भोजपुरी में एम0ए0 कइके बेकारी के शिकार बाड़न। उहे लोग एह आंदोलन के नेतृत्व करी। हमार पीढ़ी चूक गइल। आवे वाली पीढ़ी पर आस लगवले बानीं।

सवाल : का रउआ ई मानऽतानीं कि भोजपुरी क्षेत्र आ ओकरा भाषा के प्रतिनिधित्व करेवाला सांसद आ विधायक एह भाषा के प्रतिष्ठा दिलावे में कबो गंभीर नइखन रहल, आ ना ई लोग गंभीर सामूहिक प्रयासे कइल?

जबाब : भोजपुरी क्षेत्र के विधायक आ सांसद भोजपुरी भाषा के बहुत प्यार करेलन। बिहार विधान सभा में आ लोकसभा में जब–जब भोजपुरी के अष्टम् अनुसूची में स्थान देबे के बात आइल बा, समर्थनों कइले बाड़न। भले सांसद प्रभुनाथ सिंह आ एगो दूगो आउर सांसद लोग नेतृत्व कइले बा लोग। बाकिर समय का मोताबिक भोजपुरी क्षेत्र के सांसद भरपूर दबाव बनावे के गम्हीर कोसिस ना कइल लोग।

सवाल : 'भोजपुरी' में (सभ साहित्यिक विधन मे) श्रेष्ठ आ मौलिक साहित्य–सर्जना के बावजूद, एकरा श्रेष्ठ रचनन के समकालीन भारतीय साहित्य में उचित स्थान काहे नइखे मिल पावत?

जबाब : एकर मुख्य कारण बा– वितरण–व्यवस्था के व्यावसायिक अभाव। दोसर कारण बा– प्रचार–प्रसार के दिखावटी परम्परा के प्रति उदासीनता। पुस्तक छपतारी सन, मित्रन के बीच बँटा जा तारी सन; लेकिन दूर–दूर पहुँच नइखे पावत। पिछिलका पाँच साल से ई स्थिति धीरे–धीरे बदल रहल बा आ ऊ दिन दूर नइखे जब भोजपुरी साहित्य पूरा भारतवर्ष में भोजपुरी भाषिये ना; भोजपुरीतर भाषियन के बीच पहुँचे लागे।

सवाल : भाषा, समाज आ साहित्य–सृजन के दिसाईं वर्तमान समय के कुछ नियमित, नियंत्रित आ स्तरीय पत्रिकन के बारे में बताईं, जवन ऐतिहासिक आ उल्लेखनीय योगदान के साथ राष्ट्रीय स्तर पर भोजपुरी के मंच दे रहल बिया?

जबाब : अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मुख पत्र 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका', विश्व भोजपुरी सम्मेलन के मुखपत्र 'समकालीन भोजपुरी साहित्य', विश्व भोजपुरी सम्मेलन, प्रांतीय इकाई, बिहार के मुख पत्र 'भोजपुरी विश्व', डॉ0 अशोक द्विवेदी के सम्पादन में बलिया (उ0प्र0) से प्रकाशित 'पाती', डॉ0 अजय कुमार ओझा द्वारा जमशेदपुर से संपादित 'निर्भीक संदेश', आसिफ रोहतासवी द्वारा तेनुधाट, बोकारो से संपादित 'परास', श्रीमती (डा0) संध्या सिन्हा द्वारा जमशेदपुर से संपादित अवियतकालीन महिलोपयोगी पत्रिका 'अंगना', पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'भोजपुरी माटी' आदि कुछ अइसन पत्रिका बाड़ी सन, जवन राष्ट्रीय स्तर पर आपन पहचान बनवले बाड़ी सन। स्थानीय स्तर पर आ कुछ बरिस पहिले अनेक पत्रिका अइली सन, खूब यश अर्जित कइली सन; बाकिर दीर्घजीवी ना हो सकली सन, जवना में 'भोजपुरी कहानियाँ' (वाराणसी), 'भोजपुरी' (आरा), 'अंजोर' (पटना) के योगदान महत्त्वपूर्ण बा।

सवाल : का भोजपुरी पत्रकारन आ साहित्यकारन में एह घरी कवनो किस्म के गोलबंदी भा साहित्यिक खेमेबाजियो बा? अगर 'हाँ' त, एह से भोजपुरी के केतना नफा–नुकसान होखे के संभावना बा? पिछिलका दौर जइसन एकता आ समझदारी के अभाव में, का भोजपुरी भाषा–साहित्य के ऊ प्रतिष्ठा मिल सकी, जवना के कल्पना रउरा सभन कइले रहीं?

जबाब : पत्रकारन में सामान्यतः कवनो गोलबंदी नइखे रहल। सामान्यतः मित्रन आ समर्थ रचनाकारन के रचना पत्रिकन में आवत रहल बाड़ी सन। यदि कवनो जाति–विशेष भा क्षेत्र विशेष के रचना कवनो पत्रिका में बार–बार छपता त दोसर लोग ओकरा के जातिवारी, फारवर्डवादी, दलितवादी–कवनो इज्म से प्रभावित मान लेत बा। जे सब पत्र–पत्रिकन के देखत–सुनत बा ओकरा खातिर त कवनो कष्ट नइखे; बाकिर जे एगो–दूगो देखता, ओकरे ई संकीर्णता लउकता। एकता आ विरोध मानव के स्वभाव हऽ। एह से केहू बाँचल नइखे। हमरा विश्वास बा कि राष्ट्रीये ना; बलुक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भोजपुरी के मान–प्रतिष्ठा पहिले के अपेक्षा बढ़ल बा।

सवाल : भोजपुरी साहित्य के इतिहास लेखन में, काल–निर्धारण के अलावे अउरी कवन–कवन कठिनाई बाड़ी सन? का साहित्य के हरेक विधा में भोजपुरी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास तइयार कइल जा सकत बा? एह कार्य में कवन–कवन तथ्य, विशेषता आ मूल्यन के ध्यान में राखल जरूरी बा?

जबाब : भोजपुरी में काल–निर्धारण के कवनो समस्या नइखे। शायद पहिले कबो रहल होई। एकरा अलावे सर्वांग रूप से साहित्येतिहास लेखन बहुत कठिन कार्य बा, जवना के मुख्य कारण बा– भोजपुरी साहित्य के कवनो एगो ठौर मिलल, भोजपुरी पुस्तकन के अभाव, भोजपुरी रचनन के स्थानिकता। इतिहास लेखन में सबसे पहिले सामग्रियन के अवलोकन होला, फेनु ओकरा पर आपन सामर्थ्य के अनुसार आलोचनात्मक दृष्टि बनेला। जे भोजपुरी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास लिखे के चाहे ओकरा सबसे पहिले भा जादे से जादे भोजपुरी पुस्तकन के अवलोकन करे के होई, फेनु ओकरा इतिहास दर्शन के सूक्ष्म ज्ञान राखल जरूरी बा, अपना विवेचन आ भाषा के आलोचनात्मक स्तर दिहल त ओहू से जादे जरूरी बा। एह से ऊ समय अबहीं दूर बा जब भोजपुरी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास लिखाय। पहिले इतिहास जइसे–तइसे भी आवता, आवे दिहल जाव। कबो समय आई कि आलोचनात्मक इतिहासो लिखाई। लिखेवाला बाड़न; बाकिर परिश्रम आ साहस के अभाव अउकता। आलोचनात्मक इतिहासलेखन खातिर तटस्थता, विश्लेषणात्मक बुद्धि, अध्यापन आ निष्पक्ष प्रस्तुति मूल्य बन सकेला।

सवाल : का रउआ लागता कि भोजपुरी में श्रेष्ठ साहित्य आइल अबहीं बाकी बा, खास करके उपन्यास विधा में?

जबाब : भोजपुरी साहित्य के सभ विधन में श्रेष्ठ साहित्य कम मात्रा में आइल बा, आ भविष्य में अउरी जादे उच्चस्तरीय मूल्यवान साहित्य के आवे के संभावना बा। उपन्यास विधा में डॉ0 रामदेव शुक्ल, डॉ0 अशोक द्विवेदी, हरेन्द्र कुमार पाण्डेय आदि कुछ अइसन नाम बा, जे नीमन उपन्यास दे सकत बाड़न, यदि ऊ साहस आ समय पर दृढ़ हो जासु। नया उपन्यासकारनो से भोजपुरी के अपेक्षा बा।

सवाल : 'भोजपुरी' भाषा आ ओकरा साहित्य के भविष्य खातिर रउआ केतना आशावान बानीं?

जबाब : भोजपुरी साहित्य के मोर्चा पर खड़ा हम अपना के एगो सिपाही मानीलें। सिपाही के हमेशा अपना विजय पर विश्वास रहेला। अइसहीं हमरा दृढ़ विश्वास बा कि एकदिन ऊ आई जब भोजपुरी साहित्य हिंदी, मराठी, बांग्ला आदि भषन के साथे बराबरी के कुरसी पाई, चाहे ऊ आधुनिकता के क्षेत्र होखे, चाहे स्तरीयता के।

सवाल : भोजपुरी सिनेमा अपना प्रारंभिक प्रस्थान–बिन्दु से बहुत आगे निकलला के बादो आज तक आपन विशिष्ट छवि काहे नइखे बना पवले? का ओह में मौलिकता आ विशिष्टता ना आवे के पीछे बाजार जिम्मेदार बा भा ओकरा निर्माता, निर्देशक के लगे सोंच आ दृष्टि के अभाव बा?

जबाब : भोजपुरी सिनेमा के निर्माता, निर्देशक आ कथा–लेखक भोजपुरी के आजुओ गाँव–घर के भाषा आ संस्कृति मानऽ तारन। एह गाँव के पंकिल जमीन में धँसल उनकर गोड़ निकलत नइखे। कुछ लोग आधुनिक समाज के समस्यन के लेके फिल्म–निर्माता, निर्देशक आ कथाकार अपना दृष्टि के विस्तार नइखन दे पावत। लयात्मक धुन में डिस्को संगीत दिहल आ कुछ अश्लील गँवई परिवेश दिहल, ई उनकरा सोच के पिछड़ापन बा। दोसरा भाषा भा हिंदी अंग्रेजी फिल्म देखेवाला लोग भोजपुरी फिल्मन के गँवारूपन आ अश्लीलता से चिन्तित बा। भोजपुरी सिनेमा में आमूल–चूल परिवर्तन के आवश्यकता बा। अगर कवनो समर्थ संस्था भा संगठन भोजपुरी सिनेमा के निर्माता, निर्देशक आ कथाकार के संगोष्ठी मुम्बई जइसन शहर में आयोजित कर सके त ओह लोगन के एह भ्रम के तूरल जा सकेला, जवना में हम अपना के असमर्थ पावऽतानी। 'ना नौ मन तेल होई, ना राधा नचिहन।'

बाजार में सब तरह के चीज बिकाला, कुछ कम कुछ जादे। केहू अपना चीज के शिकायत ना करे, सभे निमने कहेला; बाकिर निमन–बेजायँ के पहचान आम आदमी से लेके विद्वान तक में न्यूनाधिक रूप से होला। ई साँच बात बा कि भोजपुरी मुख्य रूप से गरीब, मजदूर, खेतिहर आ मध्यमवर्ग के मातृभाषा ह। एह से फिल्म अइला पर भीड़ बढ़ जाला, जेकर निर्णय श्रेष्ठता आ स्तरीयता पर ना होखे; बलुक अपना मातृभाषा के प्रति लगाव के कारण होला। एकरा के बाजारवाद समझ लिहल भूल बा। जब चीज बाजार में आई, तब नूँ ओकरा बिके आ ना बिके पर विचार होई। आज उहे फिल्म बाजार में बा, ओकरे के देखे के बा, त पर्याय कहाँ बा?

सवाल : का साहित्य के अलावे, अन्य तकनीकी विषयन, जइसे–कृषि आ विज्ञान, के पुस्तक भोजपुरी भाषा में ना आवे के चाहीं? अइसन पुस्तकन से भोजपुरी क्षेत्र आ भोजपुरी भाषियन के का लाभ मिली? का रउआ मानऽतानीं अउरियो सभ विषय के पढ़ाई भोजपुरी में होखे के चाहीं?

जबाब : भोजपुरी में कृषि–संबंधी कुछ पुस्तक आइल रहे, ओकर स्वागतो भइल रहे, बाकिर भोजपुरी क्षेत्र के विशेषता बा कि ई लोग भोजपुरी आ हिंदी– दूनूँ के बराबर के स्नेह देला। एह से खेती, यांत्रिकी आदि विषयन पर हिंदियो में लिखल किताबन से काम चल जाला। एह विषयन के पढ़ाई भोजपरी के माध्यम हो सकेला। पारिभाषिक शब्दन के जस के तस ले लिहला के अलावे भाषान्तरण में कवनो समस्या नइखे; बाकिर ना त ई अभी अवसर बा आ ना मानसिकता। कबो बन पाई कि ना, एहू में संदेह बा।

सवाल : भोजपुरी भाषा के अकादमियन के भोजपुरी भाषा–साहित्य के प्रकाशन के अलावा आउर का योगदान हो सकत बा, जवन भाषा के रचनाकारन के भा संस्कृतिकर्मियन के प्रोत्साहित करे? का अबहीं तक अकादमी–सभ भोजपुरी भाषा, संस्कृति आ साहित्य के उत्थान खातिर आपन दायित्व, निष्ठापूर्वक निभवले बाड़ी सन?

जबाब : बिहार राज्य के पटना, दिल्ली राज्य के दिल्ली, मध्य प्रदेश में भोपाल में क्रमशः भोजपुरी अकादमियन के स्थापना भइल। भोजपुरी संस्कृति, साहित्य आ रंगकर्म के निष्ठावान जानकार लोग के ओकरा संचालन के दायित्व ना देके राजनीति–प्रेरित लोग के ओकर प्रशासनिक दायित्व सरकार दिहलस। परिणाम भइल कि कुछ पुस्तक भा पत्रिका प्रकाशित करे के अलावे कवनो विशेष उल्लेखनीय काम ना हो सकल। जब तक भोजपुरी के विशेषज्ञ आ समर्पित साहित्यकारन के हाथ में भोजपुरी अकादमी के व्यवस्था ना

आई, तब तक जे हो रहल बा, से ही होई। बहुत बड़ कवनो अपेक्षा राखल अपना के भ्रम में राखल बा। ई एगो भण्डा ह, जे गड़ा गइल, से गड़ा गइल। अकादमिक आ डाइनेमिक लोग जब तक एकरा में ना आई, तब तक भोजपुरी के कवनो विशेष लाभ ना मिली। सरकार पर्याप्त धनराशियों नइखे देत, जवना से ई सभ काम हो सके। जे धनराशि मिलता, ऊ पदाधिकारियन आ कर्मचारियन के तनख्वाह आ फालतू कामन पर खर्च हो जाता, एह से कुछ विशेष अपेक्षा राखल फिलहाल दिवास्वप्न बा।

सवाल : आजु–काल्ह भोजपुरी आयोजनन में फिल्मी गायक आ अभिनेता लोगन के बोलाइ के सांस्कृतिक कार्यक्रम के बहाने वातावरण के प्रदूषित कइल जा रहल बा। आयोजन में विविध कार्यक्रम के व्यावसायीकरण के ई प्रक्रिया भोजपुरी भाषा, संस्कृति आ साहित्य के विकास आ संवर्द्धन के दिसाई केतना उचित बा?

जबाब : भोजपुरी आयोजनन में पहिले कवनो लोकगीत–गायक भा नाट्य–मंडली के सांस्कृतिक कार्यक्रमन में बोलावल जात रहे। ऊ सांस्कृतिक कार्यक्रम भोजपुरी के प्रचार–प्रसार के दिसाई एगो स्वस्थ परम्परा रहे। भरत सिंह 'भारती', स्व. विन्ध्यवासिनी देवी, श्रीमती शारदा सिन्हा, मैनावती श्रीवास्तव आदि जइसन लोकगीत गायक लोग आ भिखारी ठाकुर, इप्टा, स्थानीय नाट्य–संस्था के मण्डलियन के बोलावल जात रहे। अब समय बदल गइल बा। अब मनोज तिवारी, देवी, मालिनी अवस्थी, रवि किशन जइसन सिनेमाई हस्तियन के बोला के स्टेज उनका के समर्पित क दिहल जाता। ओह में हास्य–व्यंग्य से लेके अश्लील गीतन तक के प्रस्तुति होता। जनता के खूब जुटान होखऽता; बाकिर भोजपुरी संस्कृति के अइसन कार्यक्रम सम्पोषित नइखे कर पावत। सासाराम, पटना आ कुछ अन्य जगह त जनता एह ढंग से अनियंत्रित हो जातिया कि पुलिस के लाठी चार्ज करे के पड़ता। ई भोजपुरी के आयोजक लोगन के मानसिकता के द्योतक बा। भोजपुरी के शुद्ध सांस्कृतिक कार्यक्रम त बहुत पीछे छूट जाता। ई एगो दुर्भाग्यपूर्ण संदेश भोजपुरी आ भोजपुरी जनता के जा रहल बा।

सवाल : एह आयोजनन में सृजनात्मक कार्य करे वाला लोग हाशिया पर राखल जा रहल बाड़न। अकादमिक कार्य के आड़ में अइसना प्रवृत्तियन से कहीं एकर संवेदना, सांस्कृतिक गरिमा आदि के अवमूल्यन त नइखे होत?

जबाब : अइसन आयोजनन से भोजपुरी संस्कृति के गलत प्रस्तुति हो रहल बा, आ अवमूल्यन काहें; बलुकसीधे विपरीत प्रभाव पड़ता। अइसन आयोजनन में मुख्य रूप से विचार–गोष्ठी, आगत अतिथियन–जवना में राजनेता प्रमुख रहेलन– के भाषण आ विचार–गोष्ठियन के आयोजन होला। ई सभ आयोजक लोग अपना मनपसंद लोगन के अवसर देला, ओह से भोजपुरी के अकादमिक भा सृजनात्मक साहित्य के सृजक लोग के उपेक्षा होला। सम्मानित आ पुरस्कृत करे के समय आयोजक लोग अपना मन से अपनागुट, हीत–नाता, जाति–बिरादरी आदि के आधार पर चयन क लेला। साधक आ विद्वान साहित्यकार अलग–थलग पड़ जालें। अइसना अवसरन पर अक्सर कवि सम्मेलनों होला, जवना में पचास से सइ कवि आपन कविता सुनावेलन। सुकण्ठ्य गायक, कवि लोग त मंच लूट लेला; बाकिर ऊ श्रेष्ठ कवि जेकर कविता भोजपुरी खातिर कवनो मानक पहचान दे सके, मंच पर ना जम पावे; काहे कि श्रोता–वृन्द के सुकण्ठे कवि लोग के चाह रहेला। एह से अधिकांश कवि त अब सम्मेलनन में भागो नइखन लेत। ई सब, कहे–सुने के जरूरत नइखे।

सवाल : 'भोजपुरी' के विकास आ सम्मान खातिर का करे के चाहीं? आपन सुझाव दीहीं।

जबाब : भोजपुरी के विकास आ सम्मान खातिर जे जहाँ बा, जवना काम के लायक बा, ऊ व्यक्तिगत रूप से अपना काम करे। राष्ट्रीय राज्यस्तरीय आ स्थानीय स्तर पर संगठनन के निर्माण आ संचालन कइल जाव। ऊ दिन दूर नइखे जब भोजपुरी संविधान के अष्टम् अनुसूची में स्थान पाई, साहित्य अकादमी से एकरा मान्यता मिली आ ई एक दिन अपना सम्पूर्ण संवृद्धि का साथे सोझा आई, तब लोग चकाचौंध में पड़ जाई कि भोजपुरी के केतना उपेक्षा भइल बा। ■■

भोजपुरी के पत्रिका आ किताब कीनि के

पढ़ीं आ पढ़ाई !

मातृभाषा खातिर इहे राउर सहायता होई।

भोजपुरी सेवी

पाण्डेय कपिल

■ आनन्द संधिदूत

पाण्डेय कपिल के माने भइल कि भोजपुरी परिवार के एगो अस्सी बरिस के अइसन पुरनिया जवन व्यक्ति का बजाय संस्था का रूप में अधिक विख्यात बा। संस्थो कवनो हिनहिन भिनभिन ना भोजपुरी संस्थान, जवना का खाता में लगभग सइगो किताब साजे–पाथे आ छपावे के उपलब्धि बा! एह सइगो किताब के अगर कूल्हि सम्पादकीय टिप्पणी बटोर के छाप दिहल जाय त अपना विषय के एगो बेजोड़ ग्रंथ तइयार हो जाई। एह किताबन के भोजपुरी साहित्य में आपन स्थान बा आ एह स्थान का निर्धारण में पाण्डेय कपिल का टिप्पणी के ओतने महत्व बा जेतना महत्व विश्वकवि टैगोर का गीतांजलि (अंग्रेजी) के भूमिका लेखक इलियट का कलम के बा। इलियट अपना भूमिका का पारस से टैगोर का गीतन के लोहा से सोना बना लेले रहे। पांडेय कपिलो जी कलम का जोर से साधारण से साधारण रचना के रोसनी का रोशनाई में नहवा के अद्भुत ढंग से परोसले बानी।

भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का स्थापना काल (1974) से लेके सन् 2000 तक के अगर 'कपिल नेतृत्व युग' कहल जाय त बेजाइं ना होई। एह लगभग चौथाई सदी के भोजपुरी आन्दोलन के एगो सूत्रधार हईं–पांडेय कपिल! एह अवधि में सम्मेलन का मंच से जेतना विद्वानन के पद–प्रतिष्ठा देके सम्मान दिहल गइल भा भोजपुरी में अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथन के प्रकाशन भइल भा भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का अर्थकोश के उल्लेखनीय विस्तार भइल भा भोजपुरी में नया रचनाकारन के अवसर दिहल गइल एह कुल का मूल में कपिल जी के सेवा भाव रहे। उहाँ का अपना लेखन के हरज कइके, आन का लेखन के सजवले–सँवरले आ छपवले बानी। अइसन लागत बा कि आचार्य शिवपूजन सहाय का बाद पांडेय कपिल जी ऊ महापुरुष भइलीं जे क्षेत्रीय भोजपुरी लेखकन में खुशबू आ अरथ भरले बानी।

साहित्य कवनो पोस्टर–पम्पलेट ना ह कि ओह के एक दिन बइठ के लिख दीं आ पूरा देश में बँटवा के साहित्य के दर्जा दियवा दीं। साहित्य रचनाकार का मानस मन्दिर में चलत रहे वाली एगो अनवरत प्रक्रिया ह जवना में कई बेर अइसनो होला कि लमहर समय तक कुछ लिखाय ना, आ अइसन लागेला जइसे रचनाकार का जीवन्तई के अन्त हो गइल, लेकिन एही शुष्क काल में अगर कहीं से प्रोत्साहन के पत्र भा फोन आ जाय आ उत्साह के मेघ बरखा नियर तऽ रचनात्मकता हरियर हो जाय त एह प्रेरक के, साहित्य के सींचे वाला का अलावे कहला जाई? कपिल जी के पत्र अइसने मेघ नियर लागेलन स जवन अपना चमक–दमक आ झिमिर–झिमिर से साहित्य के खेती मजिगर करत रहेलन स।

कपिल जी मामूली चिट्ठी नइखीं लिखले। एह में अतिश्योक्ति नइखे कि अगर उनका हाथ के लिखल चिट्ठी बटुरा जाय आ ओके बिछावल जाय त भोजपुरी क्षेत्र के चौहद्दी चउखटा आ जाई। उहाँ के चिट्ठी भोजपुरी का रचनाकारन के प्राणवायु नियर जीवनदायी रहल बाड़ी सन। पत्र के ई विशेषता होला कि ऊ केहू के छोट–बड़ ना बलुक अपना बराबर मान के आदर आ प्रेमपूर्वक सम्बोधन से भरल होला। ध्यान देबे के बात ई बा कि ईकुल चिट्ठी ओह जमाना में लिखल गइली स जब भोजपुरी पर संकट रहे। आपात्काल में भोजपुरी नाँव लिहल मना रहे। कई जगह त भोजपुरी के साइन बोर्ड तक उतर गइल रहे। ओह जमाना में चापलूस लोग इन्दिरा गाँधी के कान भर देले रहे कि भोजपुरी से क्षेत्रीय बिलगाववाद के प्रोत्साहन मिली। एह वातावरण में सत्ता के गोझनवटा पकड़ले बालकवि बैरागी जइसन साहित्यकार पत्र–पत्रिकन में भोजपुरी का खिलाफ जहर ढकचत रहले। एह प्रतिकूल वातावरण में 'उरेह' पत्रिका के प्रकाशन भइल। आ खाली प्रकाशने ना एकर मूल्य आँके खातिर विद्वत्समाज विवशो भइल।

कपिल जी के प्रथम दर्शन हमके ओही आपातकाल में भइल। ओह जमाना में हमरा दिमाग में यूनियनबाजी के कीड़ा रेंगत रहलन सा यूनियन के राष्ट्रीय अधिवेशन पटना, गाँधी मैदान का पास लाला लाजपत राय मेमोरियल हाल में बोलावल रहे। ओही में भाग लेबे हमहूँ पटना गइल रहलीं। ओहिजा से फुर्सत निकाल के हम सोचलीं कि भोजपुरी के आचार्य आ 'अँजोर' के सम्पादक पांडेय नर्मदेश्वर सहाय से मिल लेहीं। तारीख, हमरा खियाल से सन् 1976 का जनवरी में खिचड़ी का सम्हेरा के रहे। आचार्य जी का संगे बजड़ा के दूँढ़ी खात बहुत देर तक भोजपुरी पर मनन–चिन्तन भइल। बातचीत में उहाँ का हमार हिंदी लेख 'भोजपुरी संस्कृति में दाम्पत्य जीवन' 'अँजोर' में छापे खातिर स्वीकार कइलीं जवन धारावाहिक रूप से तीन अंक में छपल रहे। एही बइठकी में उहाँ का पाँडेय कपिल के नाँव लिहलीं आ चलत–चलावत सलाह दिहलीं कि आइल बाड़S त उनहूँ से मिल लS। पांडेय नर्मदेश्वर सहाय के लोकप्रिय नाम बब्बन बाबू वकील रहे आ निवास सालिमपुर अहरा में कब्रीस्तान का पीछे रहे। ओहिजा से उठलीं त सीधे पटना सचिवालय का राजभाषा विभाग में

पहुँच गइलीं। ओहिजा पांडेय कपिल का चैम्बर में दरबार लागल रहे। ओह में कुछ अदिमी के नाँव हमरा मन पड़त बा। अविनाशचन्द्र 'विद्यार्थी', भैरवनाथ पांडेय, कृष्णानन्द 'कृष्ण', तैय्यब हुसैन 'पीड़ित' आ अउरो कुछ आदमी ओहिजा बइठल रहे तब 'उरेह' के खाली प्रवेशांक छपल रहे। हमके देख के ई सुखद आश्चर्य भइल कि आपात्काल में यू0पी0 में जहाँ भोजपुरी के नाँव लेत जीव डेराय ओहिजा बिहार में संगठित रूप से साहित्य सृजन हो रहल बा। बिहार का तेवर में विद्रोह ह। एह विद्रोह के जे सम्बोधन देला पांडेय कपिल ओही में से एगो लगनीं।

समर्थन आ विरोध एगो सिक्का के दूगो पहलू नियर होला। जे आज समर्थन करत बा हो सकेगा काल्ह विरोध करे। अइसहीं जे विरोधी बा ऊ हो सकेला काल्ह विरोध करे। अइसहीं जे विरोधी बा ऊ हो सकेला काल्ह समर्थक बन जाय। पांडेय कपिलो का जीवन में अइसन बहुत अदिमी बा जे समर्थन करत आइल आ पद–प्रतिष्ठा के अभिलाषा पूरा ना भइल त विरोधी बन गइल। एह मिलन आ बिछोह दूनो अवस्था में उहाँ का एक भाव रहलीं।

साहित्य से जुड़ाव पांडेय कपिल जी खून में बा। उनका परिवार में साहित्य के सेवा नई पीढ़ी से होत रहल बा। आप गद्य त कम लेकिन पद्य बहुत लिखले बानी। आपके हिंदी गीतन के संग्रह से अलग भोजपुरी गीतन के संग्रह छपल बा। दू–दू गो गजल संग्रह आइल बा। कपिल जी ओह गिनल चुनल लोगन में बानी जे भोजपुरी में गजल विधा के खड़ा कइल। लेकिन ई तमाम साहित्य सेवा एकतरफ बा आ 'फुलसुंघी' उपन्यास अकेले एकतरफा 'फुलसुंघी' उपन्यास में जवन कथ्य के लालित्य आ भाषा के रवानी बा ऊ मन के मोह लेबे वाला बा। कथा के नायक महेन्दर मिसिर के लेके भोजपुरी में अउरो बहुत कुछ लिखल बा, लेकिन जेतना ढंग से एगो प्रेमाख्यान के सृजन 'फुलसुंघी' में भइल बा ऊ बेजोड़ आ बहुमूल्य बा।

भोजपुरी में सबसे बड़ समस्या व्याकरण का एकरूपता के बा। अतीत में एकरा पर भारी–भरकम चर्चा भइल बा बाकिर सहमति नइखे बनल। असहमति का बीचो कुछ न कुछ आचार संहिता त बनिये जात बा लेकिन एह सहमति के ऊ नइखे मानत जे भोजपुरी में नया आवत बा। नतीजा निकलत बा व्याकरण के फेरू से एबीसीडी शुरू हो जाता आ समस्या एके धुरी पर नाचत रहि जाता। नया लोग का पुराना लोग का अनुभव से लाभ ना उठा पवला का कारण वर्तनी आ क्रियापद खड़बड़ाह बा। पुरान साहित्य के अनुपलब्धतो एगो कारण हो सकेला। एही समस्या का निदान खातिर हम कपिल जी से अनुरोध कइलीं कि उहाँ का अपना सम्पादकीय टिप्पणी के बटोरि के छपवा दीं। हमके खुशी बा कि हमार प्रार्थना उहाँ का स्वीकार कइलीं आ 'विविधा' का नाँव से सँउसे सम्पादकीय टिप्पणी छपल। ई ओह लोगन के बड़ा लाभ पहुँचाई जे भोजपुरी में नया–नया आइल बा पुरान कुछ पढ़े चाहत बा। हमरा तुच्छ मति का अनुसार अइसन संग्रह पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, पं0 हवलदार त्रिपाठी सह्रदय, प्रो0 ब्रजकिशोर, डॉ0 अशोक द्विवेदी आ डा0 अरुणेश नीरन्नो के आवे के चाहीं। एह चर्चा में डॉ0 राजेश्वरी शांडिल्यो जी के सहयोग रहल बा उनहूँ के सम्पादकीय के ग्रंथाकार प्रकाशन जरूरी बा।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के सबसे ढेर नोकसान भोजपुरी सिनेमा से हो रहल बा। भोजपुरी फिल्म के अगर संक्षेप में लिखल जाय त 'बी0एफ0' होई। भोजपुरी सिनेमा अगर पूरा बी0एफ0 नइखे त सेमी बी0एफ0 जरूर बा। 'बिदेसिया' आ 'लागी नाही छूटे राम' के जमाना जाये दीं, आजके भोजपुरी फिल्मी गीत परिवार का साथ बइठ के देखे–सुने लायक नइखे। जरूरत एह लोग के आलोचना के बा। अइसन लागत बा जइसे भोजपुरी सिनेमा सभ्य आ सुसंस्कृत समाज खातिर बनते नइखे। शायद इहे कारन बा कि एक दिन घर के नौकरानी के लइकी जब भोजपुरी सिनेमा के गीत गुनगुनाइल त हमार पतोह भड़क गइली आ ओके डांटत कहली कि भोजपुरी गीत मत गावल करू। हम ओहिजे बइठल रहलीं।

हालांकि कपिल जी अपना व्यस्त लेखन में भोजपुरी सिनेमा पर ज्यादा ध्यान ना दे पवलीं आ उनका सक्रियता काल में आज अइसन भद्दगी रहबो ना कइल, लेकिन ई माने के परी कि विरोध के शुरूआत भोजुपरी संस्थान का प्रकाशने से भइल रहे। भोजपुरी संस्थान से चालीस साल पहिले (लगभग) सत्यवादी छपरहिया के लेख संग्रह छपल रहे, जवना में भोजपुरी के दुश्मन शीर्षक से एगो लेख रहे। ओम्मे फूहड़ गीत के आलोचना रहे।

कपिल जी ढेर सारा अदिमी के आलोचना आ विरोध सहि के भोजपुरी के सेवा कइलीं। आप में आपन आलोचना सुने के रचनात्मक क्षमता बा। उमिर बढ़ला का बाद सम्मेलन के दायित्व आप खुदे छोड़ दिहलीं। बाकिर तबो उनकर लेखन जारी रहल।

कपिल जी अब तिरासी बरिस के हो चुकल बानी। एही सन् 2013 का 24 दिसम्बर के आप चौरासीवाँ साल में कदम रखत बानीं। एह अथक साहित्ययात्री के हम प्रणाम करत बानी आ भगवान से प्रार्थना करत बानीं कि आपके शताधिक साल के जीवन दीं, जेसे हमनी के भोजपुरी लिखे–पढ़े के प्रेरना मिलत रहे।

ललित निबंध

रखबो नयन के हुजूर हो बलमुआ

■ डॉ0 गदाधर सिंह

अपना कारखाना में मरद–मेहरारू के रूप में आदमी के प्रोडक्शन के देखते ब्रह्मा जी के देंह में थरथरी लाग गइल। जब उनकर निगाह आदमी के आँख पर परल त ऊ बेहोश होत–होत बचले। कुछ देर के बाद जब उनकर मिजाज अहथिर भइल त ऊ सोचे लगले कि का जाने बड़ युक्ति आ मेहनत से बनावल ई हमार मनभावन सृष्टि बचबो करी कि ना? कुछ दिन के बादे इनरासन पर खतरा आइए गइल। विश्वामित्र के तपस्या से घबड़ाइल इन्द्र किंकिआये लगलन –

इनरासन ना बाँची रे मेनका,
एगो जागल बा इदिमी सुरिआहा।

बाकिर इन्द्र त इन्द्र रहले–देवराज। उनका आँख का ताकत आ आदमी के औकात के पता नीके तरी रहे। ऊ बिना देरी कइले मेनका के विश्वामित्र भिरी पठाइ के निश्चिन्त हो गइले।

साँचो, आँख गजब के चीज हऽ। ई खुलल रहे चाहे बन... दूनो तरफ से बरछी अस चोट करेले। महाभारत के धृतराष्ट्र आन्हर रहले.... खाली अँखिए से ना, मनो से। उनका आँख के चलते जहाँ एक ओर उनका खानदान के साथे–साथ समूचे भारतवर्ष के ज्ञान–विज्ञान के संहार हो गइल ओहिजे भगवान कृष्ण के मुँह से 'गीता' के अमृतवर्षा भी भइल। सम्राट अशोक के पुत्र कुणाल के आँख जान मारे वाली रहे। उनका आँख पर उनकर विमाता तिष्यरक्षिता मोहित हो गइली आ कुणाल से अनुचित प्रस्ताव कइली। कुणाल के अस्वीकृति से उनकर घाही घमंड षडयंत्र कइके कुणाल के अँखिए फोरवा दिहलस।

आदमी आदमी में फरक होला। एगो आदमी रहले 'भागवत' के शुकदेव जी... अठारहो पुराणन के रचना करे वाला व्यास–पुत्र। रंभा नाँव के अप्सरा, जिनका नाँवे में स्वर्ग झिलमिलाये लागेला, लगली शुकदेव जी पर डोरा डाले। 'शुक–रंभा संवाद', 'भागवत' के महत्त्वपूर्ण अंश ह। रंभा कहत बाड़ी–

पीनस्तनी चन्दन चर्चितांगी,
विलोलनेत्रा तरुणी सुशीला।
ना लिंगिता प्रेमभरेण येन
वृथा गतं तस्य नरस्य जीवनम्।।

अर्थात् ओह मनुष्य के जीवन व्यर्थ बा, जे चंचल नेत्र वाली सुशीला तरुणी के प्रेम से आलिंगन ना कइल।

अइसने दर्शन कालियोदास अपना 'मेघदूत' में व्यक्त कइले बाड़े–

विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौरांगनानां
लोलापांगैर्थदि न रससे लोचनैर्वंचितोऽसि।।

– हे मेघ, तोहरा बिजुरी के चमक से डेरा के उज्जैन नगर के स्त्री लोग तोहरा पर आपन चंचल चितवन जब चलइहें आ ओह चितवन पर तू यदि ना रीझलऽ तऽ समझ लीहऽ कि तोहार जिनगी अकारथ चल गइल।

ई सही बा कि शुकदेव जी पर रंभा के चितवन के कवनो असर ना परल बाकिर उर्दू के नामी–गिरामी शायर मोमिन त आँख के सुरमा लगावेवाली के देख के आपन दुरगतिए करा लिहले। ऊ लिखत बाड़े–

क्या रोऊं? खैरा चश्मिए बख्ते सियाह को।
वाँ शगूले सुरमा है अमी, दाँ नील ढल गया।।

(प्रेयसी के चंचल अँखियन के कारण हम अपना दुर्दिन के रुदन के बरनन का करीं? हमरा आँख के जोत खतम हो रहल बा आ ऊ अपना आँख में सुरमा लगावत बाड़ी।)

आज के जमाना में 'तेरे कारे–कारे नयना' के सुरमई आवाज पर कॉलेजियट लइका–लइकी के थिरकल केकरा–केकरा पर ना कहर ढहलस एके कामोदेव जी ना गिन सकस।

एगो कवि जी अइसन रहले कि ऊ लाख कोशिश करसु, उनकरा उँघाइए ना लागे। एने उनकरा प्रेमिका के ई हाल कि ऊ न कवि जी के आँख के सोझा आवसु न सपने में आवसु। प्रेमी के नीन ना आवे... एह दशा के वर्णन करत रहीम कहत बाड़े–

तनिक आँकरी के परे, नैन होत बेचैन।
वे बपुरा कैसे जिएँ, जिन नैनन में नैन।।

कतनो दवाई–बीरो होखे, नजर के घाव अइसन नासूर क देला कि ऊ ठीके ना होखे। एकर एके दवा बा...

नजर ही से नासूर दिल में पड़े हैं।
नजर ही को मरहम बनाओ तो जाने।।

आँख चतुर–चल्हाँक जासूस ह। जासूस के ई

खूबी होला कि ऊ केहू से सटल रहे भा दूर, ऊ अइसन–अइसन चीज पता लगा लेला कि केहू के पतो ना लागे। 'पूरबी' के गायक महेन्दर मिसिर के घरे महिनवन रहे वाला जासूस के के लख सकल रहे कि ऊ जासूस हवे? मिसिर जी जब पुलिस से धरा गइले त छद्म–नामधारी गोपीचन्द के लक्ष्य क के गवले–

पाकल–पाकल पानवा
खिअवले गोपीचनवा
पिरितिया लगाके भेंजवले जेहल–खनवा।।

महाकवि बिहारी जासूस के आँखि के सम्बन्ध में लिखत बाड़े– 'भरे भौन में करत हैं, नैननि ही सों बात।' एगो उर्दू कवि के कहनाम बा कि आँख सब पर आपन जासूस–नजर राखेले, बाकिर देखला से अइसने जनाला कि ऊ केहू के देखते नइखे–

हर इक से बेगाना बन रहे हैं
किसी की जानिब नजर नहीं है।
खबर वो रखते हैं इस तरह से
कि जैसे कोई खबर नहीं है।।

गालिब त अइसन जासूसी पर 'सौ जान' से फिदा बाड़े। उनका अनुसार 'ऊ' अँखिये आँख में, बिना कवनो बातचीत के हमरा मन के बात आ हाल–चाल पूछ रहल बाड़े, उनकरा एह अनुग्रह के धन्यवाद हम कइसे दीं?

आँख बड़ा अजगुत डकपिउन ह। एके संगे तीन प्रकार के संदेश देबे में ओकर कवनो सानी नइखे। बकौल रसलीन–

अमिय, हलाहल मद भरे, स्वेत, स्याम रतनार।
जियत,मरत,झुकि झुकि परत, जेहि चितवत इकबार।।

'रसलीन' के इहे भाव उर्दू के एगो शायर कहल चहलन बाकिर उनकरा कलम में ऊ तुर्शी, ऊ तराश आ ऊ चुभन ना आ सकल। उर्दू–शायर के तरकश में दुइए गो तेग रहे, तीन गो ना–

मजा बरसात का चाहो तो इन आँखों में आ बैठो
सफेदी है, सियाही है, शफक है, अब्रेबाहाँ है।

आँख पर त ढेर कवि लोग अपना–अपना ढँग से कुछ–ना कुछ लिखले बा बाकिर छायावादी कवि पंत के नजर कुछ अलहदा बा। उनका अनुसार जब मन के पीर सघन हो जाला त लोर बन के ढरक जाला। पंत जी लोराइल आँख में व्यक्तिये ना, समाजो के वेदना के फूटल देखत बाड़े।

ब्रजभाषा काव्य के एगो चलन रहे– 'समस्या–पूर्ति'। कवि लोग के प्रतिभा के परख एहू से होत रहे। उहन लोग के फेर में एक बेर बेचारी 'आँख' पर गइली। समस्या रखाइल–

'ढीली–ढीली नजर सम्हारि लाल डारियो'।
एगो कवि पूर्ति अइसे कइले–
उरज उत्तंगन पै, जोर जुग जंघन पै
त्रिबली तरंगन पै, भरि–भरि ढारियो
लटकी लटक पर, भृकुटी मटक पर
आनन चटक पर पलकन पारियो
गोरे–गोरे गाल पर, मनचीत घात पर
बलदेव बात पर, नेक हूं न टारियो
संकमानि प्यारी जू की, लंक लचकीली पर
ढीली ढीली नजर सम्हारि लाल डारियो।।

भोजपुरी प्रिया अपना प्रिय के प्रति अतना समर्पिता आ प्रेमिल होले कि ऊ एको छन अपना प्रिय के आँख से दूर ना राखल चाहे। परदेशी प्रियतम 'बहरा' जाये के बेरा अपना प्रिया के दिलासा देत बा कि ऊ ओकरा खातिर छापावाली साड़ी ले के आई, बाकिर प्रिया कहत बाड़ी–

अगिया लगाइबि पिया छापावाली सड़िया में
रखबो नयन के हुजूर हो बलमुआ।।

प्रिय विदेश चल गइले। ऊ एगो गाँछ बोवले रहले, जे अब बड़ हो गइल बा। प्रिया अपना प्रियतम के लगावल ओह गाँछ पर चढ़ के देखत बाड़ी–

पिया मोर गइले हो पूरबी बनिजिया से
दुअरा खजुलिया लगाइ, सुन रे गोरिया।
ओही रे खजुलिया चढ़ी, चारू ओर चितईं से
पिया बसे नियरा कि दूर, सुन रे गोरिया।।

आँख रति–भाव के विशेषज्ञ ह। प्रेम के मूल 'रति' ह। जब रति कान्त–कान्ता विषयक् होला, त ऊ शृंगार ह, जब देवादि विषयक् होला, त भक्ति आ जब माता–पिता–पुत्र विषयक होला, त वात्सल्य। कुछ आँख भक्ति आ अध्यात्मे में रमेले। ओकर हर रति भक्ति–रत रहेले। भक्त सूरदास के आँख अतना लालची हो गइल रहे कि एक बेर जब श्याम के सुंदर स्वरूप में निमग्न हो गइल, त होइए गइल–

लोचन लालची मयेरी।
सारंग–रिपु के हटत न रोकैं, हरि सरूप गिघए री।।
काजर कुलुफ मेलि मैं राखे, पलक कपाट दए री।

जीवन के अन्तिम समय में सूर के मुँह से जवन पद निकसल ओह में श्याम–सुंदर के नयनने के बरनन रहे–

खंजन–नयन रूप–रस माते। अतिसय चारू चपल अनियारे, पल पिंजरा न समाते।। ■■

■ मिथिलेश गहमरी के दू गो गजल

(एक)

साँप केंचुल उतारे लगल, कुछ करऽ
बीखि आपन सँवारे लगल, कुछ करऽ

लोग मनसे अपाहिज भइल जात बा
नेह-नाता किनारे लगल, कुछ करऽ

गाँव के माथ से अँचरा उधिया गइल
लाज अब मटकी मारे लगल, कुछ करऽ

हमराझाँझर मड़इया के सुख देख के
गोड़ आन्ही पसारे लगल, कुछ करऽ

हाथ में जेकरा अबहीं खेलवना रहे
ऊ त 'बोगी' बहारे लगल, कुछ करऽ

छाँह के खूब वादा प वादा भइल
घाम तऽ आग बारे लगल, कुछ करऽ

राह में दुख के परबत खड़ा देख के
हौसला लोग हारे लगल, कुछ करऽ।

(दू)

रंग रौनक रूप के अब कवनो ओरहन का करी
हो गइल पथरे के सउँसे बाग, सावन का करी

बाघ महँगाई के हर छन बाटे अपना घात में
अइसना में गाय जइसन कवनो निर्धन का करी

बन गइल मारीच मामा फिर से सोना के हिरन
का बताईं जानकी के साथ रावन का करी

जड़ में गइले पर मिली कवनो समस्या के निदान
राशि में जब चोर लागल बा, बढ़ावन का करी

चाहे काँसा के रहे ऊ, चाहे पीतर के रहे
मुँह थुराइल बाटे लोहा के तऽ अरिवन का करी

फिर से तू सपना उकेरऽ फिर नया सिरजन करऽ
रेशा रेशा झर गइल सुजनी के, पेवन का करी।

बदरा ना बरिसल

■ शिवजी पान्डेय 'रसराज'

धरती के लगल पियास अ' बदरा ना बरिसल!
टूटल मनवाँ के आस कि बदरा ना बरिसल!

दरकल भूइं खड़ा बा तरुवर पात-पात मरुआइल
लहलह करित कहाँ ले खेती, घास-फूस झउँसाइल
सूखत पोखर-ताल देखि, अब टूटत बा विस्वास कि बदरा ना बरिसल!

छटपटात कनई में मछरी, जोहे नया तलइया
पानी-पानी कहि कहि धावे सगरो रोज चिरइया
छँहियों में अगिया धधकावे अब तऽ रोज अकास कि बदरा ना बरिसल!

उमस घाम का मारे लड़िका सुबह साँझ ना खेलें
घर का भितरें लुका-पटा के रोज उदासी झेलें
नागपंचमी अउर पँचइयाँ लवटल खूँख निरास कि बदरा ना बरिसल!

कविता कबो मुई ना

■ विजयानंद तिवारी

भाई जी,
तहार शासन बा
तहार भाषन बा...
बड़हन खूँटा से बान्ह द
धरती के
रोक द ओकर गति
कोपरनिकस–गेलेलियो के
शूट क द
आदेश तहार बाकिर
धरती ई
खूँटा का संगे–संग
चलते–चलत जाई
जान लऽ!
धरती के साँसे से
जामेले कविता
आ आसमान में उग जाले
भरुकवा अस।

अफलातून के इयाद क के
बहरिया द कवियन के देश से
जरा द कविता के किताब
उड़ा द राख हवा में
बाकिर
गिरह बान्ह ल, भाई जी
गँवे–गँवे ऊ राख
धरती पर गिरत–पसरत जाई
कविता के बिरवा
फेरू अँखुआई।
जेहल में बन क द कविता के
ओकर मये ठठ्ठर–ठाट
उखार–पखार द
हथकड़ी–बेड़ी का झन–झन में बाजत
ऊ बहरी सुनाई
फाँसी दे द ओकरा के
ऊ फँदा पर टाँकल खिलखिलाई
तहार मय जरोह
रह जाई अवाक्
कविता हर दिल में मुसकाई।

एगो राज के बात अवरू
जान लऽ, भाई जी
कविता के
बढ़िया सनूक में सजा के
जतन से
लाद द पुरस्कारन से
दूनो हाथे झुझुना धरा द
ठकुरसुहाती के
आ मउगड़ मंत्री से
फीता कटवा के
चनन–टीका करा द
भोजन अछइत
ऊ दुइए–चार दिन में
मू जाई
जिअबो करी त आखिरस
जोम के जम्हु
छू जाई।

बाकिर
अइसन होई ना
कविता कबो मुई ना
गाफिलत में मत रहिहऽ
कविता नू राज–दरबारे गाई
नू सत्ता के
तरुआ सुहुराई
कविता महाकाल के तिसरकी आँख ह
विश्वास ना होखे तऽ
पूछ आवऽ सार्त्र से। ■■

कहानी

सपना जगावत रही

■ रमाशंकर श्रीवास्तव

हमार मन ना मानल। एक दिन उनका घरे चल गइनी। ओसारा में बइठल उनकर बाबूजी अखबार पढ़त रहनी। परनाम क के हम पुछनी– चाचा, पारवती कहाँ बाड़ी?

चाचा हमरा चेहरा पर आँख गड़वले तकले। अइसन नजर से उ कबो ना तकले रहले। गंभीर होके बोलले – जाके भीतर अंगना में देख। कहीं बइठल होइहें।

भीतर गइनी त पारबती तकिया के फाटल खोल सीअत रहली। हमरा पर नजर पड़ते उनकर उदास चेहरा तनी चमक उठल।

– आवऽ दीदी, बइठ। कइसे–कइसे हमार इयाद आइल ह। हम पढ़ाई छोड़ला के कारण पूछनी। कुछ देर ले उ चुप्पी साध लेहली। जोर देहला पर उ एतने कहली – माई – बाबूजी रोकत बा लोग।

पारबती के जवाब हमरा मन में ना अधसल। शक भइल कवनो अउरी बात त नइखे। एही बीच पारबती के छोट भाई आके हमनी के लगे बइठ गइल आ कहलस – ए दीदी, इनका के तनी समझाव ना। दिन रात रोअते रहेली।

रो–रो के उदासी आ खामोशी में जिनिगी बीतावल त ठीक ना कहाई। बहुत किरिया कसम धरवला पर पारबती कहली–अब हमरा जिनगी में बचले का बा। एतना पर त केतना लोग प्रान त्याग देला।

कहानी मालूम भइल कि पारबती के जिनिगी में जहर घोरेवाला उनकरे फुफेरा भाई रहले। बेर–बेर घरे आवस। खूब बात करस। बीस साल के होइहें, पारवती से तीन चार साल बड़। कबो–कबो साथे बइठ के पारबती के पढ़ाइयो–लिखाई में मदद क देस। जवना दिने उ ना आवस त पारबती के मन उदास हो जाव। किताब–कापी का ओर देखे के मन ना करे। हमेशा उनकरे ध्यान में डूबत रहस पारबती। बुझइबे ना करे कि उनकरा का भइल बा। ना मन से खास–पियस आ ना परिवार के लोग से बतियावस। जहिया मनीष आ जास, पारबती खुश हो जास। मनीषो पारबती के कबो–कबो अइसन नजर से देखस कि बुझाव जे पारबती से उ कुछ कहे के चाहत बाड़े। एक दिन त पारबतिये के मुँह से निकल गई– जहिया तू ना आवेलऽ ओह दिन हमार पढ़ाई ना हो पावेला।

पारबती के बात पर मनीष हँसे लगले। मगर हँसी के बाद मनीष तुरंते कवनो खयाल में डूब गइले। हँसते–हँसते बोल पड़ले– हमार बियाह होखे जा रहल बा। माई–बाबूजी लड़की देख लेले बा लोग।

खबर सुनते पारबती के दिल धक्–से हो गइल। केहूं तरह अपना पर काबू करके पूछली– लड़की बहुत सुंदर बाड़ी का?

– बाड़ी, बाकिर तहरा नियर नइखी। तू ज्यादा सुंदर बाड़ू।

–झूठ !– कह के पारबती लजइले अंगना में चल गइली।

मनीष के अफसोस भइल, पारबती से अइसन खबर सुनावल त कवनो जरूरी ना रहल ह। उ केतना जोर से भगली ह। चपलो पेन्हे के भुला गइली। ओने से पारबती के भउजी मुस्कुराते आवत रहली। कहली– आपस में कवनो मजाक भइल ह का मनीष बाबू। पारबती बबुनी लजइले भीतरी भगली ह। हम ना बचइतीं त गिलास के पानी आ तस्तरी के मिठाई सब जमीन पर गिरके हेन–मेन हो जाइत। हइ लीं, पानी पीं।

एगो मिठाई मुँह में डाल के मनीष चल गइले। उनकर गइल पारबती के अच्छा ना लागल। पता ना मनीष के मन में का बा। ओह दिन कइसन सट–से कह बइठले–हमार चले त हम तहरे से बियाह क लीं।

– अइसनो कहीं होला। फुफुआउत भाई–बहिन के रिश्ता बा।

– रिश्ता अपना जगह पर बा पारवती, बेचैन मन के समझावल केतना कठिन होला। का हमनी के बियाह नइखे, हो सकत।

–बियाह ! – एकरा आगे मुँह से कुछ ना निकलल।

कई दिन ले पारबती अपना मन के टटोलत रह गइली। उहो त चैन से नइखी। मनीष जब सामने होले त अउर सब बतिये भुला जाली। बइठल–बइठल एक दिन उ कवनो मैगजीन मंगले। पारबती दउड़ल गइली आ गिलास में पानी लिया के ध देहली। मनीष के हँसी आ गइल। पारबती अपना गलती पर लजा गइली। पूछत बाड़े कि बियाह नइखे हो सकत। मनीष इ कइसन सवाल पूछ के चल गइले। उ चल गइले मगर उनकर सवाल हमरा मन से ना गइल। माई–बाबूजी भा गाँव के लोग सुनी त का कही। जेकरे कान में बात पड़ी उ धक्–से रह जाई। हर आदमी चिहा के पूछी – का फुफेरा भाई से पारबती के बियाह होई? अइसन अकरहर एह गाँव में आज तकले नइखे भइल।

पारबती के बतिया उनकर छोट भाई सुन लेहलस। जाके अपना माई–बाबुजी के बता अइले। लइका के बात पर जल्दी केहू के विश्वास ना भइल। महतारी कहली – हमार लकइवा पगला गइल बा। लेकिन जब धुआँ उठ गइल त आग कहीं होखबे करी।

घर में काना–फूसी होखे लागल। लइका से पुछाये लागल – तू का का सुनल ह बाबू?

बाप–महतारी डाँटल – अब तहरा आगे पढ़ला के जरूरत नइखे। तीन महीना हो गइल पारबती पढ़ाई छोड़ के बइठ गइली। सुनीता समुझवली – पढ़ाई छोड़ल ठीक नइखे। मैट्रिक बी0ए0 कुछ पास क जइबू त जहाँ जइबू तहार इज्जत होई। प्रेम–मोहब्बत के फेरा में पड़ के तू आपन जिनिगी बरबाद करे पर लागल बाड़ू। केकरा मंजूर होई ताहार बात। गड़हा में कूदे के तइयार बाड़ू। अइसन प्रेम–बियाह बाद में दुखदायी हो जाला। जवानी के जोश में आन्हर मन बन पारबती। पढ़ाई मत छोड़, इस्कूल जाए लगबू त मन बदल जाई। अभी तहार उमिरे का भइल। हमरा से चार चाल छोटे होखबू।

सुनीता के बात पारबती के दिल में समा गइल। मन छटपटाए लागल। का करस, का ना करस। एक दिन इस्कूल ले जाए खातिर सुनीता आ गइली। बांह ध के उठवली– उठ तारू कि ना। बइठल–बइठल आपन मन खराब कइले बाड़ू।

दोसरा दिने सबेरे उठ के पारबती नीमन कपड़ा पेन्ह के इस्कूल जाए के तइयार हो गइली। उनका के देख के सभे चिहा गइल। अब उ रोजे समय से इस्कूल जाए लगली। मगर लउटे में कहियो–कहियो देरी हो जाव। उनकर भउजी एक दिन हँसते–हँसते पूछ देहली। लउटे में देरी काहे रास्ता में केहू भेंटा गइल ह का?

बात धीरे–धीरे साफ होखे लागल कि पारबती से मिले खातिर मनीष कबो–कबो उनकर पेंड़ा जोहत रहेले। उ मनीष से कह देहली – अब कुछू हो जाव हम तहरे से बियाह करब। मनीषो लगले सोचे– हमरो केहू से डर–भय नइखे। केहू के नाक कटो भा रहो। प्रेम कइल कवनो पाप ना ह। हमनी के प्यार से बढ़के रिश्ता नइखे। पारबती से बियाह ना होई त हमार जीअल बेकार बा। हम प्रान दे देब।

मगर नियति के कुछ अउरे मंजूर रहे। मनीष के शादी कवनो दोसर लड़की से तय हो गइल। अपना महतारी से जाके कहले– एह घर में पारबती के छोड़ के दोसर केहू ना आई। बाप अलगे अड़ल रहले। हमरा खान्दान में आज तकले अइसन शादी ना भइल। इज्जत–पानी सब माटी में मिल जाई। मनीष के संजम के बान्ह टूट गइल– आपन इज्जत के खूंटा में बान्ह के रउआ अगोरत रहीं। हमार दुनिया अब दोसर बा।

गाँव के बहरा एगो पोखरा में डूब के मनीष आपन प्रान दे देहले। जात–जात चिट्ठी लिख गइले इ दुनिया हमरा लायक नइखे। अब दोसरे दुनिया में भेंट होई। पारबती, हमनी के साथ एतने लिखल रहे।

मनीष के घरे कोहराम मच गइल। महतारी के दाँत पर दाँत लागत रहे। बाप आपन सिर के बाल नोचत रहले–मनीषवा हमरा के कहीं के ना रखलस। टोला महल्ला के लोग पारबती के नाम ले ले के कोसत रहे। सारा कांड ओही लड़की के कारण भइल ह। एगो जवान लइका के अखरेड़े जान चल गइल।पारबती के आँख के आँसू सूखत ना रहे। दुइये मील पर मनीष के गाँव रहे। मन छटपटात रहे – हमू जाके ओही पोखरा में डूब जइतीं। खूंटा में बान्हल बाछी नियर उ छटपटात रहली। खाना–पीना त्याग के बइठ गइली। भउजी, सैकड़ों बार समुझवली – पारबती बबुनी, अब बेकारे रउआ शोक में पड़ल बानी। मनीषो बाबू प्रेम के जुनून में हमनी के बात ना सुनले।

गुमसुम बनल पारबती मनीष के खेयाल में डूबल रहस। तू हमरा के धोखा देके चल गइलऽ मनीष। तू हीं कहले रहलऽ– पारबती, तहार सुंदर रूप देखे जोग बा। हम दउड़ के ऐनक के लगे जाके आपन रंग रूप देखनी। अइसन त हम अपना के कबो निरखले ही ना रहनी। मनीष झूठ नइखन कहत। सांचो हम सुंदर बानी। लइकाई में माई हमार झोंटा धींच के खिसयइले कहले रहे– अपना सुंदर रूप पर ढेर गुमान मत कर। इहे रूपवा एक दिन तोहरा के डूबा दी। ढेर चहकबू त कौनो उठा के ले जाई। सुंदर लड़की के खोजे खातिर अइसहीं नेटुआ गाँव–जवार में घूमत रहे ले सन।

मनीष से हम आपन पूरा हाल ना बता पवनी। केतना बात मने में दबल–दबल मर गइल। जहिया उनका के पहिला बेर देखनी त अपना आँख पर विश्वासे ना भइल। मने मन उरकर रोज इन्तजार कइनी। जब उ सामने आके खड़ा हो जास त मन में डर समा जाव कि मनीष लउट मत जास। आज दू घंटा बइठे के पड़ी। मनीष तू जब हमरा घर से जाये लागेलऽ त बुझाला कि हमार कवनो कीमती चीज चोरवले ले जात बाड़। लाज में हम चिल्लाइयो नइखीं सकत। ओह रात के हमार बेचैनी तू का बूझब। अगिला भोर के आसमान से हम पूछीं– हमार मनीष आज अइहें कि ना। किताब के पन्ना उलटत में उनकरा हाथ से हमार अंगुरी छुआ गइल। बुझाइल जे सन्न दे हमार भीतर कुछ समा गइल। तू हमार जान ले लेब मनीष।

एह प्रेम के लड़ाई में आपन जान गंवावे खातिर तइयार रहनी। प्यार में काहे आँख आन्हर हो जाला, कान बहिर बन जाला, छाती धड़के लागेला। हे भगवान ! प्रेम मोहब्बत देके मनुष्य के तू एतना कमजोर काहे बना देहलऽ। केहू के एगो हँसी, एगो कटाक्ष मन में धंस के मीठ पीड़ा बन जाला। आँख के ऊँधी उड़ जाला। प्रीत के इ कइसन रीत ह।

सुतला रात में पारबती के कान में केहू के आवाज पड़ल– अब का बइठल बाड़ू पारबती। मनीष

चल गइले। तहार कटोरा ना भरल। तू भिखारिन के भिखारिने रह गइलू। अब त केहूं त रे जिये के बा। पियासल आत्मा के मिलन स्वर्ग में होला। मनीष के पावे के बा त तहरो उनकरा लगे जाए के पड़ी।

पारबती रात के करिया आसमान का ओर तकली। बुझाइल जे चमकत जोन्ही में मनीष उनकरा के बोलावत बाड़े। गते से घर के केंवाड़ी खोल के उ बहरा निकल गइली। जे हमरा खातिर आपन सोना नियर देह त्याग दीहल ओकरा खातिर हम आपन देह बचा के का करेब। पारबती के लागल जे बगइचा के लगे बहत बड़की नहर उनकरा के बोलावत बिया – आ जा तू हमरा गोदी में। केहू के इयाद में तड़पत मरला से नीमन बा कि तू हमरा लहर में समा जा। दुनिया में अइसने होला। ओह दुनिया में जे चहुँप जाला उ कबो मरेला ना।

बेचैन पारबती अपना बिछौना पर आके लेट गइली। हे भगवान ! अब का करीं। मूंदल पलक के ऊँधी आवंक में ना आवे। आँख के वेदना पलके तोप के रखेला। दोसरका – तिसरका करवट फेरली – बड़की नहर जोर–जोर से बोलावत रहे – आवऽ हमरा गोदी में समा जा। सब दुख दूर हो जाई।

अगिला करवट पर पारबती जोर से चिल्ला पड़ली – ना, ना ! हम ना आएब। हम डूब के ना मरेब। उनकर आवाज सुन के अपना कमरा से महतारी – भउजी दउडल आइल लोग। तहरा इ का भइल बा पारबती? तू केकरा से ना ना कहत बाड़ू। सपना देखलू ह का?

पारबती भकुआइल ताकत रह गइली।

– 'मनीष के बिसार द पारबती।'

उ फेन चिल्लइली – हम तहरा गोदी में ना जाएब। हम जिन्दा रहेब। भूत प्रेत बनके मनीष के हम कइसे इयाद रखब। जियेब तबे नू मनीष के सपना हमरा के जगावत रही।

– 'चुप हो जाई बबुनी। इ सब का बकत बानी।' भउजी के आँख लोर से भर गइल। अपना मन के संभारी।

– ना भाभी, मनीष खातिर हमरा जिये के बा।

उनकर इयाद में जिनिगी के बाकी दिन हम काट लेब। हम अपना प्यार के नहर में ना डुबाएब। उनकर सपना हमरा के जगावत रही।

हम रहेब तबे मनीषों के इयाद बनल रही। चल गइले त का उ आजो हमरा लगे बाड़े। कहत बाड़े– तू केतना सुंदर बाड़ू पारबती।

भउजी सिरहानी बइठ के उनकर आँख पोंछे लगली।

– भाभी, जवन पीड़ा मनीष देके गइले ओके हम गंवाएब ना। केहू के इयाद कके जीयला में केतना सुख बा भाभी। पारबती सुबुक–सुबुक के रोए लगली। ■ ■

लघु कथा

पहिचान पर संकट

■ रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'

दू गो बिलार आपुस में लड़ते-लड़त अंगना में ले आ गइले स ऽ ! भितरी घर में पहिलहीं से हल्ला मचल रहे। लोग आपुस में अइसन मुंहचोंथउवल कइले रहे कि हऊंजार सुनि के दूनों बिलार पटुआ गइले स । उनहन के अचके भइल गारी-गलौज, झगरा आ धरा-धरी से थोरिकी देर ले त भकुवा मरले रहे, फेर एगो, दुसरका से गते से कहलस, 'इयार हमनी का त जनमे से, लड़ाई-झगरा, नोचा चोंथी, आ काटा-कूटी के गुन-सुभाव पवले बानी जा, बाकि ई लोग त आदमी ह ! पढ़ल-लिखल, समझदार, ई लोग त हमहनो से बेसी झगराह बा। अइसे त हमन के पहिचाने प संकट आ जाई !'

'तूं ठीके कहत बाड़ ऽ ! पहिले आदमी लड़े झगरे त हमनी के परतोख दियात रहे कि देख ऽ देख ऽ ई बिलार लेखा लड़त बाड़े स !' इहे हाल रही त हमनी के परतोखो दिहल बन हो जाई।' दूसरका के धीरे से बोलल । भितरी हल्ला-हउंजार अउरी बढ़ते जात रहे। चिंता में परल पहिलका पुछलस, त अब का कइल जाई ?। कइल का जाई ! अदिमी का नांव पर पेसाब-पैखाना कइ के चल दिहल जाई ! बसना उठी त ससुर लोग परेसान होके हमनी के पैखाना साफ करी लोग। एही लायक बा ई लोग ! दूसरका राय दिहलस । पहिला ओकरा से सहमति दिखावत मूड़ी डोलवलस, फेरू दुनो एह निरनय पर अमल कइले स ऽ ! पेसाब, पैखाना कइला का बाद, मुस्कियात बहरा निकल गइले स ! घर के भीतर अबहियों गाली-गलौज, काटा-कूटी जारी रहे। ■ ■

कहानी

लमहर सफर आ पंचर पहिया

■ तैयब हुसैन पीड़ित

बनारस भुलइले ना भुलाय। शादी–बिआह के तूम–ताम में जो कबहूँ बनारसी साड़ी झलकल त सामने खड़ा हो जाला आपन बस्ती 'जेरगूलर'।

जेरगूलर जोलाहन के बस्ती ह। घन आबादी, कच्चा–पक्का सटल–सटल मकान आ पातर–पातर गली। गली से गुजरब त खिड़की का भीतर करघा पर बइठल बिनकराई करत अधेर औरत आ कुँआर लइकी मिल जइहंन स। बनारसी साड़ी एही हाथन के करामात ह। बाकी अइसन कलाकारी जनला का बादो तंत्री आ फटेहाली अइसन महल्लन के सोहाग–भाग ह। ठीकेदार पूँजी बाँट जालन भा कच्चा माल दे जालन। तइयार माल उठा ले जालन, जवन सेठन का जरिए बड़ कीमत पर बिदेस भेज दिहल जाला। कारिगरन के हर साड़ी पर साधारन दाम बान्हल बा। बुझला ऊ ठिकेदारन के मजूर मतिन होलन आ काम के मजूरी पावेलन, बस। छोट नफा दलाल के जेब में आ मोट लाभ सेठन के तिजोड़ी में।

एह महल्ला में तालीम के नाम पर छोट–छोट मदरसा आ एगो सरकारी 'दाई तलीमा इण्टर कालेज'। दाई तलीमा इस्लाम के इतिहास में ऊ पाक नाम हिय जे लइकाइयें में मतारी के मर गइला पर मोहम्मद साहब के गोदी में खेला के पलले–पोसले रहस। अब बुझाला कि कबीर, रैदास लेखा ई बनारसे ह जवन दाई हलीमा के नाम तालीम से जोड़ के इज्जत देबे के काम कइले बा, ना त मुसलमानों कन इस्लाम के बड़के शाख़्सियत घूम–फिर के इयाद कइल जालन।

हमर अब्बू हाफिज रहीम बख्श हमरा आ फिरोज के साथ ही कुरान पाक खतम करवले रहस। हमरा इयाद बा गोल टोपी आ तबीज पेन्हले ऊ झूम–झूम के कुरान शरीफ पढ़े आ हम गुलाबी ओढ़नी देह से माथा ले लपेटले पढ़े में रेघाईं। बचपना हमनी के एक–दोसरा कावर खिंचले रहे ना त कहाँ राजा भोज आ कहाँ गंगुआ तेली !

फिरोज के वालिद सैयद दाउद अली बनारसी साड़ी के बड़का बेपारी। हमार माई–बहिन मामूली बुनकर। जब फिरोज के नाम दाइ तलीमा इन्टर कालेज में लिखाइल त हमहूँ फिरोज साथे पढ़े के जिद करे लगनी। अब्बू फिरोज के वालिद से आरजू–मिनती कइलन आ हमर नाम फिरोज साथे कवलेज में लिखा गइल। फीस माफ आ किताब के मार फिरोज पर। सैयद दाउदे अली कालेज–कमिटी के सदर आने सेकेरेटरी रहस, एहसे इहहूँ फिरोज के साथ नसीब भइल।

हम समुझ ना पइलीं कि कब खेल–खेल में हमनी एक–दोसरा से नजदीक होत गइलीं आ किताबन के अदला–बदली का बहाने फूल साथे मोहब्बतनाम रख के दिल से दिल के इजहार होखे लागल। हमनी छिपके मिलबो करीं बाकी अल्ला कसम, बात बाते तक रहल। बिना निकाह जिस्मानी हरकत गुनाह जे ह! आ लोग–बाग के नुक्ता चीनी का बादो कालेज गइल परिवार बन्द ना कइलस।

बलुक ई हमनी के करीबी रिश्ते के नतीजा रहे जे आपा के शादी में मददगार बनल आ फिरोज के अब्बू के मस्जिद के ईमाम से हमरा बड़ बहिन नमीला के शादी हो गइल। शादी में ना खाली फिरोज के खटल देखे लायक रहे बलुक चाचू सैयद दाउद अली बतौर करजा भरपूर रूपयो–पइसा के मदद कइलन।

आपी के बाद बिनकराई के सब भार अम्मी जान पर आ गइल, आ ऊ बेमार रहे रहली। उनकर खाँसी भा बोखार छूटे के नाम ना लेबे आ कमजोरी दिन–दिन बढ़त जाय। कबो–कबो त मुँह से खून के उल्टी हो जाय।

प्राइवेट मदरसा में अब्बू के मामूली तनखाह से घर के खरच चलल मुश्किल हो गइल आ एने हमार पढ़ाई छोड़वा देहल गइल, ओने फिरोज के आगे के पढ़ाई खातिर बैंगलोर भेज दिआइल।

अब्बू आ अम्मी के आगे घर चलावे आ करजा भरे के सवाल त लमहर रहबे कइल, आपी के ससुरारो रास ना आवे लागल आ सबसे बड़हन बवाल हमरा जइसन गरीब बाप के लइकी से अमीर बाप के बेटा फिरोज के लगाव मुँहा–मुँही लोग के जबान पर किस्सा बने लागल आ रास्ता एके गो रहे–हमनी का बीचे दूरी के देवार उठा देहल...।

... आखिर अम्मा ना रहली। जिनगी में पहिला बेर चारों ओर धुप्प अन्हार बुझायेल। पुका फाड़ के रोये चहलीं बाकी अब्बा मुँह जाँत देलन। उनका मोताबिक रोअला से मुर्दा आ जिन्दा का बीचे बहल लोर से एगो सैलाब पैदा हो जाले जवन चाहियो के रूह पार ना कर सके। भला अम्मी के रूह का रास्ता में अइसन बाधा हमरा वजह से पैदा हो जाव ई हमरा कतई गंवारा ना रहे।

अइसहीं मुँह आपियो के दबावल रहे जब ऊ अपना पसन से अपनी निकाह के सुरूख लाल दुपट्टा बिनले रहस आ पइसा घटला पर निज शादी के एक दिन पहिले अब्बू ओके बेच घललन। गरीबन के अरमान के खून कुछ अइसहीं अनचितले में क दिआला आ रोअहूँ ना दिआय। कवनो सिनेमा में एगो अलचार के लइका सुतावत खानी एगो लोरी गावत सुनले रही–

'चुप होजा अमीरों की ये सोने की घड़ी है
तेरे लिए रोने को बहुत उम्र पड़ी है!...'

दिल में फिरोज के आवागछ एगो सहेली के फोन का मारफत बनल रहल। अल्लाह झूठ मत बोलावस त मरज दिनों दिन बढ़ते गइल।

केतना बड़ाई करेला फिरोज बैंगलोर के ! यू. पी.–बिहार से हजार गुना बेहतर बतावेला। कुदरती सीन–सिनरी! खूबसूरत नजारा! कबो तन्नू बेगम कहके बतिआवे लागेला शैतान! कहेला, बालिग होते कोर्ट में शादी कर लेब! हक बा संविधान में! ओकरा का पता कि मुस्लिम पर्सनल लॉ संविधान के सब कानून ना माने। शादी–बियाह वाला त खास क के ना। हम झटक दीले ओकर बकबकायेल। लइके पर से बातूनी बा फिरोज। कहीले, पहिले इंजीनियर बन के पइसा कमा। चाचू मोटा दहेज लेके कहीं शादी करियो दिहन त हम तोहर दोसरकी बीबी बन के खिदमत खातिर तइयार बानी। कहाँ कवनो अड़चन बा इस्लाम में? नौकरी चाहे सरकारी होय भा प्राइविट, चार बीबी के इजाजत! जइसे कवनो बड़ क्रिमिनल के सात खून माफ!....

हाफिज रहीम बख्श –

बीबी गुजर गइली त बनारस काटे धावे लागल। कारबार त चउपट होइये गइल रहे। मदरसो बन्द हो गइल। करजा का एवज में मकान जबानिए सैयद दाउद अली का हवाले क के बिहार में छपरा चल अइलीं। करीम चक महल्ला के इमली टोला में एगो नया मस्जिद बनल रहे, जहाँ ईमान के जरूरत रहे। लोग रहम खाइल, राख लिहल। पाँचो वक्त अजान दीं, नमाज पढ़ाईं। मस्जिद के जमीने में घेर–घार के तहमीना आ हमार गुजारा होखे लागल। तहमीना पहिले त लइकियन के घरे–घरे जाके मजहबी पढ़ाई पढ़ावस, बाद में जरूरत आ सहूलियत देखत मदरसो कायम कइल लोग त हम लइकन के आ बेटी लइकियन के पढ़ावे लगली।

जिनगी के गाड़ी लुढ़के लागल। बाकी बड़ बेटी के अपना शौहर से लगाव में कमी से मन उखड़ल–उखड़ल लागे। हमरा दाढ़ी से बीबी के कवनो अमनख ना रहे। पुरनका मिजाज के औरत रहस, मियां जेह में खुश, बीबी के आपनो खुशी ओही में देखेवाली हमसफर। बाकी आजकाल के लइकियन के ई कुल्ही मजहबी रहन–सहन मन से पसन्द नइखे, मुँह से भले ना बोलल। मजहबी पाबन्दी अपना जगह पर बाकी इन्सानी मन के पसंदो त कवनो माने राखेला? जब शौहर के खूबसूरत बीबी चाहीं त बीबियो के त खूबसूरत शौहर पावे के हक बा। हिंदी मानवाधिकार के बात के का जबाब बा मजहब पाले?

तौबा–तौबा! हाफिज होके कहाँ से कहाँ सोच गइलीं, अल्लाह माफ करस।

तहमीना अपना कमाई से मोबाइल खरीद लेले बा। घंटन बतिआवेला अकेले में फिरोज से! का हम जानत नइखीं? बचपना बा दूनों में। जब हकीकत सामने आई त बाप का आगे फिरोज के सिट्टी–पिट्टी गुम हो जाई शादी करे में। आ तहमीनो के मोहब्बत के मरम जात रही। कहेला इस्लाम में सब बन्दा बराबर बा, बाकी कै फीसदी सैयद अपना बेटा के शादी अंसारी के बेटी से करता? हँ, जवन होता, ऊ लइका–लइकी के जिद पर भा चालाकी से। जो हमरो कवनो औलाद फिरोज लेखा इंजीनियरिंग पढ़त रहित त ईहे सैयद दाउद अली आपन बेटी खुशी–खुशी देवेला तइयार हो जइतन आ गोलट में हमरो बेटी फिरोज के जैजियत में चल जाइत बाकी फिलहाल अइसन कवनो सूरत नइखे।

बड़ दामाद आने जमीला के शौहर त शादी का बादे सैयद मियां के मस्जिद के ईमामत छोड़ देले रहल। बहाना शादी के बाद अपना गाँव के घर–परिवार के जिमवारी निभावल रहे। बाकी एने उन्हन के दिल्ली जाए के खबर समधी से मिलल ह। जमीला दबल जबान अपना शौहर के चालो–चलन पर सुबहा के बात फोन पर तहमीना से बतावेले। मतारी रहती त बेटी के फिकिर के जिम्मा उनकर होइत, आज त दूनों हमरे निभावे के पड़ता। मुसलमान मरद अक्सर मजहबी छूट से नाजायज फायदा उठावेलन।

जमीला–

गाँवे त मौका ना रहे। परिवार आ पास–पड़ोस के लेहाज आड़े आवे, मुदा दिल्ली आके त खुदसर बादशाही मिल गइल बा मियां शौहर के। शादी मस्जिद के करीबे पुरानी दिल्ली के मुसलमान महल्ला में एगो मुसमात के मकान में किरायादार बानीं। मुसमात के कुछ खस्सी–बकरी आ मुर्गी–अंडा के कारबार बा, जवना के देख–रेख के शरत पर मकान मिलल बा। बाकी ई त फाव में बा। वइसे हमरा अपना मियां के काम के पता ना चले। रसीद के अधकटी से पता चलेला कि मस्जिद आ मदरसा बनवावे खातिर चन्दा मांगत

फिरेलन। रमजान में ई झूठ के कारबार कुछ जादे चल निकलले। अब त दाढ़ी–बाल सलीका से मेंहदी में लाल देखाई देला। झूल कुर्ता आ उटुंग पैजामा पर बंडी का बादो तोन के गोलाई में दिनोदिन इजाफा हो रहल बा। सिर पर गोल टोपी कुछ डिजाइनदार आ महंगा कपड़ा खरीदाता। सुबह–शाम जानिमाज बिछा के अगरबत्ती आ लोबान का धुआँ में दोआ–ताबीज के बिजनेसो फइल रहल बा। मकान–मालकिन औलाद के चाहतवाली औरतन के बहला–फुसला के ले आ रहल बाड़ी। एह धरम के धंधा में हमार पूछ धीरे–धीरे कम होत जाता। बन्द कमरा में घंटन मकान–मालकिन साथे 'हा–हा.. ही–ही...' ना शरीयत इयाद बा ना मजहब के पाबंदी कि गैर मरद से गैर औरत के बातचीत पर्दा में भा एक हदे तक मोनासिब बा। अब त एके रास्ता बा, अब्बू बोला लेस ना त कइक बेर सुन चुकल बानी शौहर से नबी साहब के वाकया कि ऊहो त पहिलकी शादी मुसमात खदीजा से कइले रहस, ऊहो उनकर कारबार सम्हारे का दौरान। उमिरों में बहुते फरक रहे ओह लोग में। खदीजा चालीस के त पैगम्बर पच्चीस के। ओकरा बादो ऊ कुल इगारह शादी कइलन। हँ, बाद के उम्मत खातिर चार के बाद रोक लाग गइल। किस्सा कोताह ई कि अब भरसक मियां के मुसमात मकान–मालकिन से शादी तय बा। हम कहलीं कि हमरा के तलाक दे दऽ त कहेलन कि– 'त हमनी के खिदमत के करी?'

कइसन एकतरफा नियम बा मजहब के! मियां जब चाहे तलाक के तीन कोड़ा मार के (तीन बेरा तलाक कह के) बीबी से दामन झाड़ लेबे आ बीबी जो शौहर साथे ना रहल चाहे त उनका खुला (तलाक) मांगे। छोड़ देबे के आरजू–मिनती करे। आ जो तवनो पर ना तइयार होखस त बीबी के इस्लामिक अदालत में जाके गोहार लगावे के पड़े। इहाँ जजो मर्दे बाड़न, एह से कोर्ट तलाक के मोनासिब वजह तलाशेला जबकि तलाक देवे में कुछ ना देखल जाय।

तहमीना आइल बिया तकलीफ सुनके। एक दिन किताबन के हवाले से समुझावे के कोसिस कइल क ऊ अपना दुलहा भाईजान माने हमरा मरद के ! बाकी बदजात के ओकरो पर बुरा नीयत बा। हम बात में इस्लाम के नजीर दीं आ भुला जाई कि मजहब में नीयतो के बड़ा अहमियत बा। असल मनसा देखल जाई कयामत के दिन कि मजहब का बहाना से कुछ करे के पीछे बन्दा के नीयत का रहे?

जब तहमीना अपना उमिर के हिसाब से ओकर बेटी दाखिल बतवलस त फेर मोहम्मद साहब के सबसे छोट बीबी 'आयसा' के मिसाल देवे लागल जे उनका दोस्त के बेटी रहस आ उनका से निकाह मात्र नवे साल के उमिर में हो गइल रहे।

तहमीना जब 'बाजार' फिल्म देखे के हिदायत देलस, जवन हैदराबाद के साँच घटना पर बनल बिया। एगो अरब के तेलवाला सेठ के ऐश–आराम का नीयत से होटल में ठहर के कवनो गरीब के बारहसाला बेटी से 'दैनमोहर' का रूप में मोट पइसा देके एके साथे निकाहनामा आ तलाकनामा पर दस्तखत। बाकी पहिलकिए रात रेप के जइसन नजारा!.... सेठ पर पुलिस–केस दायर भइल।...

त शौहर मियां के तपाका जवाब रहे– 'बाकी भइल का!' कुछुओ ना! सेठ के चुपचाप भगा दिआइल, काहे कि मामला मुसलमानी रहे। सफर में अइसन शादी जेके 'मुताह मैरेज' कहल जाला, इस्लाम का नजरिया में जायज बा।

मकान–मालकिन साथे त ऊ जाने का–का करबे करेला, तहमीनों साथे एक दिन खाली कहके हद से जादे बदतमीजी करे के चहलस। हम रोकलीं त भरहीक पिटलस हमरा के। आस–पास के लोगो के एकतरफा फैसला रहे कि मियां के हुकुम मानल बीबी के फरज बनेला। बात ना मनला पर बीबी के पिटाई कइल शौहर के हक बा।

एक दिन त मकान–मालकिन का सामनही बाँझ कह के हमरा के नंगा करे लागल। मना कइला पर फेर एगो मजहबी मिसाल कि जो मियां के मन आ जाये त ऊँटों पर बीबी के तइयार रहे के चाहीं।

तहमीना के वापस भेज देले बानीं। पहुँचला के खबर बतावत नइखे दहीजरा! फोन लुकवले चलेला।

फिरोज–

जब अपना एगो इंजीनियर दोस्त तिवारी साथे बम्बे के लोकल ट्रेन से 'ग्रांट रोड रेलवे स्टेशन' पर उतर के बुढ़वा कुली से 'कमाठीपुरा' के रास्ता पूछलीं त पहिले त ऊ चँउकल। फेर भर हीक हमनी के निहरलस, नाँव–गाँव–पेशा पुछलस आ जब ओकरा विश्वास हो गइल कि हमनी शरीफ बानीं, नीयत खाम नइखे त कहलस– 'हेह गली से आधा किलोमीटर।' जाय के वजह डिपार्टमेंट के काम बतवले रहीं।

सचहूँ थोड़के पैदल चल के जल्दीए पहुँच गइलीं। हर रूप, रंग आ उमिर के औरत दरवाजा, दोकान आ खम्भा तर खड़ा रहस। ऊ गाँहकन के इशारो करस।

हम तिवारी के खोदत कहलीं– 'पंडित जी! आज लागता जनेऊ नीलाम हो जाई! चलऽ! सामने

मस्जिद बा, उहँहीं चलतानीं।' तिवारी चिहात बोलल– 'पहिले त रंडी–बाजार ले अइले आ अब मस्जिद में जाये के बात?'

'काहे ना! नाश आ निर्माण दूनों साथे–साथे चलेला।' हमनी कहत मस्जिद कावर बढ़ गइलीं।

मस्जिद में एगो औरत बुरका में खड़ा रहे। अदब का साथे ओकरा के झुक के सलाम कइला आ अपना के पत्रकार बतवला पर ऊ फूट पड़ल– 'कमाठीपुरा में सोरह गली बिया। सब गली में धंधा होले। ई गली सब नार्थबुक गार्डन, वेलोसिस रोड आ फॉकलैंड पहुँच के गायब हो जाली। आगे के बात इहाँ का!... अल्लाह के दरबार में त हरगिज ना। नार्थबुक गार्डन चलऽ! नारियल–पानी पिआवऽ! कुछ खरच–वरच करऽ, त बाकी दास्तान उहँहीं सुनाएब।'

ऊ बुरका उलट चुकल रहे। उमिर में अघरे रहे। डारु, थम्सअप आ सिगरेट देला के बाद ऊ धंधा के तौर–तरीका पर धीरे–धीरे रोशनी डाले लागल। नाम अपना 'सलमा' बतवलस बाकी जोड़ देलस कि इहाँ केहू के नाम, जात आ धरम असली ना होला। कहे लागल– 'बड़ा लफड़ा बा। पुलिस, नेता, बिल्डर सबके सब रोटी का साथे बोटी के मुखायेज होलन। एतना सहेला पड़ेला रंडियन के!'

'इहाँ तीन तरह से धंधा चलेला।'

'तीन तरह से?' हमरा अचरज भइल बाकी ऊ कहत गइल।

'हँ, तीन तरह से औरत बिकाली इहाँ! एक, त सीधे गाँहक से बात क के धंधा करेली। इनका देखनउक भइल, हाव–भाव आ नखरा जानल जरूरी बा, तबे गाँहक फँसिहन। एक गाँहक निबटवला पर थोड़े देर दम लेली, साफ–सफाई करली। तबो दिन–भर में सात–आठ मरदन से त इनका फारिग होखहीं के पड़ेला।'

दोसर, औरत पिंजरा अइसन घर में एगो घरवाली मौसी का रखवाली में धंधा करेली। पलंग, प्लास्टर झड़ल देवार इनकर बेडखम होले। इनका के, पइसा लेके मौसी बाहरो सप्लाई करेली। गुरूदत्त के 'प्यासा', महेश भट्ट के 'सड़क' आ करीना कपूर के 'तलाश' में अइसने वेश्या बाड़ी। बीना मलिक अपना एगो फिलिम के परमोशन में हाले में इहाँ आइल रहलीहऽ। कंडोम बँटली। उनका फिलिम के नाम रहे – 'जिंदगी फिफ्टी–फिफ्टी'।

हमार आपन अधूरा प्यार दिमाग में जोर–जोर से दस्तक देवे लागल रहे। तिवारी के जिज्ञासा बढ़त जात रहे। ऊ पुछलन– 'तिसरकी औरत?'

''तिसरकी ऊ हइसऽ जेकर गाँहक ओकर बाप, माई, भाई, पति भा देवर खोज के ले आवेलन। अइसन घर में एके–दू औरते ई कारबार करेली बाकी बेमारी भा माहवारी का हालत में दोसरो के करेके पड़ेला, ना त चुल्हा कइसे जरी?'

बारह से बाइस तक के छोकड़ी के बाजार में ऊँचा दाम बा। तीस के होते–होते देह ढले लागेले। ग्राहक कम हो जालन। एह से चालाक औरत चार–छव छइकियन के जोगाड़ कके खुदे मौसी भा घरवाली बन जाली।

लइकी भइला पर इहाँ उत्सव मनावल जाला। घरवाली ओके 'फूल' कहेली।...''

तले एगो दोसर औरत आ गइल रहे। ऊ आपन नाम गोमती बतवलस। पाँच साल पहिले ऊ दिल्ली से इहाँ ले आवल गइल रहे। सोरह बरिस उमिर रहे तब। दलाल एकइस हजार में एगो मौसी से बेच देले रहे। अब त ऊ खुदो मौसी बने के सोचताड़ी।

सलमा गाभी मरलस – 'इहाँ हिजड़ा आ लौंडो आपन कारबार करेलन।'

तिवारी जाने चाहत रहस कि – 'का इहाँ से निकल के कवनो दोसर धंधा ना कइल जा सके?'

गोमती बतवली – 'बाहर कवनो धंधा में हमनी के नरम चारा समुझल जाला। गाँहकन के हर हालत में देहो चाहीं। एह दलदल से मुक्ति त बस मउअते दीही। गरीबी आ बेमारी दू चीज के खान बा इहाँ।'

हमरा कठमुरकी मरले रहे। गोमती के चेहरा में हम बार–बार अपना तहमीना के तलाश करीं। उमिर आ समय मिलत रहे बाकी पनरह बरिस पहिले के देखल चेहरा आज सवालिया निशान पैदा करे। नाम आ मजहब अलग आड़े आवत रहे। सलमा से हम कह ना सकत रहीं। लगभग तीन सौ घर के एह पाँच हजार औरतन में लगभग आधा लइकियन के कहानी तहमीने के कहानी रहे। हम जान–बूझ के बनारसी भाषा बोल के गोमती के जाँचे के चहलीं – 'समय गाड़ी के पहिया हउवै। कब केकर का समय रही केहू ना जानैला।' सलमा हँसे लगली। गोमती के चेहरा देखतीं, एकरा पहिलीं ऊ उनका के आपन बुरका ओढ़ा के मस्जिद का ओर खींच ले गइली...। ■■

कहानी

पवित्रा

■ डा. आशा रानी लाल

आपन भरल-पूरल जिनगी हम गांवें में बितवलीं, बाकी कबो ना जनलीं कि पियार-मुहब्बत का होला, कइसन होला। केकरा से कइल जाला। बस एतने सुनले रहीं कि बड़ा बाउर कहाला, जब कवनो लइकी कवनो लइका से पियार करेले। लइकी के ना कबो कवनो लइका से आंख लड़ावे के चाहीं, ना परेम करके चाहीं। सुच्चा परेम तअ बियाहे के बाद अपना मरद से अपने हो जाला, जवन पति-पत्नी के प्रेम कहाला।

लरिकाई में, प्रेम के एतने हम जानत रहीं आ सुनले रहीं कि प्रेम खाली मरद-मेहरारू के बीचे जनमेला आ पनपेला। बाकी जब सेयान भइनी, पढ़-लिख लिहली, आ एह दुनिया के भर नजर ताके लगलीं तब दोसर-दोसर रूप देखलीं। पहिले के हमार सब जानकारी बालू के भीत बन गइल, आ ऊ पूरा के पूरा के पूरा एक हरका लगले से भहरा गइल। देखलीं कि ई पूरा दुनिया जहान त प्रेम करेला त भगवान भगत से। माई-बाप, बाल-बच्चा, भाई-बहिन, दादा-दादी सब एक दूसरा से प्रेमे न करेला। इहे ना पशु-पंक्षी, चिरई-चुरूंग, सांप-बिच्छू सब एह प्यार के रंग में रंगल रहेला। ई प्यार सब जगह आपन जाल बिछवले बा, बाकी आज ले एकर रंग-रूप केहू समझ नइखे पवले-ईहे अचरज के बात बऋ

जइसे पियार के रंग-रूप ना होला, ओसहीं एकर बोलियो भाषा केहू ना जानेला। लागेला कि प्रेम गूंग होला। जब प्रेम बतियावेला त कबो ओकर न मुंह खुलेला न ओठ हिलेला, एकर बोली त बस एक आंख से निकसेला आ दूसरा आंख में समा जाला। सब सुनले बा कि सीताजी जनक बाटिका में जब राम के ओरी तकली त का भइल-'दीन्हे पलक कपाट सयानी' यानी अपना आंख में ओह राम के बइठा के पलक बंद कइलेली। आंख के राहे ऊ रूप उनका हृदय में समा गइल आ फिर कबो निकलल ना। ई रहे प्रेम। जब सीता बन में जात रही तब गांव के किशोरी लोग उनसे पूछल कि एह दुनू राजकुमार में से राउर के हउवन-तबो सीता तिरछी नैन करके आ इशारा से बताके, मुस्कुरा के चल देहली। बिना आवाज सुनले गंवई किशोरी लोग सब बूझ गइल। एही से बुझाता कि प्रेम क रूप त नाहिए होला। बोलियो ना होला।

ई सही बा कि प्रेम खाली इशारा से हो जाला, इशारा के प्रेम से बड़ा गुढ़ आ गाढ़ी दोस्ती बा- कवनो प्रेमी-प्रेमिका क यारी के बीच में गुलाब बन के ईखिल जाता आ हंसे-बिहंसे लागता। जब से ई प्रेम गुलाब के फूल कअ रूप धर लिहलस तबसे ई एगो खेलवना बन गइल बा-काहे कि सब एगो फूल देखा के कहता कि-'आई लभ यू' !

देखीं न राधा त एगो सच्ची प्रेमिका भर रही, बाकी अपना एह प्रेम के देखावे खातिर कबो गुलाब के फूल उनका हाथ में ना लउकल। हमार बाबूजी एगो करिया कुकुर रखले रहन, ओके ऊ बहुते दुलारत रहन। कुकुरा उन्हीं के साथे-साथे रहतो रहे। जब बाबूजी खाना खाके उठत रहन तब कुकुरा के कवरा दीहल ऊ कबो ना भुलात रहन। राती खानी कुकुरा बाबूजी के पलंगरीए के लगहीं सुततो रहे। बाकी ओह दिने जब बाबूजी के अरथी उठल त ऊ कुकुरो उनका साथे-साथे गांव के सरेह ले गइल रहे, काहे कि गांववाला लोग ओके आगे ना जाये दीहल आ मार के भगा दीहल। कुकुरा लवट आइल, ओ बाबूजी के पलंगरीए के लगे सुत रहल। सात-आठ दिन ले बे खइले-पियले ऊ उहें परल रहे, फेरू एक दिन उहें चल देलस जहां बाबूजी गइल रहलन। कुत्ता के एह लगाव आ प्रेम गांव-घर के लोग अपना आंसू भरल आंखी से देखल, सांचो एह प्रेम क कवनो रंग-रूप आ बोली ना होला।

अपना जवानी के दिन में हम कुत्तवा क प्रेम त देखलीं जनलीं आ बुझलीं बाकी चउथापन में पहुंचत-पहुंचत एगो अउरी रूप देखे के मिलल। एह पियार के बस हम अपना काने से सुनलीं आ मने-मने बुझलीं किना इहो ना बता पाइब। ई प्रेम अइसन अजूबा रहे जन एह धरती पर कबो-कबो आ कहिंए-कहिंए उगेला।

शीला आज गंगा नहा के लवटल रही आ थक-हार के थहरा के अबहिंए बइठले रही। ऊ देहें से ना अपना मनो से बहुत थाक गइल रही कातिक के महिना में हमहूं गंगा नहाइए के ऊहां पहुंचलीं। सोचलीं कि जब बनारस नहाए आइले बानी तब शीला से काहे ना भेंट कर लीं। बहिन-बहिन क भेंट त बड़ा भागे संयोगे से न होला। भेंट-अकवार भइला के बाद हम शीला के मुंह लगलीं निहारे, जवन बियाहे के तीस बरीस बाद सुरेश के ना रहला से सून भ गइल रहे। हं सुरेश एह दुनिया से अपना जाए के पहिलहीं शीला के दूगो बाइस आ चउबीस बरीस के लायक लाल दे देले रहन, जेकरा सहारे शीला ओही बनारस में आ ओही घर में अब्बो रहत रही।

थोरही देर बाद शीला लगली हमसे आपना बीतल जिनगी के सब बात धीरे-धीरे बतावे। कहली कि आज बड़ा अच्छा मौका से तूं हमसे भेंटइलू ह। अब हमे तूं ही सम्हारआ हमरा एह छटपटाते मन के सहारा द। जब ऊ जीयत रहन तब हमरा कुछु गिआन ना भइल। एह बनारस में एगो फैक्ट्री में ऊ हेड मिस्त्री के काम करत रहन ई बात त तूं

जनते बाड़ू। कई जगह से निकल नोकरी खातिर इनकर बोलावा आवत रहे, बाकी कहं कि ऊ कबो एह फैक्ट्री के आ बनारस के छोड़िहन ना।

ए दीदी मरद-मेहरारू त आपुस में बहुते नीक-बाउर बात बतियावते रहेला। एही बतियावे के बीचे ऊ हमके एक दिन अपना बारे में बतवले रहन कि पढ़े में ऊ बहुते तेज पढ़वइया रहन। लरिकाइए में महतारी-बाप इनकर साथ छोड़ देलस, बाकी उनकर गरीबी कबो उनके ना छोड़लस। लागत रहे एह गरीबी के उनसे प्यार हो गइल रहे, एही से ऊ हरदम उनसे सटल रहत रहे। इसकूल में त जात रहन बाकी नीक कपड़ा-लत्ता ना रहे से अपना क्लास में सबसे पीछे के बेंच पर बइठत रहन। क्लास में एगो पवित्रा नांव के लइकी पढ़त रही। ऊ लइकी बड़ा धनी माई-बाप के बेटी रही, बाकी उनकर मन पढ़ाई में ना लागत रहे। अपना पढ़ाई खातिर पवित्रा के एगो सहारा चाहत रहे। इनकरा पढ़ाई के देख के आ इनका गरीबी के पहचान के पवित्रा इनका लगे अइली आ इनसे अपना कापी के सब नोट लिखवावे लगली ई अपनो कापी कापी लिखस आ उनकरो पढ़ाई के सब काम करस। बदला में चुप्पे-चुप्पे पवित्रा कुछ रूपिया-पइसा आ कलम-कापी, किताब इनके दीहल करस, जेके कहू जानत ना रहे। अपना पढ़ाई में इनके सबसे ढेर नम्बर मिले त पवित्रा खाली पास हो जात रही। ओही से उनकर माइ-बाबूजी लोग उनसे खुश रहत रहे। कई साल ले एह दुनूजना के पढ़ाई बहुत अच्छा से चलत रहे, बाकी एह पढ़ाई के राज कहू जानत ना रहे। पढ़ाइए के चलते ई दुनूजना के लगाव एक दूसरा से बहुते गाढ़ा हो गइल रहे।

जानतानी दीदी जब सुरेश हमके ई बात बतवले रहन तब हम चुकलीं ना। इनका लगाव के बात के सुनते हम ताड़ गइलीं आ झट से पूछ बइठलीं कि काहे न ओकरे से आपन बियाह क ले लन? फेरू त ऊ कुछु बोललन ना आ एकदमे चुपा गइलन। तबो कुछ देर बाद हमरा बहुत कुरुदला पर बतवलन कि ऊ पवित्रा रही, आजो पवित्रा बाड़ी आ आगहूं पवित्रा रहिहन। हमनी के लगाव एक दूसरा से खाली एगो धनी आ गरीब के लगाव पढ़ाई के चलते भइल रहे। हमार लगाव गंगा के धार नीयर बहत रहे, जवन कबो रूकल ना आ न रूकी। बियाह एह धार के बीचे पत्थे चाहे चट्टान बनके एकर अड़चन ना बन सकत रहे।

दीदी ऊ अइसन बहुत बात हमके समझवलन बाकी हमे कुछ बुझाइल ना। हं इ बात कहलन कि बस एतने तोहसे बिनती करतानी कि हमके तूं बनारस छोड़े खातिर कबो कहिह S मत। बनारस में हमार प्यार रहेला। इहे हमरा मन रमेला।

ओ घरी हमरा कुछ ना बुझाइल। हमरा मन में बहुत उहापोह मचल रहत रहे कि ई के बा आ कहां बा कि हमरा करेजा पर दाल दर रहल बा। सुरेश के ई कइसन पियार बा, जवन एहिजा रहेला आ ओके हम एकदमे नइखी जानत।

जानतानी दीदी एही बीचे हमार दुरदिन आ टपकल कि एगो ट्रक से ई टकरा गइलन आ अस्पताल में भर्ती हो गइलन। सतरह दिन में इनकरा खटिया लगे रहिके हम इनकर सेवा कइलीं। सब दवा-बीरो भइल बाकी हालत सुधरल ना। तब एक रात के अपन खराब हालत जान के ऊ कहलन कि अब हमरा जाए के दिन आ समय आ गइल बा। शीला-तू हमरा प्यार के जानल चाहत रहलू न। पवित्रा के बियाह हमरा फैक्ट्री के मालिक से भइल बा। ऊ इहे बनारसे में रहेली। जब कबो घरे लवअत घड़ी हम मालिक के बंगला ओरी से होके आवत रहीं तब हरदम त ना बाकी कबो-कबो ऊ हमके लउक जात रही। जहिया-जहिया ऊ हमके लउक जात रही, तहिया-तहिया घरे ओके हम राती खानी उनका बारे में अपना मन के डायरी में कुछ लिखत रहीं जवन पन्ना पर उतर जात रहे। उहे पन्नावाली डायरी हमरा बक्सा में कपड़ा के नीचे धइल बा। हमरा पियार के ऊ थाती ह। अब हम अपन थाती के तोहरा लगे छोड़ के जा रहल बानी। हमरा प्यार के तूं जतन से रखिह S । केहू के देखइह मत। दीदी एतने त कहलन आ आपन आंख मूंद लेलन।

उनका पियार क ऊ थाती हमरा उपर बड़ा भारी हो गइल रहल ह S- ए दीदी। अपना जान के पीछे आज ले ओके हम धरत रहीं, बाकी जब एह भार के हम ना ढो पवलीं हं त आज ओह से छुटकारा पावे खातिर गंगा माई आ गइलीं। अपना अंचरा में ओह पियार के लुकवा के ले-ले गइल रहनी हा।।

ए दीदी धीरे-धीरे गंगा माई से उनकर सब बात अबे बयावते रहीं कि जोर से उछरत कूदत लहर हमरा आंचल लगे आ गइल आ हमरा हाथ से डायरी के छीन ले गइल। हम त गंगा माई के ई लीला देखते रह गइलीं, फेरू मने-मने संतोष क लेलीं कि हमहूं त ओह प्रेम के संउपे इहवां आइल रहीं।

जानतानी दीदी- एक दिन राती के एकांत में ओह डायरी के खोल के हम देखलीं। त ओकरा हर पन्ना पर एगो टेढ़-मेढ़ कवनो लइकी के चित्र बनल रहे आ भर पन्ना बीसो बेर बस एके वाक्य लिखल रहे कि.... तुम मेरी जिंदगी हो.....। दूसरा पन्ना में... तुम मेरी प्रेरणा हो। तिसरा में... तुम गरीबों के मसीहा हो...। चउथा में तुम देवी हो...., पांचवा पन्ना में तुम मेरी श्रद्धा हो...। अब केतना बताईं? एह तरह के बहुत बात से डायरी भरल रहे। पढ़े के त हम पूरा डायरी पढ़लीं बाकी तबो हमरा न त कुछु भेंटाइल, न कुछु बुझाइल। जिनगी में कइगो प्यार आ लगाव हम देखलें सुनलें रहीं बाकी अइसन पियार कबो ना सुनलीं ना जनलीं!

■ शशि प्रेमदेव के छव गो ग़ज़ल

(एक)

कतनो केहू गाल बजावे !
ग़ज़ल कहे सबका ना आवे!

झाँवा मतिन हथेली जेकर
नरम फूल के मत सुहरावे!

अइसन लिखले का फैदा कि
अच्छर-अच्छर मूँह बिरावे!

अउर छोट लउके जे, खुद के
खींच-तानि के ब'ड़ देखावे!

हमहीं काहें बनीं बेजइहाँ
हमहूँ चललीं लोर बहावे!

(दू)

बान छूटी ना गँवारे कऽ, फलाने!
जिनू करऽ कोशिश सुधारे कऽ, फलाने!

राज बा जहिया ले उरुवन कऽ इहाँ
का बिगड़बऽ तूँ अन्हारे कऽ, फलाने?

गिर गइल सीजन के तरकारी मतिन
भाव अब अन्ना हजारे कऽ, फलाने!

नाम तऽ उनकर हवै रहमत मियाँ
काम बाकिर पेट फारे कऽ, फलाने!

मिल गइल बर जोग बिटिया के 'शशी'
कम भइल बोझा कपारे कऽ, फलाने!

(तीन)

केहू तइयार नइखे नेंइ कऽ पत्थर बने खातिर!
सभे छपिटा रहल बाटे इहाँ रहबर बने खातिर!

गरल के कंठ में धारण करे कऽ लूर सीखऽ तूँ
हुनर बाटे जरूरी ई बहुत शंकर बने खातिर!

सियासी काग एगो दूध कऽ दरिआव खोजत बा
इ ओकर आखिरी कोसिस हवै उज्जर बने खातिर!

लिखा के भागि आइल बा सभे भगवान का घर से
केहू गोजर बने खातिर, केहू अजगर बने खातिर!

'शशी' का गाँव कऽ बबुआन, का लड़िका मजूरे कऽ
उदासल बा सभे परदेस में चाकर बने खातिर!

(चार)

मोथा के का खाक बिगारी?
आन्ही पीपर, बर उखारी!

घर में सूघर बेटी, मतलब
साँसत में पितिया-महतारी!

आँगन से बरियात ना लउकी
छत पर गइले लोग निहारी!

जंगल में उत्पात मचावे
देखऽ, चलल शहर से आरी!

दुनिया 'संत शिरोमणि' बूझे
बबवा नमरी 'रास बिहारी'!

मनई का रोवले-छपिटइले
मउवत आपन डेट न टारी!

(पाँच)
कील, हँसुली न हार का पाछा!
नीन उड़सल इयार का पाछा!

बैर सज्जी शहर से ले लिहलसि
प्रीत, एगो गँवार का पाछा!

जान लिहलस बनूखि कऽ गोली
भीड़ लपकल कटार का पाछा!

बास कुक्कुर का फेर में दूबर
मेमसाहब बिलार का पाछा!

मारि के लात, गाँव के, भागल
लोग 'दुबई'-पगार का पाछा!

(छव)
लड़िकाईं कऽ हँसी खरीदल चाहत बा!
पइसा से, ऊ खुशी खरीदल चाहत बा!

बँगला, गाड़ी, सोना-कूल्हि जुटा लिहलस
अब इन्नर के परी खरीदल चाहत बा!

बेंचि-बेंचि के लोग उदासी कऽ परती
मुट्ठी-भर 'हरियरी' खरीदल चाहत बा!

भादो के घनघोर अन्हरिया में केहू
सूरुज कऽ रोशनी खरीदल चाहत बा!

प्यार-मुहब्बत, अमन-चैन, भाई चारा
देखऽ, का-का 'शशी' खरीदल चाहत बा! ■■

■ आसिफ रोहतासवी के दू गो गजल

(एक)
डेग उनका दुआरे धरल जाव तऽ
पाँव पर आज उनका परल जाव तऽ

फिर नया साँस पाइब, नया जिन्दगी
एक बेर उनकरा प' मरल जाव तऽ

केहु खाई त अपनो जुड़ा जाई मन
आम-अस खूब लदरल-फरल जाव तऽ

यार, दुसरा के अथजल निहारे के ना
पहिले अपने गगरिया भरल जाव तऽ

अपनो हियरा के टभकन जरूरे थमी
पीर दुसरो के 'आसिफ' हरल जाव तऽ

(दू)
काल्हु हलकान रहुवीं जुटावे बदे
आज बेचैन बा मन लुटावे बदे

ठेस लागल, त ऊपर से लातो परल
केहु दहिगर न आइल उठावे बदे

मुँह फुलाई त अब केकरा पर भला
जानऽतानी, न आइब मनावे बदे

दुश्मनिये सही, आ न जाई कबो
आग पानी में फिर से लगावे बदे

आँख के का भरोसा, खुलल, ना खुलल
लाख 'आसिफ' के आइब जगावे बदे ■■

सब में साँस बाऽ

■ डॉ. जनार्दन राय

धुँवा, धूर अउर आग लेखा धधकत गाँव में छनो भर रहे के मन नइखे करत। कहवाँ जाइल जाय। सिवान सदेहे लहकत बा। लोग फेंड़–रुख कसाई लेखा अनाधुन काट रहल बाड़न। कुँआ पाटि के, जलकल से मन माफिक पानी निकासल एकदम आसान बा, ओकर उपयोगो सिरिफ अपने खातिर। कतहीं ताल आ गड़हा–गड़ही बा त भरि के महल बनावे के परिपाटी बन गइल बा। गरीब छछनत बा। का कइल जाय, का कहल जाय किछु बुझात नइखे। विकास का नाव पर इंसान किछऊ करे के आमादा बा जवना के कवनो ओर छोर नइखे।

जीव छोड़ा के, शहर में पहुँचलो जाय त उहँवों ईंटा, पत्थल, बालू, सिरमिट, कंकरिट से पाटल सड़क, गली–कूँचा एकदम दहकत बिये। लोहा, ललकार के माथे पर चढ़ल बा। ताल–तलइया, रुख–बिरिछ आ हरियरी त कतहीं लउकते नइखे। विशाल मकान त इहाँ निक लगते बाड़न सऽ बाकिर सांझि खाने भीतर का गरम हवा से परेशान इंसान एह कदर बिलबिलात बा जइसे भरसाँय में अँउसाइल कवनो अनोखा जीव। साँस लेबे आ जुड़ाये बदे पीपर, बर, पाकड़, नीमि के छाँह सपना हो गइल। गाँव–नगर समान। सगरो लागल आग। कतहीं–कतहीं पार्क अथवा छूटल–छटकल जमीन जरूर बा बाकिर गंदगी के कवनो सौंवा–सुधि नइखे। फूटल सीसा, प्लास्टिक के अनघा थइला–थइली, चप्पल–जूता–जूती, कूड़ा–कचरा के ऊँचा–ऊँचा ढेर खड़ा बा, जइसे छोट–मोट पहाड़। का देहात, का शहर पगे–पगे परेशानी बा। अदिमी मशीन लेखा पहर–दू–पहर एडजस्ट होके दिन, गुजारत बा। धरम का नाव पर धरमधक्का। धरमधुजियन का मारे, करेजा काँपि जात बा। मरद–मेहरारुन क ठेलमठेला। तांत्रिकन क चानी। लइकन क हलचल अलगे। ठकचल भीड़ में सुस्ताये के मन त खूब करत बा बाकिर गोड़ रुके के नाव नइखे लेत। ठहरबो करी त कहँवा ? ठाँव हइये नइखे। आखिर का कहल जाय। एगो कवनो अइसन जीवंत सवाल नइखे जवना के हल क के गर छोड़ा लेईं जा। इहँवा त सवालन क अम्बार बा। पिण्ड छोड़ा के भागलो कवनो आसान नइखे। विचार करीं त एक से एक दुरन्त सवाल मुँह बवले बाड़न स, जवना में किछु त साफे झलकत बाड़न स जइसे बेटा–बाप बाबा सङहीं दारू पी के बमबमात बाड़न। के बोली, का कही, का करी? बोलियो दे त लउरा–लउरी करे के परी, आ नाहीं त, झोंटा–झोंटी त होके रही। इहे ना, बेकार लइकन क जमात अपना में हइये नइखे। घर के न घाट के। बाकिर एह लोगन का अउँजाये के ना चाहीं। काहें कि, पढ़ुवन के भागि पतई का नीचे चँताइल रहेले। तनिको भर हवा झुरूकी बस पतई उड़िया जाई, भागि परछिन।

बाजारवाद अउर उदारीकरण का नाम पर जवन तिलस्मी खेल खेलल जा रहल बे, ओसे एह पीढ़ी के दुर्दशा–दुरुगति कहात नइखे। हँ त भयवा ! शिक्षा का पीछे अशिक्षा के फइलाव जवना गति से फफनल बा ओकर कवनो इन्तिहा नइखे। भाषा, संस्कृति, संस्कार, क तेजी से अवमूल्यन चिन्ता के विषय बा। पश्चिमीकरण का प्रभाव से बूढ–ठेढ़ अऊँजाये लागल बाड़न। जवान जूझत बाड़न बाकिर–धनाभाव आ साधन–सुविधा का अभाव में, तड़फड़ा के गिर जात बाड़न। कसमकस इन्तिहा का दरमियान कसेला झेलत नवकी पीढ़ी अफना गइल बिये। एने शहरीकरण क प्रभाव जोर लगवले बा, ओने अभाव गरेसले बाऽ। किशोर आ जवान हो रहल रेखिया–उठान पीढ़ी भविष्य के मुट्ठी में लेबे खातिर बेताब। बाकिर प्रौढ़ मलिकार लोग, फिहफिहिया बूढ़न का सँङे, ताल–मेल बना के जिये–जियावे के जोगाड़ में जद्दोजहद कर रहल बाड़न। एह स्थिति–परिस्थिति में समाज के किछु नुकसान भलहीं मति होखो बाकिर जवान जवन जलालत झेलत बाड़न स, ओकर कवनो पुरसाहाल नइखे। शिक्षा का नाम पर मुदर्रिश, सुरक्षा का नाम पर पियादा आ रहनुमाई का बल पर नेता लोग जवन किछु करि रहल बाड़न, ओकर खुलासा त होइबे करी बाकिर किछु देरी बाऽ। दलाल बनल वैद लोग, दवाई का नाम पर जनमतुवन के जीव आ धन–शोषण के जवन नाधा नवधले बाड़न जा ओकर अंजाम का होई, ई त भविष्य का पेट में बा बाकिर ईहो याद राखे के चाहीं कि जे जनम देले बा परान उहे लेई। बाकिर पइसा जोगाड़ में बेटिन का शरीर पर छुरी चलावत बाड़न जा, ओकर खामियाजा त भोगहीं के परी। लइकिन का विषय में कहला–बिना, मन लुलुवात बा एसे किछु दोहासल जरूरी बा, नाहीं त राति में, अनगिन भूत छाती पर चढ़ि के पसली तूर दिहें सऽ। हँ त, बकटेकी ई बा कि, बेटी–बहू तनी धीर धइ के जहर से, नशाखोरी से बचाइ के अपना के सहेजले रहसु, नाहीं त बाप–मतारी, सासु–ससुर दूनों घर संइठा जाई। सीमा त दूर, घरवे में आग लागल बाऽ। राष्ट्रीयता के आड़ में, सुरक्षा का बहाने जवन–तस्करी हो, रहल बा, केतना खतरनाक खेल बा एके के समुझाई? घुसपैठ कइसे रुकी? आतंक–अपराध के केवल कचहरी कइसे झेल पाई, गलती–सही के पहचान कइसे होई? के तरी एकरा तह में उतरे के परी। चीनी में चोकर दूध में पाती आटा में भाठा, सिमेण्ट में बालू, दवाई में दलाली आ मिलावट कइसे रुकी? शिक्षा, स्वास्थ्य–चिकित्सा, के लेके जवन चिल्पों मचल बा, ओकर कवनो इन्तिहां नइखे बाकिर व्यवस्था का लेहाज से तनिकी भर लगाम कसा जाई त सवाल के जबाब आ शंका के समाधान अइसहीं हो जाई। टीसन का इर्द–गिर्द प्लेट–फार्म पर जवन दलाल टिकस–बेंचि रहल बाड़न स, एके का आप नइखीं जानत? बाकिर पता ना कवन–टोनहिन टिटिकार देले बे,

जवना से रेल में अनावश्यक रेला–रेली, पटरियन के तोड़–फोड़ लगले रहत बाऽ। बेशक, किछु बाहरी आतंकी बाड़न सऽ बाकिर ढेर घरफोरवा बाड़न स, एपर विचार करे के चाहीं। छोट मोट घर–खायन, उजारन लोगन क राह पर चलल बहुत जरूरी बा, नाहीं त कुदरत का लाठी में आवाज ना होले। चोट परी दाँत चियरा जाई। इयाद राखीं कुल्हि निमने होई बाकिर जवना खातिर मये उधातम बा, सगरे जुटान–जुटाव बा, उहे तवां जाई। सांच बा जे नइखे रहेके। जहीं के बाऽ। त का? अबेसे थउस जाये के? नाहीं। जे जनमल बा, मरी बाकिर संसार रही। इंसानियत रहीं। परंपरा चलत रही। जवन समाज गाँव–शहर आ इंसानियत खातिर शिवंकर बा, ऊहे करीं जा। ओह राह पर चलीं जा, आ धरती का कोंख में अथवा ऊपर, नीचे किछु लउकत बा, बुझात बा, सुझात बा ओकरा खातिर दू–कदम चलीं जा, सपरे तवन करीं जा। जवना जल से पिण्ड के सरजना भइल बा, ओह जल का साथे–साथ शिव खातिर जियल जरूरी बा। विवेकी हईं जा। एसे जड़–चेतन, जीव–जंतु, राष्ट्र–राष्ट्रीयता, जंगल–जमीन सबके बचाईं जा, सबमें सांस बाऽ। एही से आस बाऽ। ■■

लघु-कथा

काशी में मोक्ष

■ विनोद द्विवेदी

बुकस्टाल प 'मोक्ष की प्राप्ति' नाँव क किताब भेंटाइल त हमरा ओके पढ़े क जिज्ञासा जागल। हम किताब कीन के पढ़े लगलीं। ओम्मे लिखल रहे कि कुछ अइसन तीर्थस्थान आ सिद्ध जगह बा, जहाँ निवास करे वाला के मुवला का बाद बेमेहनते मोक्ष मिल जाला। काशी ओमे सर्वोपरि रहे। हमार आधा ले बेसिये उमिर बीति चुकल रहे, बाल बच्चा क बोझो ओरिया गइल रहे। सोचलीं कि रिटायरमेन्ट का बाद काहें ना काशिये में बास कइल जाव? मेहरारू से सवचलीं त ऊहो खुस होके हमार समर्थन कइली।

सालन दउर धूपि के काशी में जमीन देखलीं। गंगा का किनारे प्लाट बिकात रहे। हमरा ऊ जगह एसे पसन आइल कि उहाँ से गंगा नहाये के सुबिधा रहे। अस्पताल वगैरह निगिचे रहे आ आवे जाए क सुबिधो रहे। एहर ओहर से इंतजाम क के, लगे क जमा पूँजी जुटाइ के जमीन क सउदा क लिहलीं। फेर धीरे धीरे रहे लायक मकानो बन गइल।

आपन कुल्हि जायदाद बेचि के काशी में रहे के जगह बनवलीं त ओकर सुखो मिले लागल। रोज बसेरे गंगा स्नान आ पूजा से मन चंगा रहे, बाकिर कहल जाला नऽ कि समय आ उमिर हमेशा एक ना रहे त हमरा खातिर कइसे ना बदलित? एक बेर अइसन बेमार परनी कि खटिये ध लिहनी।

ओघरी जब हम अशक्य आ जर्जर रहनी त हमरा सेवा में दिन रात जुटल रहे वाला ऊ यादवे जी रहलन, जवन हमनी के दूध दिहला का अलावा हर मोका–बेमोका सहायता में आगा रहस। डाक्टर, दवा–बीरो आ घर क कूल्हि जिमवारी यादवे अपना कपारे लेले रहलन। हम त होस में ना रहलीं, बाकिर श्रीमती जी हमरा नीक भइला पर बतावस कि ऊ राते दिन उनका लगिये बइठल कुछ ना कुछ सइहारत सहेजत लउकस। इहाँ तक कि ऊ अपने पइसा से दवाइयो ले आवसु।

हम जब स्वस्थ हो चुकल रहनी बाकि यादव जी का जगहा दुसरा दूधवाला के दूध देत उनका बारे में सवचलीं त ऊ बतवलस कि यादवे जी ओके लगा के कवनो नया नोकरी पकड़ लेले रहलन। हमार बूढ़ पत्नी पढ़ल–लिखन ला रहली आ सोझबक अइसन कुछ पुछला प' साफ–सोझ बतइबो ना करसु, चलत–फिरत गेट प बहरा निकलनी त अपना मकान का आगा 'यादव गौशाला' के बोर्ड लागल देख के पुछलीं, 'ई बोर्ड कब आ के लगा दिहल, ई त सीमेन्ट से जमावल बा।' ऊ कहली, "जब रउवा बेमार रहनी ओही घरी यादव जी लगववले रहलन, कहत रहलन कि उनके कवनो 'लोन' लेबे के बा। बाद में हट जाई।"

हम अभी सोच में रहलीं तले एगो वकील दू अदिमी सँगे आइल आ एगो नोटिस थमा दिहलस। ओमे लिखल रहे कि 'नोटिस पवला का तीन महीना का भीतर, ई जगह खाली करे के परी, काहेकि ई जमीन 'गौशाला' के हऽ।'

हम अकबकाइल, पुछलीं कि "अरे भाई, ई हमार जमीन गौशाला के कइसे हो जाई?" ऊ वकील हँसल, 'ई कोर्ट में कहब! फिलहाल ई जमीन यादव जी क हऽ, ई मकान उनहीं के बनावल हऽ। आ रउवा त खुद ई जमीन उनके लिख चुकल बानी। तीन महीना में आपन इन्तजाम क लीं। अइसन ना होखे कि उद्घाटन के पहिले, जबरन रउरा सभ के निकाले के पड़े!"

इ सुनि के हमार तबीयत फेर खराब होखे लागल। अकिल हेराइ गइल। भितरी आके फेरू ओही खटिया पर ढहि गइनी।

'का भइल जी? काहें थहराइ के बइठ गइनी?' पत्नी पूछली – 'लागऽता मोक्ष पावे क समय आ गइल। हमरा मुँह से अतने भर निकलल।' ■■

हस्तक्षेप

'भोजपुरी-हिंदी का भेद से भाषिक निजता के नुकसान'

■ डॉ. रघुवंशमणि पाठक

जइसे परंपरा के पुनर्नवता आधुनिकता के जनम देले ओसहीं जनबोली आधारित लोकभाषा के पुनर्नवता से, भाषा आकार लेले। लोकभाषा में पुनर्नवता साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, प्रशासनिक आदि अनेकन कारण से अंकुरित होले। दुनिया के कवनो खूब लहलहाइल, फरल–फुलाइल आ चाहें साहित्यिक भार से गदराइल भाषा अचानक आसमान से उतरि के ओह स्थिति में ना पहुँचल होई। जरूर ओकरा कवनो ना कवनो जनबोली आ चाहें प्राकृत भाषा के सहारा लेबे के परल होई। भाषा के जनम आ ओकरा विकास के इहे एकमात्र कारण होला। लोकभाषा ओह संघ के अस्मिता के पहचान होले। संघ के सगरे सदस्यन के एक सूत में बान्हे खातिर लोकभाषा मजबूत बंधन मानल जाले। ओकरा संगे–संगे ओह विशेष समूह के प्रतीक आ ओकर रक्षको उहे होले। इहाँ हम फ्रेंच भाषाशास्त्री जो0 बान्द्रियैज के तनिक इयाद कइल चाहऽतानी। उहाँ का लोकभाषा के अध्ययन का क्रम में स्वीकरले बानी कि 'लोकभाषा सूक्ष्म, धारा प्रवाह आ बहुसुलभ प्रयोग भइला के कारण कवनो सामाजिक संघ के सदस्यन का बीच संगति, संज्ञान, आ सहकारिता के साधन होले (भाषा, इति0 की भाषावैज्ञानिक भूमिका, पृ0 235)।' एही से जनबोली आधारित लोकभाषा जब विकास के सम्पूर्ण गति पाइके आसमान छुए लागले तबो अपना संस्कार, मूल संदर्भ आ मूल प्रकृति से भिन्न ना हो पावेले। जइसे कवनो बरगद के पेड़ आपन डाढ़ि दूर ले फइलाइ के आ सोरि दूर ले छितराइ के दुसरो खेतन के रस चूसत रहेला, बाकिर मूल जड़ से अलग ना होला ओसहीं भाषा आकार ग्रहण कइला का बादो, मूल लोकभाषा के संस्कार आ ओकरा संहिता से अलग ना होला भले ओकर विस्तार आ विकास का संगे अन्य बोलियनों से जीवन–सामग्री लेके आपन विकास करत रहेला।

दुनिया के कवनो विकसित भाषा के इतिहास से एह बात के सिद्ध कइल जा सकता। एह प्रसंग में बान्द्रियैज त स्पष्ट घोषणा कइले बाड़न कि अंग्रेजी, जर्मन आ फ्रेंच भाषा आजुओ कुछ हद तक बोलियने का प्रभाव में बाटिन स। यदि प्राचीन भारतीय – 'आर्यभाषाकाल' के साहित्य पर दृष्टिपात कइल जाव त इहे विदित होई कि ओह काल में दुइ तरह के साहित्य रहे – वैदिक भाषा के साहित्य आ लौकिक संस्कृति के साहित्य। दुनो चढ़ल–बढ़ल आ साहित्यिक कमाल से संपन्न। बाकिर वैदिक साहित्य में सामान्य जनभाषा के ठेठ शब्दन के प्रयोग देखि के बड़ा आश्चर्य होला। उदाहरण का तौर पर ऋग्वेद में 'दूलभं' (ऋक् 1/46/4), 'अपगल्भ' (तैतिरिय सं0 213–14) शब्दन के प्रयोग देखल जा सकता। संस्कृत लोकभाषा यानी प्राकृत के शब्दन से सर्वथा मुक्त नइखे। एकरा से इहे निष्कर्ष निकलता कि वैदिक भाषा से पहिले के कवनो लोकभाषा से वैदिक आ लौकिक संस्कृत के विकास भइल। लोकभाषा के प्रयोग के संस्कार से संस्कृत पैदा भइल। संसकृत शब्द के अर्थच्छटा में एकर झलक देखल जा सकता। निःसन्देह जवनी मूल लोकभाषा के प्रभाव से वैदिक आ लौकिक संस्कृत भाषा के विकास भइल ऊ स्रोत आजु ले सूखल ना, बलुक हिंदी सहित आधुनिक आर्यभाषावन के विकास में आजु तक जीवनी शक्ति प्रदान करि रहल बा।

लोकभाषा स्वयंसिद्ध भाषा होले। जवना क्षेत्र में जवन बोलल जाले उहे ओह क्षेत्र के जीवनशैली बनेले। परंपरा ओके पुष्ट करेले। लोक संस्कृति ओके सँवारेले। कला ओकर व्यवहार सहेजेले। हिंदी एगो विकासशील भाषा हवे। ओकर लमहर विस्तार बा। ओकरा विस्तारित क्षेत्र में तनिक नोक–झोंक का संगे सतरह गो बोलियन के अस्तित्व बा। ओह सतरहो के आपन–आपन कई–कइगो स्थानीय बोली बाड़िन। कुल्हि बोलियन के आपन–आपन परंपरागत साहित्य भंडार बा जेवना से हिंदी हमेशा प्रभावित रहल बे। एह क्षेत्र में अइसनो बोली बाड़िन जवन भाषा के उच्च शिखर पाइके समय चक्र में अझुराइके शिथिल हो गइलिन। जवन भी हो, हिंदी क्षेत्र में लोकभाषा के अविरल धार के स्रोत जवन प्रवाहित बा ऊ शाश्वत हवे, आ ऊ अनादिकाल से वैदिक भाषा, संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश के सरणी पर चलि के आजु ले सूखल ना। ओही अमृत धार में भींगि–भींगि के हिंदी पुष्ट भइल बिया। इहे भाषा–बोली के परस्पर निजता के आधार हवे।

1500 ई से 1800 ई0 के बीच हिंदी मूल रूप से चार पाँच बोलियन का प्रभाव में विकसित भइल। अवधी, ब्रज आ खडी बोली के ढेर प्रभाव रहे भोजपुरी, मैथिली के अपेक्षाकृत कम। ओह समय अवधी के तीनगो रूप प्रचलित रहे। पहिलका रूप के निर्माण जायसी, कुतुबन, मंझन, नूरमुहम्मद जइसन सूफी कवियन के काव्य में ठेठ आ मुहावरेदार अवधी का रूप में भइल जवना में अरबी–फारसी के शब्दन के प्रयोग में तनिको संकोच ना रहे। एह प्रयोग का माध्यम से हिंदी में अरबी–फारसी के शब्द ठेठ अवधी के शब्दन का संगे घुल–मिल के हिंदी में समाहित हो गइलन। एकरा संगे मुहावरा के सुष्ठ प्रयोग भी हिंदी के मिलल। एही माध्यम से हिंदी में अरबी–फारसी के कई ध्वनियो भी समाहित हो गइलिन।

अवधी के दुसरका रूप के निर्माण 'पुहुकर', 'दुखहरन' आ गोबर्धनदास जइसन हिन्दू प्रेमाख्यानकार कवि करत रहलन जिनका प्रयोग में अपभ्रंश के क्षीण होत रूप का संगे–संगे संस्कृत के शब्दन के नूतन प्रयोग से नित सार्थक आकार ग्रहण करत रहे। इहो हिंदी के आसानी से भेंटा गइल।

तिसरकी परंपरा में तुलसीदास, अग्रदास, लालदास आदि रामकाव्य के प्रणेता कवि रहलन जे प्रांजलता आ कोमलता से आच्छादित साहित्यिक अवधी के प्रयोग में तत्परतापूर्वक रत रहलन। एह माध्यम से संस्कृत के तत्सम आ तद्भव शब्दन के भंडार हिंदी के मिल गइल आ साथ ही तुलसीदास आ उनुको समकालीन कवियन के धारदार प्रयोग का संगे–संगे अभिव्यक्ति के समर्थ शैली के सरलता एवं तरलतो भी मिलि गइल।

दुसरकी समर्थ क्षेत्रीय बोली का रूप में ब्रज के रेखांकित कइल जरूरी बा जवना के डंका कबो पूरा उत्तर भारत आ कुछ ओकरा से बाहरो बाजि चुकल रहे। ऊ बोली से भाषा के उच्च शिखर पर आसीन भइल आ फेरू सिमटि के बोली बनि गइल। एमें तनिको संदेह के गुंजाइस नइखे कि ब्रज अपना जमाना के परिनिष्ठित आ उच्च कोटि के भाषा रहे। एही से केहु ओकरा के 'भाषामणि' कहल त केहु 'पुरुषोत्तम' भाषा के संज्ञा से अभिहित कइल। ग्रियर्सन ओकरा के आदर्श भाषा कहिके संतोष कइलन। सूरदास आ नन्ददास का संगे अष्टछाप के कवि लोग त अपना ढंग से ब्रजभाषा के विशिष्टता प्रदान कइबे कइलन, रीतिकाल के आचार्य कोटि के कवियो लोग भी अपना ढंग से सँवरलन। ब्रजभाषा के कोमलकान्त पदावली के रसमयता आ सरसता से साराबोर होइके पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात आ बंगाल के कवि लोग अपना क्षेत्रीय विशेषता से ओकरा के खूब अलंकृत कइलन। ई कुल्हि विशेषता हिंदी के अनजाने में मिलि गइल।

तिसरकी प्रमुख बोली का रूप में खड़ी बोली के महत्व सर्वसिद्ध बा। दिल्ली मेरठ आ सहारनपुर के जनपदीय बोली रहे खडीबोली, जवना के कुरू जनपद के लोकभाषा अथवा जनभाषा के नाम से भी अभिहित कइल जाला आ जवना के मिश्रित रूप उत्तर से दक्षिण ले बिखरल रहे, ओही का ढाँचा पर आजु के हिंदी आपन सौंध शिखर बनवलसि। फारसी से प्रभावित ओकर एगो रूप उर्दू कहाये लागल, आ संस्कृत से प्रभावित रूप हिंदी बनि गइल।

इहाँ चौथकी बोली का रूप में भोजपुरी के तनिक पड़ताल जरूरी बा। लोकसाहित्य से समृद्ध लोकभाषा भोजपुरी के आपन एगो काव्य परंपरा रहल बा। कबीर का संगे धरमदास, धरनीदास, शिवनारायण, लक्ष्मी सखी आदि संत कवियन के भाव भरल कविताई भोजपुरी के धरोहर बा। कबीर के भाषा सधुकड़ी कहाले तबो भोजपुरी के ढेर नजदीक बा। धरनीदास के कविताई अवधी–भोजपुरी के संगम से पैदा भइल बा। 'विजयमल' आ 'बनजारवा गीत' भोजपुरी महाकाव्य का रूप में प्रतिष्ठित बा। 'राजा गोविन्द चन्द के गीत', 'राजा गोपीचन्द के गीत' आ उनके पिता 'राजा मानिक चन्द' के गीत के आपन पंरपरा बा। परंपरागत छन्द में लिखल 'सोरठी', 'विजयभान', 'बारहमासा', 'सोहर', 'कजरी', 'चैता', 'फगुआ' आदि के सरस धार से हिंदी सँवरल। एकरा माध्यम से करुणा आ सच्चाई से भरल अभिव्यक्ति के स्वाभाविक प्रवाह हिंदी के मिलल आ आन, मान, शान खातिर कुर्बानी के दम मिलल।

इहाँ एक बात स्पष्ट कइल जरूरी बा। हिंदी क्षेत्र के सगरे लोकभाषावन के विशेषता के धार सहज–स्वाभाविक रूप से हिंदी के मिलत रहल त हिंदी का माध्यम से ई लाभ परस्पर बोलियनों में भाषा आ साहित्य के स्तर पर अन्तःसंबंध स्थापित होत चलि गइल जवना से हिंदी के सगरे बोलियन से आ सगरे बोलियन के आपसो में भाषित निजता मजबूत होत गइल। इहे भोजपुरी सहित हिंदी के अन्य बोलियन में आ हिंदी में स्थापित भाषिक निजता के रहस्य हवे। एही से हिंदी का संगे–संगे ओकरा क्षेत्र में जेतनी लोकभाषा आ चाहें बोली बाटिन सबके विकास खातिर प्रतिबद्ध भइल जरूरी बा। ऋग्वेद एह बाति के समर्थन कइले बा– 'भारतीभिः भारती सजोषा' (ऋक0 7/2/23)' अर्थात क्षेत्रीय भाषावन का संगे–संगे मुख्य भाषा के सेवन करे के चाहीं।

अब तनी हिंदी आ भोजपुरी के आत्म–संघर्ष पर इचिकी भर धियान दिहल जरूरी बा। 'हिंदी' हिंद के संवैधानिक 'राजभाषा' ह त 'भोजपुरी' ओकर सुसमृद्ध लोकभाषा ह। हिंदी देश के संवैधानिक 'राष्ट्रभाषा' बने खातिर संघर्षरत बे त भोजपुरी आठवीं अनुसूची में दाखिल होखे खातिर छटपटा रहल बे। हिंदी एगो जाति ह त भोजपरी हिंदी के उपजाति ह। हिंदी जाति के जीवन शैली ह भोजपुरी। हिंदी के सुभाव, संस्कार आ संघर्ष के कहानी ह भोजपुरी। हिंदी देश के संपर्क भाषा के रूप में स्थापित हो रहल बे त भोजपुरी हिंदी जाति के क्षेत्र विशेष के लोगन के रहन–सहन, आहार–व्यवहार, शील–संकोच, जमीन–जोरू, प्रेम–मुहब्बत, झगड़ा–रगड़ा का संगे–संगे सपना के भाषा बनि स्थापित हो चुकल बे। हिंदी–अन्तर्राष्ट्रीय छितिज पर दस्तक देत विश्व भाषा बने के जय यात्रा पर निकलिके मार्ग में लड़ि रहल बे त भोजपुरी ओकर बल, ताकत आ लाठी बनि के सहयोग करि रहल बे।

हिंदी आ ओकरा लोक भाषावन के बीच अन्तःसंबंध आ भाषिक निजता के अन्तःसलिला पावन गंगा जवन शाश्वत बनि के अनादि काल से प्रवाहित हो रहल बे ऊ सुरक्षित बे ओकर नुकसान ना होई, ओकरा कवनों आँचि ना आई। अगर खतरा बा त दूनो के अस्तित्व के जेवना के हिंदी–भोजपुरी के कुछ अहंकारी साहित्यकार अपना गिरोहबन्दी से करि रहल बाड़न। एसे सावधानी जरूरी बा। उनके बेनकाब कइल जरूरी बा। ■ ■

व्यंग्य कहानी

हिटलरी

■ राजगुप्त

अबे हालही में सुनामी नाव के प्रलय आइल रहल ह। जवना में सबकुछ दहाइल बहाइल । अइसना आफत में सभे लाचार रहे। एक से एक बरियार लाकग अइसना आफत में आपन हथियार डालि दिहले। आंखि के सोझा देखते भर में सबकुछ बिला गइल। होतना बड़ बड़ मकान कागज के नाव लेखा बहा - दहा गइल । टीबी पर इ कुल्हि दुर्दशा देखिके होश उड़ गइल। कहल जाला कि इतिहास अपना के कबो ना कबो कवनो ना कवनो रूप में दोहरावेला । ठीक उहे हालि । 2012 के चुनाव में ओइसने अनहोनी भइल। देखत हई कि शंकर बाबू लंक लगा के अपना साइकिल से भागि रहल बाड़े। कवनो मोटर साइकिल के मशीन त हवे ना। हाड़ मांस के आदमी रहले। केतना पैडिल मरिहें ? सांसि फूल जाइ । थाकि जइहें । भागि के जइहे कहा ? भारी-भारी देहि वाला सिपाही उनका के पोछिया रहल बाड़े। सहर में नौकरी पर जाए आवे के उहे एगो साधन रहे। पुलिस के कहनाम रहे । चुनाव चिन्ह लेके केहू भी खुले आम ना घूमि फिर सकेला। तोपि ढापि के कहि राख द वर्ना जब्त हो जाई आ उपर से मोकदमो होइ। पुलिस उनका के सड़क पर रोकि के समझावत रहले कि गलती करब त बाइसिकिल कुड़ुक हो जाई। चुनाव में अइसन अनेति से कबो कही पाला ना परल रहे। सपनों में हिटलरी राजगुप्त ना सोचले रहलं कि अइसनो फजिहत होई। तोपे लागी त देश के सज्जी कपड़ा ओरा जाई तब्बो ना सायिकल तोपा पाई पुलिस वालन से बतरस अबे होते रहे कि पलखत पाइ के भागि गइलें। पुलिस वाला उनका के पकड़े खातिर उनके पीछे दउड़े लगले । भला साइकिल के चाल में पैदल पीछा कर सकेला ? असेकरा बादो पुलिस वाला उनका के पीठिअलें रहले। सोझा से बैलगाड़ी आवत रहे जवान में दूगो बैल नधाइल रहले स आ गड़िवान अस्थिरहे सडकी पर जात रहे । सवती के कठउती पर दउड़त -भागत पुलिस वाला बैलगाड़ी की लगे रूकि के गड़िवान के उँपटले हे तोरा कुछ बुझात नइखे। चुनाव नधा गइल बा । आ तें सदेहे चुनाव चिंह सभके देखावत प्रचार करताड़े । तोरा देहि में इचको डर नइखे का? कानुन के सोझा बरजोरी करबे ? उतर गाड़ी से गड़ी किनारे करू तोर दुनु बैल जप्त हो जइहे स ।' गाड़ीवान सोचलस कि जे आपन ना भइल उ केतना गोरू बैल के घासि- भुसा खिलाई ? इ त अच्छा तमासा बा एन्हीनी के ? पुलिस के वर्दि आ लाठी के - के मोकबिला करी ? गड़िवान के छठी के दूध इयाद आवे लागल । बेचारा पसेना-पसेना हो गइल। भला। गाड़िवान के नोट पाकिट में चेटिया के आगा बढ़ि गइले । अपना खाकी कपड़ा पर बड़ी गुमान कइले। आपन टिप्पन बरम्हा जी से लिखवा के आइल बानी जा । बड़ी भाग से खाकी वर्दी मिलेला। सरकार समुन्दरो मे लहर गिने के लगा दी उपरी कमाई कहीं बांव ना जाई जियतो खा मुअतो खा । जेतने कानून बनी ओतने पाकिट पूठ हो रही। आगा बढ़ते दूनो पुलिस के एगो पलानी में चाय के दोकान लदकल। ढूकि गइल लोग दोकान में। उनका के कहल लोग चूल्हा पर चाय के केतली चुनाव चिन्ह के परचार करताड़े आ दोयम हे उमेदवार के फोटो टंगले बाड़े ? काहे अपना बाल बच्चा पर आफत बोलाव ताड़े ? पुलिस वालन के डाँट सुनि दोकानदार सकाइ गइल। हाथ जोडि बोलल ! सरकार एही दोकान से हमार बाल बच्चा पोसाले। रउरा बाउर बुझाता त खउलला के बाद उतारि लेत बानी। दोहरउवा ना चढाइब है आ दोसर हई जिनकर फोटो लगवलेबानी उ हमरा खातिर भगवान बाड़े । हमार अन्नदाता बाड़े। भुखमरी के किनारा आ गइल रहली तब ना मनरेगा में काम मिलल ना लाले सफेद कार्ड बनल । अइसना में अमर बाबू तारनहार बनि के प्रगट भइले । एक लगी जमीन देके पलानी छववलन आ दोकान करे के पइसो से मदद कइले। दुखा- सुखा में हमेशा हालि चालि लेत रहेले । अइसना आदमी के हम अपना पलानी में टंगले बानी त कवन बेजाईं कइले बानी ? हमार पलानी त एकोरा बा । अखबार में त रोजे छपत बा । काहे ना अचाबारवालन के बरिजत बाड़ लो कि हरे नेतन क फोटउवा काहे के छापताड़ऽ स ? उखी के कमी से चीनी मिल बनी हो ताड़ी स देश के मिल खाली कपड़ा बनइहे ? जवना क लाखो लोग बे हर्रे फिटिकीरी के मुफते मे देखता । गरीब दोकानदार हंई। काहे अइसनका अनेति करताड़ऽ जा पेट पर लात मार ताड़ऽ जा। दोकानदार के बिती सुनि सिपाही ना पसिजले बलुक उल्टे खिसिया गइले ढेर बतकही बढइबे त चूल्हा चक्की बन्द कदेहब। सिपाहिन के घमण्ड देखि दोकानदार हाथ जोड़त विनती कइलसि। मानतानी रउआ कानून के रखवाला हई । जहाँ चाहबि डन्टा चला देइब। बाकिर एक घर डाइनो बक्सेली । आई बइठी सभे । मलाई मारि के स्पेशल चाय बनावत बानी । एतना कहि के अपना कान्ह पर से अँगौछी से टेबुल झारे लगले । अतने में एगो पुरनिया काका चाय- नशा खातिर चाय के दोकान पर अइले । काका पांडे हाथ में दस्ताना पहिरले अइले । चटक घाम में काका के हाथ में दस्ताना देखि दोकानदार विहँस के कहलसि । दाल में जरूर कुछ करिया बा। का बाति ह काका कहलन। काका कहले विनाश कालय विपरित बुद्धी । भला चुनाव चिन्ह देखवला भा लउकला से केहू आपन वोट देला ? का हाथ में दस्ताना पहिरला से हाथ हाथ के रूप बदल जाई। कहे भर के हो जाईं उहे सियार ह रंग बदलले बा। अरे कानून त इ बनें के चाही कि समय से खाद पानी बिजली सड़क ना मिली त ओकरा रखवार आ कर्ता - धर्ता जुर्माना भरे के पड़ी। अधिकारिन के बदली करे के अधिकार बा आ हत्यारा के चुनाव से रोके के हथियार नइखे। खाली चुनाव चिन्ह उरेब बुझाता कि मोकदिमा चली । जज एतना सेतिहा बाड़े कि हगलो बाति-पदलो बाति के फरियाद सुनत रहिहें। पूंजीपतियन से पइसा लेके जे लोग राजसभा आ विधानसभा भेजताड़े । ओइसनका पइसवा कहवां खरचा होई?

चुनाव नधाते सावन के गदहा लेखा सभका हरिहरे लउके लागेला। दोकानदार से लेके बेराजगरिहन तकले के कुछ काम भेटात रहल ह। दाम भेंटात रहल ह। कालाधन-कालाधन हल्ला कर के खचा-पानी उड़ावल-पड़ावल पर लवन बान्ह वान्हल लोग कि लागता कालाधन समुंदरे में फेंक आई ? गरीब के सतावे से केहू के कुछ हाथे ना लागी। उसर बंजर में कुछ छिटाइत बोझाइत त भारी-भरकम चोरिका हलुकाइत। काका के बाति सुनि के पुलिसवाला आपा से बाहर होगइल। डपटत कहले। चुनाव चिन्ह चोरवा के आ गइल तीसमार खाँ बन गइल। हमनी के लगे एतना कानुन बा कि कवनो धारा लगा के बन्द कइ देहब जा। हवालात के हवा खिआ देइब जा। वरदी वाला जवन हड़कवलश कि काका के बोलती बन्द हो गइल। काका अपना मुँह पर लगाम लागा लिहले सबके धिराइ के पुलिस वाला आगा बढी गइले। आगा रेल के फाटक रहुवे। फाटक बन्द रहुवे कवनो गाड़ी आवत रहुवे। गाड़ी के इंजन देख पुलिस वाला भड़कि गउवे। लाइन के बिचो-बिच खड़ा होके लगुवे डंडा पिटे। फाटक बन्द खोलला के कारण दुनू ओरि गाड़ी ,घोड़ा ,पैदल आदमी ठकचल रहुवे। सभके अगुताई रहुवें। सिपाहिन के डंडा पटकन देखि के भकुआ गउवे। कहीं कवनो हुउेब नइखे लउकत ना कहींलाइन टुटल -टाटल बा। घबराइल बाड़े का ? एक जाना के ना अड़उवे त पुछि बइठुवे का बाति ह , हो भाई ? पुलिस वाला जवाब देत कहुवे। चुनाव चिन्ह पर लगाम लागल बा। आ हई निडर होके दनदनइले चलल चलि आवता। डरेबर के बदमासी देख चुनाव चिन्ह तोपि ढापि के ना चले के चाही। ■ ■

लघु कथा

(एक):- असर

■ अतुलमोहन प्रसाद

मालकिन के चिंता आज ढेर बढ़ गइल बा। दू दिन हो गइल रूबी आपन बचवन के दूध नइखे पियवले। दुआरी पर पांचों बच्चा भूखे केंकिया रहल बाड़न स ड। छड़ी लेके मालकिन रूबी का सोझा बइठ गइली, चल ! बच्चन के दूध पियाव ! - मालिकिन छड़ी जमीन पर पटकत कहली।

रूबी चुपचाप खाड़ रहे। मुलुर-मुलुर ताकत रहे। 'तू अइसे ना सुनबे !' गते से एक छड़ी रूबी के मारत मालकिन कहली- '' चितान लेट। ई कवन मजाक बा ? दूध ना पिलावे के रहल हा त बच्चा काहे जनले ?'' डर के मारे रूबी चितान लेट गइल। मालकिन के चेहरा पर संतोष के रेखा खिंचा गइल।

मालकिन सोचे लगली। अचानक उनका परसो पतोह संगे आपन बतरस के इयाद पड़ल। ''ई का करत बाड़ू ?'' अपना बच्चा के बोतल के दूध पिआवत देख पतोह से बोललली।- 'अबे से बोतल के दूध?' आपन दूध काहे नइखू पियावत? 'आपन दूध पिआ के हमरा आपन 'फीगर' खराब करे के बा? पतोह टका सा जबाब दिहलस।

हमरा लागत बा रूबी, पतोह के जबाब सुन लेले रहे ओकरे जबाब के असर रहे कि ओही दिन से ईहो अपना बच्चन के दूध पिआवल बंद कइले बिया। ■ ■

(दू) :- बंधुआ मजूर

रोजाना के काम से फुर्सत पाके हम अपना कमरा में आ गइली। दाई के लम्बा छुट्टी पर जाये के सुन मेहरारू दहशत में रहली। बाहर बरतन साफ करत दाई अउर मेहरारू के बात साफ सुनाई पड़त रहे।

'अतना लमहर छुट्टी काहे खातिर?'

'ननद के बेटा के बिआह बा।'

'बिआह त अब एक ही दिन में हो जात बा।'

'ऊ बड़का खातिर होई, जिनका भिरी समय नइखे।' ओकरा बेटा के तिलक सात के नव के बिआह अउर एगारह के बहूभोज बा। एक-दू दिन पहिले जाइब अउर कम से कम एक दिन बाद ओहिजा से चलब। सात दिन से कम में काम ना चली। अब हम कह दीं कि दू दिन में आ जाइब आ रउवा रोज हमार आसरा देखीं। ई हमरा ठीक ना लागे। 'तू त जानते बाड़ू अबे हमरा बहिन के बेटी के बिआह रहे। मोनी के बाबूजी के छुट्टी मिल गइल रहे। तले अडिटर आ गइल। उनकर त छुट्टी रद्द हो गइल अउर हमनी के अकेले बिआह में जाये के पड़ल।' 'देखीं मलिकाइन ! हमनी के केकरो बंधुआ मजूर ना हईं जा। बिआह अपना हितई में बा एकरा से कम में काम ना चली, रउवा छुट्टी दीं भा मत दिहीं'। 'ठीक बा ! देखिह ऽ। एक-दू दिन में गुंजाइश बन जाय त ! पहिलहीं लवटि अइहऽ।' मेहरारू लाचार होके कहली।

भीतर बइठल हम सोचत रहीं आजु बंधुआ मजूर के बा? दाई कि हमार श्रीमती जी? ■ ■

भोजगण आ भोजपुरी भासा

स्व0 रघुवंशनारायण सिंह

(भोजपुरी साहित्य सम्मेलन 1970 पतरातू में अध्यक्षीय भासन के अंश)

अइसे त अनेक भारोपियन विद्वानन के जमल–जमावल मत बा कि वेद पंजाब, अफगानिस्तान आ मध्य एसिया में बनले, बाकी अइसनो विद्वानन के कमी नइखे, जेकर मत बा कि वेद पुरूब में बनले। (देखीं पाजिंटर के 'असुर इंडिया' पेज–4)। हर्नल के कहनाम बा कि आर्य पुरूब भारत में हिमालय का तरफ से अइले (देखीं 'प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास' पेज–135) बेद जवले मुखरी रहे, जवन श्रूति कहल गइल बा, तबले ऊ जहाँ बनल होखस, बाकी उनकर संकलन, सम्पादन आ लिखाई भोजपुरी भासी इलाका में भइल, जवना के प्रधान जगह बगसर रहे। बगसर के नाँव वेदगर्भ रहे, जवना के अरथ होता वेद के पैदाइस के जगह। एगो बेदसिरा रिसिओ रहन (देखीं छठा आल इंडिया ओरियण्टल काँफ्रेंस 1930 की रिपोर्ट के प्रस्तावना)। एही बगसर के आसपास वैदिक रिसि दीर्घतमा, कक्षीवान, इनकर बेटी घोषा, विश्वामित्र, मधुछन्दा, भृगु गौतम वोगैरह रहत रहन। एह जगह के 'अध्यात्म रामायण' में मुनि संकुल कहल गइल बा।

हमनी के पुरखा–पुरनिया एह भरत भूमि के चार भाग क देले रहन। अथर्व आ ययुरवेद के जबाना में ई बँटवारा हो गइल रहे। 'महाभारत' के उद्योग पर्व के अध्याय 108 में सुपर्ण, गालव रिसि से चारों खण्ड के महातम कहले बाड़े। उनकर कहनाम रहे कि श्रावस्ति से अयोध्या होते प्रयाग तक, एगो लकीर खींचल जाय, त ऊहे पुरूब–पच्छिम के सीवाना होई। श्री एच.सी. चकलदार के लेख देखीं, श्री जयचन्द्र कृत 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' पेज–110। ऊहाँ का लिखतानी–'मध्यप्रदेश की पूरबी सीमा काव्य–मीमांसा में वाराणसी कही गयी है, किन्तु कभी–कभी वह प्रयाग तक होती थी और काशी 'पूरब' में गिनी जाती थी। (वृहत संहिता / 14,7) आज भी भोजपुरी बोली की पच्छिमी उपबोली पुरबी कहलाती है, क्योंकि, अन्तरवेदियों की दृष्टि में बिहार के पश्चिमी छोर से पूरब शुरू हो जाता है। अब एहीजे इहो कह देल अच्छा होई कि गंगाजी जतना दूर पूरूब वाहिनी बाड़ी, ओतना दूर के इलाका खाली भारते ना; बलुक संसार के इतिहास में बड़ा महातमवाला जगह बा। विश्वामित्र, कक्षीवान, दीर्घतमा, गालब, याज्ञवल्क, जनक, बुद्ध, महावीर, चन्द्रगुप्त, चाणक्य, अशोक, समुद्रगुप्त, वाणभट्ट, शेरशाह, कबीर, तुलसी, बाबू कुँअर सिंह कहाँ से ले आके दी? ई सभ एही भूईं के जनमल, पलल आ पसरल हवे। ई जगह प्रयाग से राजमहल तक ह, जहाँ ले गंगाजी सोझे पुरूब मुँहे बहेली। त्रिपिटकन में एकरे के मज्झिम देस कहल गइल बा, जहाँ बुद्ध के उरदेश भइल (देखीं ज0 बि0 रि0 सो0 वलूम XLYI पार्ट–1, 1960, पेज–64) ओकरे पन्ना 306 में बा There is silence in the Budhist scripturs about the country west of junction of the Ganges and Jamuna save Ujjeni.

डाक्टर अविनाशचन्द्र दास आ अध्यापक क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय के मत लेल जावा, त एह लोग का बुझाइल बा कि जवना घरी रिगवेद के रचना होत रहे भा हो गइल रहे, ओह घरी ई धरती समुद्र का नीचे रहे (देखीं 'गंगा' का पुरातत्त्वांक के पन्ना 73, पर इनकर लेख, 'ऋग्वेदोक्त आर्य निवास का भौगोलिक विवरण' 'लिखताड़े–ऋग्वेदीय युग में यह समुद्र समस्त गांगेय प्रदेश अर्थात् पांञचाल कोशल, वत्स, मगध, विदेह, अंग और बंग देशों को समाच्छन्न कर के विद्यमान था।' वोही में पन्ना 105 पर क्षेत्रेशचन्द्र लिखताड़े कि– 'डाक्टर अविनाशचन्द्र दास ने ऋग्वेद के समय पंजाब की जैसी भौगोलिक परिस्थिति समझी है, वह भी सर्वथा निराधार है।' बाको बोकरे पन्ना 103 पर ई लिख चुकल बाड़े– ऋक् संहिता में जितने भौगोलिक नाम पाये जाते हैं, वे सब पंजाब, काश्मीर और अफगानिस्तान के हैं।'' –इनकर इहाँ कहनाम बा कि 'वैदिक आर्यजन समुद्र के तट पर नहीं रहते थे; किन्तु साक्षात् या परम्परा में उनको समुद्र का ज्ञान था।' (उहे पन्ना 106)। ई बात तृतीय कल्प के ह, बाकी कइसे उनका बुझाय गइल बा कि वैदिक काल में ई असहीं रहे? वेद में 'चतुःसमुद्रा' आइल बा। एही से इनका बुझाये के चाहत रहे कि वैदिक रिसि लोग का चारो ओर समुद्र रहे। फिर भी इनका ई पता ना चलल कि उत्तर–पच्छिम में समुद्र कइसे बतावस। श्री ए.डी. पुसलकर का बुझाइल बा कि –''मंत्रन का मोताबिक अफगानिस्तान, पंजाब, सिन्ध के हिस्सा, काश्मीर, राजपुताना, पश्चिमोत्तर प्रदेश आ सरयू तक के पूर्वी भारत में वैदिक लोग रहे। (देखीं 'वैदिक एज' के पन्ना 154) अब इनका से केहू पूछे कि सरयू कहाँ तक ले अलेखी टोला गुलटेनगंज तक त का जबाब दीहन? इनकर इहो कहनाम बा कि वेद कुरू–पंचालन से कोसल–विदेह के आर्य पहिले के आइल हवे ('वैदिक इन्डेक्स', पन्ना 154)। संभव बा कि वृष्णि–अन्धक आउर बज्जी तथा मल्ल,

जे कुरू–पंचाल के पुरूब में बा, पहिले के आइल आर्य रहन। (देखीं 'पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एनशिएन्ट इण्डिया' पेज 120)। रांगेय राघव के मत बा कि आर्य नागन के सम्बन्ध से अइले, जे पुरूब ले पसर गइलन। (देखीं 'प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास' पेज 135)। एह से हमार कहनाम बा कि पुलसकर के बात जमत नइखे। साँच बात ई बा कि वेद भोजन के देन ह। ओही लोग का भासा में बा। विश्वामित्र के जजमान भोज रहन, जे उनका चारों ओर दूर–दूर ले बसल रहन। एह में त केहू का सके ना होखे के चाहीं कि गायत्री आ सावित्री मंत्रन के जनम खास बगसरे में भइल। (देखीं आल इंडिया ओरियन्टल कानफ्रेंस के रिपोर्ट के प्रस्तावना में ए.पी.बनर्जी के लेख)। शुक्ल यजुर्वेद के जनम याज्ञवल्क के जरिये मिथिला में भइल। (देखीं एच.सी. चकलदार के लेख छठा ओरियन्टल कान्फ्रेंस के रिपोर्ट, पन्ना 509)।

डाक्टर अविनाशचन्द्र के बात त ओहिजे वेदे में कट जाता। उनकर कहनाम बा कि वेद में खाली नदियने के नाँव बा, कबनो जगह के ना, पहाड़ के भी ना–एक–आध के छोड़ के। खाली आदमी भा वंश आ नदी का नाँव पर अन्दाजे लगावल गइल बा कि कवना कुल के लोग कहाँ रहत रहन। एही में उनकर कहनाम बा कि गंगा नदी के नाँव एके बेरा रिगवेद में आइल बा आ उहो ऊँचे–ऊँचे कगारोवाली गंगा कहल गइल बा। एह से जनाता कि गंगा पहाड़े में बह के समुद्र में मिल जात रही। (देखीं 'गंगा' के पुरातत्वांक में इनकर लेख, पेज 74,76) रिगवेद 6।45।33 मंत्र में 'उरूः कक्षः न गांगयः' कहल गइल बा। आजो गंगा के समतल प्रदेस में 'गंगा तोरी ऊँची अररिया' लोकगीतन में गवाला। इनकर ईहो कहनाम बा कि ओने पंजाब के करीब कुल्ह नदिअन क नाँव वेद में आइल बा। एही से बुझाता कि गंगा नदी के कबनो मोल ना रहे। हमार कहनाम बा कि भलेहीं गंगा के नाँव एके–आध बेर आइल होखे; बाकी जब आइल बा, तब ओही मोल में आइल बा, जवन आज ओकर मोल बा। ई बड़ा मजेदार बात बा कि रिगवेद में जवन नदी–स्तुति के मंत्र बाड़े, ओह में सबसे पहिला नाँव गंगा के बा। देखीं

इमं मे गंगे यमुना सरस्वती शुतुद्री स्तोभं सचता परूष्ण्या।
असिकन्याम् मरूवृद्धे वितस्तयाऽऽर्जीकाये शृणुह्य सषामया।10।75।5
तृष्टामया प्रथम यातवे सजूः सुसर्त्वा रसया श्वेतृयात्या।
त्वं सिन्धा कुपया गोमती त्रु मु महेन्नवा स्रथं याभिरोयसे।10।75।6

अतने भर ना; बलुक आज जे हमनी का गंगा, यमुना आ सरस्वती जपिले, ओसहीं रिसि लोग भी गंगा, यमुना आ सरस्वती के पहिले स्तुति कइले बाड़े। आ एह में मजा के बात ई बा जवना सिसिला में एह मंत्र में नदी के नाँव रखाइल बा, ऊ पूरब से पच्छिम मुँहे ले जाता। एक बात आउर। हमरा जाने में वेद से लेके आज ले एही ठांव के नदिअन के नाँव आन जगह पर जइसे–के–तइसे रह गइल बा, ना त सब के नाँव बदल गइल बा। आज पंजाब में जा के केहू पूछे कि हम परूष्णी में नहाये चाहत बानी त साइते कवनो पंजाबी बताई ई सवाल खाली परूष्णी का साथे नइखे, बलुक ओने के सभ नदिअन का साथ बा।

एने के नदी गंगा, यमुना, सरस्वती, गोमती, सरयू आदि के नाँव त वेद में बड़ले बा, ओकरा आगे चल के वैदिक वाङ्मय में आऊर नदीन के नाँव जुटत गइल। ओह में सदानीरा के नाँव खाली बदलल बा; बाकिर नारायणी, कोसी, सोन, पुनपुन के नाँव भी लामा अरसा से ऊहे चल आ रहल बा। एह से ई सवाल बहुत बड़ा सवाल हो गइल बा कि एह गंगा आदि के नाँव काहे ना बदलल आ पंजाब–अफगानिस्तान के सभ नदिअल के नाँव अइसन बदलल कि चिन्हाते नइखे। शुतुद्री सतलज आ विपाट चाहे विपास व्यास हो जाय, त इहो ठीके बा; बाकी परूष्णी, भाषाविज्ञान के कवना सिद्धान्त से रावी हो जाई? एह से सभ के सोचे के पड़ी की गंगा, यमुना आ सरस्वती के महातम कुछ आउर रहे, जे आजो बा। एगो आउर सवाल बा कि परूष्णी अथवा कुंभा के तट पर बइठल सिसि जब मंत्र दरसन चाहे रचना में डूबल रहन, त उनका अपना नदी के नाँव इआदे ना आवत रहे, जवना का जल से उनकर सभ काम चलत रहे आ ऊ एतना दूर चल अइले ओह नदी के स्तुति करे, जवना के ऊ लोग जानतो ना रहन। एह से हमार कहनाम बा कि वेद के रचना भोजपुरी इलाका में भइल, एही से गंगा, यमुना आ सरस्वती के नाँव नदी–स्तुति में सब से पहिले आइल बा आ ऊ पुरूब से पच्छिम मुँहे जाता।

कहल जाला कि तुत्सु आ भरत गन के पुरोहित विश्वामित्रजी ओह घरी रहीं, जब ओह लोग के लेले ऊ शुतुद्री आ विपाट के तट पर जा के दूनो नदीन से प्रार्थना कइलन कि हम दूर से रथ में घोड़ा जीत के आइल बानी, से तू लोग "निषू नमध्र्व भवता सुपारा अधो अक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः।" (देखीं ऋक 3।32।9।10) एह मंत्र में दूर, सुपारा, अधो, भवता अइसन सबद बाड़े स, जवन आज भी भोजपुरी में चलत बाड़न स। एह मंत्र में नदीन के नाँव नइखे, बाकी ऊपर के प्रसंग से जानल जाता कि ई दूनों सतलज आ ब्यास रही स। अगर विश्वामित्रजी ओहिजे के रहेवाला रहितन, त फेर ई सवाल काहे आइत कि हम दूर से रथ में घोड़ा जीत के आइल बानी। बुझाता कि एनहीं से ई कबनो चढ़ाई रहे, जवना में विश्वामित्रजी ई स्तुति कइलीं। इहाँ गांठ पार लेबे के चाहीं कि पाछे विश्वामित्रजी

भरत गन के छोड़ देले रहन आ भोज आउर सुदास के पुरोहित हो गइल रहन।

वैदिक भोजः

ययाति के वंस में यदु, तुर्वशु, अनु, द्रुह्यु आरू पाँच जाना भइलन। जिम्मर के कहनाम बा कि रिगवेद के 'पंञ्चजनाः' इहे लोग रहन। (देखीं 'वैदिक एज', पन्ना 245, देखीं भारतीय इतिहास की रूपरेखा', पन्ना 128)। ई लोग भरत जन का खिलाफ आपुस में मित्र रहन' बाकिर पुरानन के कथा के अनुसार ई लोग भाई रहन। असल में यदु आ तुर्वशु देवयानी से सहोदर भाई रहन, शर्मिष्ठा से अनु, द्रुह्यु आ पुरू रहन।

यदु आ तुर्वशु के नाँव रिगवेद में बहुत बेर साथे–साथ आइल बा। एह तुर्वशु के करूष के राज मिलल। (देखीं 'वैदिक एज' पन्ना 274, देखीं 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा', पन्ना 108)। इनकर वंश बहुत दिन ले तुर्वशुए कहात रहल; बाकीर आगे चल के ई लोग भोजवंसी हो गइलन। एक बेर करूष के राजा आहुक रहन। ब्रह्मपुरान में इनका के भोजवेसी कहल गइल बा। लिखल बा कि जे भोजवंसी आहुक का दूनों ओर चलत रहन, ओह में केहू अइसन ना रहे जे पुत्रवान ना होय, हजार भा सै से कम दान करत होखे, कवनो असुध काम करत होय। भोजवंसी आहुक के पूर्वी दिसा में एकइस हजार हाथी चलत रहन, जवनन पर सोना–चानी के हउदा कसल रहे। उत्तर ओर भी इनकर इहे अंक होत रहे। भोजवंसी सभ भूपाल का भुजा में घनुहा के डोर के चिन्ह होत रहे। (देखीं 'कल्याण' के संक्षिप्त ब्रह्मपुरान, पन्ना 304)। पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी विष्णुपुरान में करूणाधिपति आहुक लिखले बानी। करूष देस के हाथी बड़ा नामी होत रहन स। कौटिल्य अपना अर्थशास्त्र में 'गजः श्रेष्ठा प्राच्याश्चेति करूषजाः' लिखले बाड़े।

मगध, मरूष, कौशाम्बी, चेदि आउर मत्स्य–ई पाँचो राज्य वसु के पाँच लइकन में बँटल रहे। पुरूब से पच्छिम ले ई सोझे रहले स। आज के शाहाबाद जिला मनु के पुत्र करूष के राज्य में रहे। उनके नाँव पर ई करूष देस कहाइल। करूष माने कड़ा होला भी। महाभारत में ई लोग बड़ा ढीठ आ लड़ाका मानल जात रहन। ई रीवाँ से लेके समूचे सोन घाटी में गंगा तक फैलल रहे। ओह घरी दण्डकारण्य गंगा का ठीक दक्खिन तट से सुरूम हो जात रहे। हँ, इन्द्र के वृत्रासुर–बध के बाद उनका के सुध करे के जे जग भइल ओकरा बाद एकर नाँव मलदो हो गइल। पाजीटर भा उनका मत पर चलेवाला श्री ए.डी. पुसलकर आ आर.सी. मजुमदार भी बाल्मीकि रामायण पर धेआन ना दे के रीवें का चारो ओर करूष मान लेखन। बाल्मीकिजी त इन्द्रे का मुँह से कहवा देले बानी 'करूषाश्च मलदाश्च ममांग मलधारिणी।' ई ओह जगह के बात ह, जहाँ गंगा आ सरयू के संगम पर राम, लछुमन आ विश्वामित्रजी अयोध्या से आके गंगा पार कइलीं आ सिद्धाश्रम का ओर चललीं। एह से ई निसचय से शाहाबाद जिला ह। एही मलद से मल्ल राष्ट्र के जनम भइल, जवन गंगा का दूनों ओर फैल गइल। इहे उत्तर मल्ल आ दक्खिन मल्ल कहइले। महाभारत में भोज लोग के पदवी आउर बढ़ल लिखल बा–

'यथातेस्त्वे भोजनां विस्तरो गुणतो महान् भजतेऽघ महाराज विस्तरं स चतुर्दिशम। तेषां तथैव तां लक्ष्मी सर्व क्षत्रमुपासते।'

अरथात् महाराज! आज–काल्ह राजा ययाति के कुल में गुन के नजर से भोजबंसिअने के अधिका विस्तार भइल बा। भोजबंसी बढ़ के चारो ओर फैल गइल बाड़े आ आज के सभ छत्री लोग ओही लोग के धन–सम्पत्ति के असरइत बाड़े। फेर कहत बाड़े कि–'उद्दीच्याश्च तथा भोजाः कुलन्याष्टदश प्रभो।' इहाँ पुरूब के भोजबंसिअन के अठारह कुल के बात बा। फेर 'भोज राजन्य वृद्धेश्च' भोजराजन के बड़ बूढ़। 'बान्धक भोजश्च' कहल गइल बा।

रिगवेद में भोज एगो जाति रहे। एकरा के साबित करे खातिर कहीं जाये के जरूरत नइखे। बड़ा आसानी के रिगवेद में बीस–पचीस गो मंत्र लिख देवे के काम बा, बाकी इहाँ जगहे कम बुझाता। श्री ए.डी. पुसलकर अनेरे फेर में परल बाड़े कि रिगवेद में ओह जुग के परधान जायितन के जिकिर नइखे; जइसे– सात्वत, भोज विदेह, इक्ष्वाक वोगैरह। डाक्टर हेमचन्द्र राय चौधरी के भी ई कहना म जमत नइखे कि भोज व्यक्ति के नाँव नियर बा। रिगवेद में साफ बा।

इमें भोजा अङिगरसो विरूपा दिवस्पुत्रासो असुरस्य बीरा।
विश्वामित्राय ददतो मघानो सहस्र सावै प्रतिरन्त आयुः।

इहाँ 'इमे भोजा' बहुबचन में बा। ऊ व्यक्ति के नाँव कइसे होई? आगे भी रिगवेद के दसवाँ मंडल के सूक्त 107 के 8,9,10 आ 11 वाँ मंत्रन के पढ़ीं। सब में "न भोजा, ह भोजा, भोजायम्वा, भोजास्येद, भोजा यास्ते कन्या शुम्भमाना', मिली। कहे के मतलब कि ई ना त एक बचन होई ना व्यक्ति के नाँवे होई। भोजने के डाढ़–ताप भी खूब फूटल आ फैलल आपन अलग–अलग नाँव भी धराइल। एह में दाण्डक्य भोज, सात्वत भोज, वैदर्भ भोज, कुन्ती भोज, अन्धक भोज वोगैरह नाँव मिल रहल बा– वेद में विश्वभोजा भी बा।

वैदिक भासाः

रिगवेद में 'भासा' सबद कई बेर आइल बा। ओह में भासा दन्त स से लिखल बा। भासा भोजपुरी में चलेला ओहि अरथ में। भोजपुरी में भासता, भासल रहे, भासेला, आभास मिलेला। वेद में एकर अरथ प्रकास कइले बा लोग। एह प्रकास के समुझे के होय, त का समझल जाई? भासा का काम प्रकास देना ही होला। हो सकेला आज–काल्ह के भासा में जे रूप बा वैदिक काल में ऊहे भासा होखे माने दन्ते स से लिखल जात होय। ई रिगवेद के 7 ।7 ।4 आ 8 ।23 ।5 में 'अभिख्या भासा वृहता' क के आइल बा।

श्री सुनीति कुमार चाटुर्ज्या के मत बा कि वेद के प्राचीन भासा के रूप कुछ एह तरह के होखे के चाहीं– –अग्निम् इग्दई पुरज्–धितम् चइनस्थदैवम् ऋत्विजम् ज्होतास्म् रत्न धातमम्।' आज के रूप–– अग्निमइत्वे (इडे) पुरोहितम् यज्ञस्य दैवम् ऋत्विजम् होतारम् रत्न धातमम्।

साहित्याचार्य 'मग' क कहनाम बा– 'उन दिनों की वैदिक भाषा भी लौकिक भाषा से भिन्न थी। मंत्र–द्रष्टा ऋषियों, पुरोहितों, अर्ध्वर्युथों और याचकों की भी भाषा छन्दोगत भाषा से भिन्न थी। बोलचाल की भाषा में भी सन्धि और प्रत्यय के कुछ भेद रखे जाते थे। व्यावहारिक भाषा का शब्दकोश भी भिन्न था, व्याकरण की उतनी पाबंदी नहीं थी। 'प्रगलव्य', 'बलम्मीक', 'शल्क्क', 'गव्मं आदि शब्द बोले जाते थे, जिन्हें महेश, यास्क, पाणिनि आदि ने 'प्रगल्भ', 'बाल्मीक', 'शल्क', 'गर्भ' आदि लिखा। कुछ के मत से उन दिनों भी प्राकृत भाषा बीज रूप से थी।

एह में एके चिन्ता के बात बा कि इहाँ कुछ के मत से काहे लिखाइल, ई त सबहर मत होखे के चाहीं। इहे साँच बा कि वेद के पहिले भी जवन बोलचाल के भासा रहे, ऊ प्राकृते रहे। ओकरे से वेद बनल। वेद के बाद भासा सँवारल गइल, त ओकर नाँव संस्कृत धराइल। राहुल बाबा एकरे के कृत्रिम भासा लिखले बानी।

<u>वर्तनि</u>

कहे के मतलब कि भासा के रूप बदलत गइल। एह वर्तनि पर सोचीं। ई रिगवेद के मंडल 10 सूक्त 144 मंत्र में आइल बा। एकर अरथ ओह में बार–बार लवट के आवेवाला कइले बा लोग। आज से 50–60 बरिस पहिले गाँव के पाठशाला में वर्तनी होत रहे। ओह में 'पहिले के पढ़ल पाठ सब दोहरावल' जात रहे। तब एकर इहे वेदवाला अरथ होत रहे। अब एकर अरथ 'विवरण' चल रहल बा। सबदन के कइसे, कवना–कवना अच्छर आ मात्रा से लिखल जाव, के वर्तनी कहल जाता।

ई चाहे जे होय, मगर ई साबित बा कि बर्तनि आ अरथ दूनो बदलत रहेला। वर्तनि के अरथ विवरने होय, त ऊहो बदल जाला। इहाँ हम कुछ सबदन के दे रहल बानी, जवन आपन रूप बदल देले बाड़े। वेद में दन्त स से काम चल गइल बा। ओकरे के संस्कृत में तालव्य श से लिखल गइल–

वेद में	संस्कृत में	अर्थ	वेद में	संस्कृत में	अर्थ
स्याल	श्याल	सार	सूर्प	शूर्प	सूप
सूकर	शूकर	सुअर	बसिष्ठ	बशिष्ठ	उत्तम
विकासते	विकाशते	विकसित होना	कोस	कोष	खजाना
सरल	शरल	सहज	वेस	वेश	भेस

ऊपर के सबदन पर नजर दउराई, त बुझाई कि वेद में जवन वर्तनि देल गइल बा, ऊहे भोजपुरी में त चल रहल बा। हमरा ईंहो कहे के बा कि जवन ध्वनि आ धुन वेद में बा, ऊ बहुत जादे भोजपुरी में ओसहीं उतर आइल बा। वेद में आ, आव, आवह, आ गहि, आ याहि, के ह्य, को वेद, एही; ए ह हरी, इहे ह, क इह, येन हरी, मनसा, तपो, वसो, तू, ते, मा, में, एको, अधो, भरे, सँगे, सँगमे, खले, बाजे, याति, बाति, पक्ते, जमते, अवति, वज्रचति, आके, पराके, पराचे, आरे, क्षमा, क्षाम वोगैरह बाड़े स, जवन भोजपुरी में आ ऊहो गँवई के गँवार लोगन में समान रूप से चलत बाड़े स– जरा–मना फेरफार के साथ खोजल जाय, त अनेकन मिल जइहें। निरूक्त में रहुरे, कहुरे, सहुरे वोगैरह अइसन ध्वनियो बाड़े स, जवन आज भोजपुरी में चलते बाड़े। एह सभ पर ठीक से धेआन देल जाय, त बुझाता कि वेद में बहुत सबद अपना विवरन, उच्चारन आ अरथ का साथे बीच के संस्कृत आ हिन्दी के राह छोड़ के प्राकृत, पाली आ अपभ्रंस के राह धइले भोजपुरी में चल आइल बाड़े।

'ऐसे अनेक शब्दों का अध्ययन जरूरी जान पड़ता है, जो वेद से पाली में तो आए, पर संस्कृत में उन्हें स्थान न मिला, हिन्दी में भी नहीं; पर वे भोजपुरी में आ गए। भोजपुरी के देवासे, देवास का पाली में देवासे है, जो वैदिक देवासः है, देवेहि (वैः देवेभिः) गोनाम् अथवा नुन्न (वै0 गोनाम्) एवं पतिना वै0 पतिना वैदिक 'रथ' के पाली में 'रंथ' हो गइल बा, भोजपुरी में 'रंथे' चलेला। ओसहीं वैदिक 'राय' के 'राउ' आउर 'रउओ' भइल बा।

सावस्थियं महाकोसल रउओ पुत्तो पसेनाद कुमारा नाम वेसालियं लिच्छवि कुमारो महा निनाम कुसीनारायं

मल्लराजपुत्तो बन्धुलो नामाति इमेतयो दिवासमोकखस्स आचारयस्स सत्तिके सिप्पग्गाहणत्थाय तक्कसिलकं गत्वा बहिनगरे सालाय समागता.... ('पुत्तो' के भोजपुरी के 'पुत्ता' से मिलान करीं)

साहस होखे त कहल जा सकेला कि दस हजार बरिस के आँतर में बहुत कुछ छोड़–बाढ़ के बेद के भासा के जवन धार बहत चल आवत बा, ऊ भोजपुरिये ह। हमरा जाने में ई उच्चारन दोसर केहू दे ना सके।

श्री जयचन्द्र विद्यालंकार के ई सवाल बड़ा महत्व के बा कि अगर आर्य लोग मध्य एसिया से अफगानिस्तान, कश्मीर आ पंजाब के रास्ता से अइलन, त 'आर्यावर्त्त' की शुद्ध और केन्द्रिक भाषा उत्तर भारत के मैदान के मध्य में कैसे आ पहुँची और मिश्रित भाषाएँ उसके चारो तरफ कैसे फैल गईं

'यूरोपीय विद्वानों का यह मत अत्यन्त चिन्त्य है कि आर्यों का मूल निवास–स्थान भारत में पंजाब में था, तथा पंजाब में वे भारत के बाहर से मध्य एशिया अथवा पूर्वी यूरोप से आये थे। ऋग्वेद के लगभग 1000 सूक्तों में से केवल दो–तीन सूक्तों में पंजाब की नदियों के उल्लेख है और यदि इन सूक्तों को ध्यान से पढ़ा जाय, तो यह मालूम होता है कि मध्य देश से ही कोई आक्रमण पंजाब की ओर हुआ था और उसकी स्मृति इन सूक्तों में सुरक्षित है। इन दो–तीन सूक्तों के विरूद्ध ऋग्वेद में सैकड़ों सूक्त ऐसे हैं, जिनके ऋषि तथा जिनमें उल्लिखित राजा अनुश्रुति के अनुसार मध्यदेश से सम्बन्ध रखते थे। इनके अतिरिक्त यूरोपीय विद्वानों के अनुसार भी आर्यों की संस्कृति का प्राचीनतम तथा शुद्धतम रूप भारत में मध्यदेश में ही मिलता है।

इहे सवाल हमरो बा कि वेद के रचना अगर अफगानिस्तान, कश्मीर आ पंजाब में भइल, त ओकर सभ से सुध उच्चारन भोजपुरी में कइसे आ गइल? हमनी का पाठशाला में पढ़त रहींजा, त 'राम गति देहु सुमति' से पढ़ाई सुरू होत रहे। एह में 'राम' के जे उच्चारन होत रहे, ऊहे वेद के उच्चारन हौत रहे। ऊहे वेद के उच्चारन ह। भोजपुरी के चारो ओर अवधी, मैथिली, मगही आ छत्तीसगढ़ी में ही कुछ छौंक–बघार पावल जा सकेला, बाकिर आउर लोग त अतना उच्चारन ना दे सके।

हिन्दी में करीब कुल्ह सबदन के आखिर में अ के लोप हो गइल बा माने स्वर हइये नइखे, सभ व्यंजने रह गइल बा। एह से परिवर्त्तन, आवर्त्तन, विवर्त्तन जइसन सबदन में न के हल उच्चारन हो गइल बा; हालाँकि लिखात बा पूरा न। एही से भोजपुरी लिखेवाला लोग आपन विश्वास छोड़ के ओह में बकटोइवा (खंडाकार) लगावे का चक्कर में पड़ गइल बाड़े। 'कह' के हिन्दी में 'कह्' पढ़ले बाड़े। अब भोजपुरी में कऽहऽ लिखत बाड़े। भोजपुरी में बकटोइया के अइसन भरमार क देता लोग कि पढ़े में फेर पर जाता। भोजपुरी में ई बात भइल नइखे। वेद में 'वद' वा, भोजपुरी में 'बद' भइल बा; वेद में 'पिब' बा, भोजपुरी में 'पिअ' भइल बा। वेद में 'जानता' बा, त भोजपुरी में ऊहे बा खाली हिन्दी में जान्ता भइल बा। असहीं बहुतन के इहे हाल बा।

'आ', भोजपुरी में और का अरथ में चलेला आ आवे का अरथ में भी। वेद में ई बहुत बेर आइल बा दूनों अरथन में बा, देखीं–

स नो मेखले मतिम आ धेहि मेधाम् अथो नो धेहि तप इन्द्रिय च। एह में मतिम आ धेहि मेधाम् के आ के अरथ दोसर होइये ना सके। अँगरेजी में एकरा के 'गिम अस थिकिंग पावर एण्ड टेलेण्ट कइले ही बाड़न। असहीं आ तू षिंच कराव मन्तं एकरा के आ तू सिंच कण्व नतिन क देल जाय, त ई भोजपुरी हो गइल। का वः सखित्व ओहते। गाँव में लोग ओहे ला, ओह लेला आ तनी ओहत भी कहेला। एह में ह आ त दूनों के पुरहर उच्चारन होई, तबहीं ई बुझाई, ना त ओह्त क देला से माने बदल जाई। ओहते के जोहते भी कइल जा सकेला। 'जुहाव' वेद में आइल बा, भोजपुरी में 'जोहाव' होला। इ हे ह 'वो मनसा वन्धुता नर' हवे 'त्वा सूर उदिते हवे मध्यन्दिने दिवः, 'पार याति स्वति नावा' 'उत ते सुष्ठता हरी वृष्ण बहतो रथम' 'आस्मा अच्छा सुलतिर्वा मुभस्पति आ धेनुरिव धावतु' 'जावः देवि आ मर्ति', महा अपार ओजसा 'घृतं दुहत आशिरम्' आ 'धावत मधाय' मद; शविष्ठ चेतति, वस्त्राइब, ईच्छन्ति देवा, भूरी दारी, सुमतिम्, साथं करत, सहसा, मुपारा, सुहवं, पथिभि वोगैरह पढ़त बुझाता, जइसे वेद भोजपुरिये में लिखल होखे। अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो न कुतश्च नोनः

तमेव विद्वान न विभाय मृत्योर आत्यान धीरम् अजरम् युवानम्

असानो कहीं वेद से बा। असानो, अकामो, बेकामो, धीरो, युवानो के आखिर में जवन ओकार बा, ऊ भोजपुरी के आपन चीज ह, जवन एकरा भीरी बंगला के खींच ले आवेला। अइसे त अकाम, धीर, रस, तृप्ति, विद्वान, मृत्यु, आत्मा, अजर, युवान सभ भोजपुरी में चलते बा। युवक सबद पाछे के ह। एकरा में कुच उद्धत जइसन अरथ बा; बाकीर आज–काल्ह हिन्दी में इनकर चलती बा, त के बोलो।

यद दुष्कृत यच्छमलं विवाहे वहती च यत। तत संभलस्य कम्बले मृज्महे दुरितं वयम्।

इहाँ दुष्कृत, मल, बिबाह, बहत, संभल, कम्बल आ दूर भोजपुरी में चलेवाला सबद बाड़े स। अच्छत, करत, करतो, धनवन्तं, गोमन्तं, अश्वन्तं वोगैरह भी बाड़न स।

हमरा बुझाता कि संधि, प्रत्यय, उपसर्ग, विभक्ति वोगैरह के अलग क के देखल जाई, त बहुत, अतना बहुत कि ओकरा से हमनी के लिखे–पढ़े के काम चल जाई, वेद से भोजपुरी में सबद आ गइल बाड़े। हजार दू हजार सबदन से त हमनी का लिखते बानी। सबद कोस के डेढ़ लाख सबदन के केकरा ज्ञान बा आ डेढ़–दू लाख सबद बहरी भी बाड़े, जेकरा सबदकोस में जगह नइखे।

लोकमान्य तिलक ने वैदिक संस्कृत में सुमेरी भाषा में कितने ही शब्द कैसे आ गए हैं, यह सप्रमाण सिद्ध किया है; यथा–तेमभात, अप्सु, सिनीवाली, अलिगी, बिलगी, उरूगुल आदि। जरूरत एह बात के बा कि वैदिक वाङमय के सबदन के ठीक से अध्ययन के काम नाधल जाय। ओह में जवन भोजपुरी में चलत बाड़े, ओह सभ के खोज–खाज के एगो सबदकोस बनो। 'वैदिक इन्डेक्स' का बनला ढेर दिन भइल आ ओह लोग का बुझइलो कमे रहे। ऊ अँगरेजी में बा — इहो एगो गड़बड़िये बा। बगसर जब वेदगर्भ ह आ विश्वामित्र के आश्रम ओहिजे रहे, त महर्षि विश्वामित्र महाविद्यालय में ई काम होखे के चाही। गंगा जब गंगोत्तरी से चलेली, त गंगासागर जात–जात उनका कतना नदियन से संगम हो जाला, बाकी गंगा गंगे रह जाली। लछुमन झूला में जे गंगा के पानी के रंग बा, ओकरा में जे ठंढई बा ऊ प्रयाग में पावल जा सकत बा, ओकरा पटना आ कलकत्ता गइला पर ओकर का हाल हो जाला से ढेर लोग जानेला। एक घोंट पीके पवित्र होखे के चाहीं, त कंठ का नीचे उतरबे ना करी, तबहूँ लोग स्नान क के पवित्र होखे खातिर गंगासागर जाला।

भोजपुरिओ के ऊहे हाल बा। वेदे का पहिले जवन भासा रहल होय, ओकर नाँव प्राकृते धराई, काहेकि ओकरा में नून–मरिच के मेल रहे, डालडा भा असली घीव के छींक बघार ना रहे। ऊहे एक ओर वैदिक भासा से संस्कृत आ दोसरा ओर पालि–प्राकृत से अपभ्रंश के राह धइले भोजपुरी वौगैरह में आ गइल। ई कइसे आइल, एकरा के ठीक से समुझे खातिर नाथ पंथीअन के 'चलिबा, रहिबा गाइब गीत' आ सिद्धन के भासा पढ़े के परी। जवन सबद भा क्रिया पर देख के पहिले के लोग ओकरा के हिन्दी कहल, ओकरे पर भोजपुरिओ के महल खड़ा बा। एह से भोजपुरी के इतिहास लिखेवाला से हमार हथजोरी बा कि जबहीं उनका भोजपुरी के इतिहास लिखे, के होखे, त रिगवेद से उठावल आ आज–काल्ह जे भासा में छितराहट बा, जे फेंट–फाँट बा, ओकरा तक जास। आज हिन्दी अथवा भोजपुरी के वाक् में अँगरेजी के जतना सबद आ ऊहो बेमानी–मतलब समुझले आ रहल बाड़े, जेकरा खातिर फेर से ब्याकरन लिखे के परी, फेर से सबदकोस बनावे के परी।

भोजपुरी के नेही भाई लोग का एह पर सोच–विचार करे के होई। आज समाज में जवन खितराहट बा ऊ भासा में आके रही, ओकरा के के केहू रोक ना सकी। ■ ■

गीत

■ भालचंद त्रिपाठी

बगिया से बैरागलि चिरई
गीत सुनावति जाय
बस दुइयै दिन के बहार बा
याद दियावति जाय !

फुनगलि देखि डारि बगिया के
मन छन में अरुझाला
जब निरदई बयारि होय तब
पात-पात झरि जाला
हर बहार पतझर के सम्पत्ति,
इ समझावति जाय !

खिलल फूल मन में लिहले
काँटा चुभले के पीरा
हर तितिली के मन में पइठलि
प्रेम पियासलि मीरा
छकि के पी ल अमरित रस
गगरी छलकावति जाय !

फूल बनऽ महकऽ अइसन
कि रीझै दुनिया सारी
बगिया होय कृतारथ
आपनि भागि सराहै डारी
माली के भी मन भावे क
मन्त्र बतावति जाय !

अब आई भोजपुरी भासा के अच्छा दिन !

■ राजीव पाराशर

आज के हिसाब से देखल जाव, त भोजपुरी बोले वाला के आबादी तकरीबन 20 करोड़ पहुंच गइल होई, हालांकि 2011 के सरकारी जनसंख्या रिपोर्ट में भोजपुरी भासा बोले वाला के आंकड़ा मौजूद नइखे, काहें की सरकार के जनगणना रिपोर्ट में भोजपुरी बोले वाला के आधार पर गिनती करे के प्रावधान ना रहे। अब सवाल उठता की, 20 करोड़ जमात के भावना के अनदेखी करेके हिम्मत अगर सरकार में बा, त एकर पूरा दोष एही लोगन के जात बा। छोट – बड़ स्तर पर भोजपुरी भासा के संविधान के आठवीं अनुसूची में डाले खातिर प्रयास के बावजूद, सरकार अब तक अनदेखी करत आवतिया। आश्चर्य के बात ई बा कि, 60 लाख तक आबादी वाला भासा, आठवीं अनुसूची में नाम बा, लेकिन 20 करोड़ आबादी के बोले वाली भोजपुरी भासा के आठवीं अनुसूची में रखे में काहें तकलीफ होता ? ई बात समझ के परे बा।

भारत देश के पहिला राष्ट्रपति स्व. राजेन्द्र प्रसाद भोजपुरिया रहीं, देश के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अब जवना संसदीय क्षेत्र से बानी, ऊहो भोजपुरिया। तब्बो हमनी के भासा के कदर करे वाला कोई नइखे। हालांकि अब हमार उम्मीद जाग गइल बा, कि नया प्रधानमंत्री जी जरूर ए बात पर विचार करब, की ए इलाका के लोग के मान सम्मान मिले, और भोजपुरी भासा के संवैधानिक दर्जा प्राप्त होखे, यानी भोजपुरी भासा के अच्छा दिन आवे के उम्मीद अब काफी प्रबल हो गईल बा। प्रधानमंत्री जी मूलरूप से गुजरात से बानी, लेकिन इंहां में एक खासियत बा, ई जहां भी जानी, उहां से आपन संबंध जोड़ लेबेनी, लोगन के वोह संबंध के बारे में ऐतिहासिक जानकारी से परिचित करवावे नी। चुनावो के दौरान प्रधानमंत्री जी कई मंच से भोजपुरी में बोले के प्रयास कइनी, और लोग के अपना से जोड़नी। प्रधानमंत्री जी के इ प्रयोग सफल रहल, उहांके प्रचंड बहुमत से देश के जनता प्रधानमंत्री के कुर्सी देहलस। साथ साथ भोजपुरी भासी क्षेत्र में पड़े वाला संसदीय क्षेत्र में प्रधानमंत्री जी के 90 फीसदी से ज्यादा सीट मिलल बा, चाहे ऊ उत्तरप्रदेश होखे, या बिहार या झारखंड या मध्यप्रदेश।

अब, एह लेख के जरिए हम प्रधानमंत्री जी के एगो महत्वपूर्ण तथ्य के जानकारी देत बानी, दरअसल भोजपुरी भासा के लिपि 'कैथी' ह, आ गुजराती भासा के लिपि 'कैथी' हऽ। मतलब भोजपुरी आ गुजराती दूनो भासा के एकही लिपी से जुड़ाव बा। भोजपुरी आ गुजराती संस्कृतियो में समानता बा, गुजरात में सब लोग के प्यार से 'भाई' बुलावल जाला, और हमार भोजपुरी संस्कृतियो में भी 'भाई' का संबोधन कइल जाला। यानी प्रधानमंत्री जी के प्रदेश गुजरात से भोजपुरी भासा के संबंध काफी गहरा बा, अब रउरा से उम्मीद बा की, भोजपुरी भासा के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करके 20 करोड़ भोजपुरियन के सालों पुरान मांग के पूरा करब। एन डी ए सरकार का समय में मैथिली के मान्यता मिलल रहे। कवनो कारन से भोजपुरी के मान्यता अटक गइल रहे। आज एक बेर फिर एन डी ए के सरकार आइल बा एह से भोजपुरी के मान्यता मिले के आस बढ़ गइल बा।

हमनी के भोजपुरी क्षेत्र से संसद में पहुंचल सब सांसद महोदय लोगन से निवेदन बा, कि रउरा सब भोजपुरी भासा से प्रधानमंत्री के जरूर बताई ताकि, रउरा सब के भासा के मान सम्मान मिले, अउर भोजपुरी भासा के लोग के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक सांस्कृतिक, साहित्यिक आ मनोवैज्ञानिक रूप से बढ़ावा मिल सके। कुछ महीना पहिले छपरा से सांसद राजीव प्रताप रूड़ी भोजपुरी खातिर संसद में जरूर, सवाल उठवले रहलन बाकि गंभीरता से ना काहे कि ऊ संसद के पहिला बइठक रहे ओ घरी संसद में अउरियो सदस्य उनका पक्ष में बोलल रहलन। अब पूरा उम्मीद बा कि भोजपुरी खातिर उठल आवाज के समर्थन, अउरू सांसद लोग मजबूती से करिहन। भासा के नेइं पर भोजपुरियन के विकास के सेहरा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी के कपारे बान्हे में खुद भोजपुरी क्षेत्र के सांसद तबे सफल होइहन।

वर्तमान सरकार से उम्मीद बा, की कम से कम एकर शुरूआत भोजपुरी भासा बोले वाला क्षेत्रन में स्थित आकाशवाणी आ दूरदर्शन केंद्रन से, भोजपुरी भासा में समाचार आ अन्य कार्यक्रम का प्रसारण शुरू करके हो जाए के चाही। ई बात तय बा कि एह कार्यक्रम के शुरू होखे से, सरकारी मीडिया केंद्रन के अच्छा खासा राजस्व के प्राप्ती होई। एकरा खातिर भोजपुरी में विज्ञापन देबे के प्रोत्साहन दिहल जा सकेला। 20 करोड़ भोजपुरिया एगो बहुत बड़ उपभोक्ता वर्ग बा। चतुराई से अगर उनकर उपयोग

लक्ष्य कइल जाई त काफी फायदा मिल सकत बा। भोजपुरी चैनल, भोजपुरी फिल्म, आ भोजपुरी गाना के व्यावसायीकरण एकर, जीवंत उदाहरण बा। सरकार के एह पहल से एह क्षेत्र के लोगनों के फायदा मिली, अउर उनकर आर्थिक आ सामाजिक दूनो स्तर पर विकास होई।

हम भोजपुरी भासा क्षेत्र से जुड़ल, ओह सब हिन्दी साहित्यकारन से निवेदन करत बानी कि, साथी लोग अब लंगी मारल छोड़ दऽ, अउर सहयोग करऽ लोग। ई बात इयाद रखऽ लोग कि अंग्रजी के शान में हिन्दी के कम दुरगति आ फजिहत नइखे आज अंग्रेजी के बढ़त बर्चस्व में हिन्दी के हक हैसियत खुदे खतरा में बा। अउर ओकरा में भी चुनौती कम नइखे। माननीय सर्वोच्च न्यायालय में दोषी व्यक्ति जब हिन्दी में सजा संबंधी सूचना भा हिन्दी में फैसला के कापी मांगत बा त अनुवाद के सुविधा ना मौजूद भइला के हवाला देके ओके टालल ठीक नइखे। ई ओकर संवैधानिक के साथ–साथ मानवीय अधिकार बा। आज हर भारतीय भासा हिन्दी का साथ–साथ बढ़े पनपे के अधिकार राखत बा। भोजपुरी से ना, बलुक अंग्रेजी से रउरा खतरा बा। हिन्दीवादी भाई लोग, राउर घर खुद शीशा के बा, त दुसरा घरे पत्थर मत फेंकी। भोजपुरी के संवैधानिक दर्जा प्राप्त करें में अडंगा लगावे के प्रयास क के अपने गोड़ पर टाँगी (कुल्हाडी)मत चलाई।

सोच में बदलाव ले आवे के कोशिश होखे के चाही। बाबू कुंवर सिंह, चंद्रशेखर आजाद, मंगल पाण्डेय, चित्तू पाण्डेय, जइसन कांतिकारी, भोजपुर के माटी पर जनम लेले बाड़े। कहीं फिर, भोजपुरी के मान सम्मान खातिर बूढ़–जवानन के, लाठी उठावे के जरूरत पड़ जाई, त छुपे के जगह ना मिली। भोजपुरी भासा के आठवीं अनुसूची में रखे के मांग संवैधानिक बा, अउर हर स्तर पर एकर समर्थन होखे के चाही। एह ख्याल से कि एह कदम से हिन्दी अउर मजबूत होई।

हम, आपन पत्रकारिता प्रोफेशन के सिलसिला में हमेशा देश के अलग अलग प्रांत में जानी, अब तक हमार दौरा देश के हर प्रांत में हो गइल बा। लगभग हर महीना कवनो ना कवनो प्रदेश के यात्रा पर रहेनी। एह यात्रा के दौरान हमारा मन में टीस रहेला कि संवाद, संपर्क, आ लिखे पढ़े, मामला में भोजपुरी भासा के ऊ दर्जा नइखे मिलत जवन अन्य प्रदेश के भासा के मिलत बा। खुद भोजपुरी बोले वाला लोग, भोजपुरी में लिखे पढ़े से कतराता त दोसरा के का कहल जाव। हमनी के खुद सम्मान पूर्वक निष्ठा के साथ अपना मातृभाषा में लिखला पढ़ला के आगा बढ़ावे के चाही भले एमे हमनी के निजी नुकसाने काहे ना होखे। हमनी के ई समझे के जरूरत बा कि दुसरा भासा सभन के संवैधानिक दर्जा मिल गइला के बाद ओह लोगन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आ मनोवैज्ञानिक हर तरह के विकास होत बा।

हमरा सामने कई प्रदेश के भासा के विकास से उहां के सामाजिक–आर्थिक विकास के केस स्टडी मौजूद बा, जवन आगे आवे वाला अंक में रउरा सब के साथ आंकड़ा आ तथ्यन के साथ रउरा सब से साझा करब। तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयाली, मराठी, गुजराती, बंगला, पंजाबी, हरियाणवी आदि 2 दर्जन भासा के उदाहरण, आंकडनं के साथ मौजूद बा, कि ये भासा के संवैधानिक दर्जा प्राप्त होखे से, संबंधित भासा के लोग के केतना लाभ मिल रहल बा। ■ ■

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि भाई लोगन से अनुरोध.....

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा टाइप कराके रचना–सामग्री आ साथ में संक्षिप्त–परिचय आ फोटो ग्राफ भेजीं।

(2) पत्रिका में रिपोर्ताज रपट, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे।

(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं।

(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं। संपादक का नाँवें ईमेल पर फोटोग्राफ भेजल जा सकेला बाकि लिखित रचना के प्रिन्ट डाक/कुरियर से भेजल जरूरी बा।

(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

कसौटी / समीक्षा

(एक)

कविता में कुछ खीस, कुछ प्रीत

■ विष्णुदेव तिवारी

'गीत- अगीत' बरमेश्वर सिंह, भोजपुरी संस्थान, पटना: संस्करण-पहिला-2014: मूल्य- एक सौ रूपये मात्र'

''चुक ना पाइल देनदारी, जे कबो उधार लिहले बीकि गइली सूद में ही, लाडली, लाचार भइलें नांव जिनकर बेंचि के आबाद होता कुरसी, हो वोट खातिर महज जिनकर नांव के बा सुरखी, हो फूंक S उनकर जान साथी ! युग के बा आह्वान साथी ! !'' **पृष्ठ: 54**

दिन दुलहा के सांझ सखी के चहकत नजर मिल किरिन इंगुरिया रूप धरे बा, हर सिंगार झरल तुलसी चउरा दीप रखाइल एक जमाना पर'' **पृष्ठ :39**

उपर आइल ई दू कविता-अंश बरमेश्वर सिंह के हाले में प्रकाशित काव्य पुस्तक गीत-अगीत से लिहल सर्वथा दू भिन्न भाव बोधन के व्यक्त करता बा। एगो जन शोषण के दारूण-व्यथा, एगो प्रेम आदमी के धरती पर वजूद केविकासात्मक प्रकिया के हिस्सा ह आ ई प्रकिया अगढ से सुगढ का ओर बढत चलेले। वस्तुतः विकास के प्रकिया के पद सोपान संस्कृति के सोपान ह। विकसित हो चुकल समाज में शोषण निम्नतम स्तर पर होला। तथाकथित सभ्य समाज जेकर सांस्कृतिक विकास भोथर होला घोर मानवीय शोषण केसाक्षी बनेला। साधक रचनाकार्य एह सभ्य समाज के मुखर आलोचक होला आ शोषित पक्ष के आवाज बनेला । बेद ऋचा के दर्शक साधक विश्वामित्र साहित्य आ समाज दूनों जगत शोषितन के नेतृत्व करे वाला सर्जक रहले। वरमेश्वर सिंह एही विश्वामित्रीय परंपरा के पहिल कविता-अंश किसान मजदूर के जिनगी के स्याह पक्ष आ अनका के लूटे वला लोकतत्रीय ढांचा के अमर नेता लोग के हाव भाव सोभाव आ कारस्तानी के अंकन करत, दर्द के साथ कहत बा फूँक उनकर जान साथी ! 'केकर जान नेता लोक के ना एकरा से का भइल आ का होइ अइसन किसान मजदूर लोग जे अपना शोषण कर्ता आ अपना हक के जानियों के अनजान बनल रहत बा, राजनितिक शक्ति के मुखापेक्षी बनल रहत बा। किसान मजदूर के जान अइसन होखे जे शोषक समुदाय के समूल नाश कर सके। एगो कायर, डरपोक आ कमजोर जान के अगहा हमतगर आ निर्माण होखे, बाकिर ई ध्वंश शरीर के ना, ओकरा भीतर रहे वाला हियाव के। शोषित आ शोषक दूनों पक्ष में से केहू के शरीर के अंत ना, ओह सोच के अंत जे केहू शोषित होखे खातिर विवश होला कवि शोषक आ शोषित दूनों के वैचारिक चेतना के एके प्लेटफार्म पर खाड़ कइल चाहत बा।

'गीत अगीत के भूमिका लेखक डॉ0 नीरज सिंह बरमेश्वर सिंह के कविताई के समझावे के क्रम में कबीर तुलसी के नांव लेले बाड़े सम्पूर्ण मानवीय संस्कृति के बहुत कुछ इन्हन लोग के रचनन में सुरक्षित बा। सुन्दर के एगो कमनीय क्षण होला- प्रिय के आगमन। शोषण के बंध गायब त जीवन के अनुबंध उपस्थित, जहां प्रकृति के सरोकार के साथ मन प्राण आ आत्मा के आनंद दायक व्यवहार फेर से शुरू हो जाला तुलसी चउरा पर दीया रख के।' बरमेश्वर के कवि शब्द चयन के प्रति सजग बा। एकरा से कविता बोधगम्य हो सकलि बा आ यथा स्थान उक्ति के बांकपन आ श्लेश से रसानुभूति होत बा। 'दिन दुलहा से सांझ सखी के चहकत नजर मिलल' कविता पंक्ति से सामान्य बोध त इहे भइल कि दिन के दुलहा आ संझ के सखी मान के कविता मानवीकरण के जरिए दूनों में प्रेम कटाक्ष के बात कहत बा। सवाल उठत बा सुबह से सांझ तक पूरा समय खंड त एगो दिने के अंतर्गत आवेला त फेर दिन के दुलहा बना के ओकरे एगो खंड सांझ के ओकर सखी बना के कवि कवना अभिसमय के पालन कर रहल बा। एहिजा दिन से तात्पर्य सूर्य से बा पुरापन में सूर्य के दूगो पत्नी छाया आ संध्या बतावल गइल बाड़ी। छाया सूर्य के साथे रहेली आ संध्या भ सांझ के सूर्य से मिलन तनिके देर खातिर हो पावेला तले रात आ जाले। एह से संझ सखी भइली।

सूर्य आ संध्या के इ प्रेम बतावत बा कि शरीर से अलगो प्रेम के सत्ता हो सकत बा। दुसरकी कविता पुस्तक होखे के चलते बरमेश्वर सिंह के कवि रूप प्रत्यक्ष हो जात बा। मानव, ओकर संस्कार सोभाव, ओकर रति घृणा, करूण सेवा

सहिष्णुता, कृपा, सौन्दर्य कुरूपता आ प्रेरणा के संगे राजनितीक दुष्चक्र दुरभिसंधि तिकड़म आदि घृणित कदाचार के अंकन इहां भइल बा। बरमेश्वर के कविता के विशेष गुण बा ओकर अभिव्यंजन सामर्थ्य ओकर विविध सौन्दर्य छटा। यदि कविता प्रकृति के बा ता व्यंगयार्थ से उ संस्कृति आ राजनितीयों पर बइठ सकत बा। प्राकृति के गंभीरता संस्कृति के उत्स में पर्यवसित होइ आ ओकर वीभत्स उददामता राजनीति के कर उदंडता में प्रविष्ट होइ। शक्ति आ सत्ता के शीर्ष पर आसीन जन प्रतिनिधिय के स्वार्थपरता के निम्नलिखित पंक्तियन में मर्मस्पर्शी बा ''बादरिया बा पसरल आकाश मेंधरती बेचारी बा डूबल पियास में'' **पृष्ठ :38**

बरमेश्वर सिंह के संवेदी मन आज के आलोचना आ इतिहास लेखन के संतुष्ट नइखे। आपन बा तबे उ लिखत बाड़े ''इतिहास के दुर्दशा दू कारण से होला। एक त इतिहास लेखक के अज्ञानता के चलते अ दूसर इतिहास लेखक के बदनीयत का चलते। दुर्भाग्य से भोजपुरी में इतिहास लिखे के ठेका आज एही दूनो तरह के लोग ले लिहले बाड़े'' आपन बात हमरा कुछ कठोर सत्य अइसन बाड़े स, जेकरा के नकारल नइखे जा सकत। सामान्य प्रतिभा के आलोचक यदि समकाल के होखे त विशेष प्रतिभा के साहित्यकार के तवज्जो ना देला। इ अज्ञानता के वजी से ना आलोचक के हीनताजन्य कुंठा के वजह से होला। 'निराला' के संगे त छपलो में कठिनाई रहे। ■ ■

समीक्षा-2

एगो नया कथा-विन्यास

■ शशि प्रेमदेव

'बदरी से झाँकत चान' (उपन्यास): लेखक– अनन्त प्रसाद 'राम भरोसे'
प्रकाशक– नागरी बाल साहित्य संस्थान, सागरपाली, बलिया–277001

वरिष्ठ साहित्यकार अनन्त प्रसाद – 'राम भरोसे' के उपन्यास 'बदरी से झाँकत चान' कम–से–कम एह दृष्टिकोण से तऽ –'नावेल' कइले जा सकेला कि एके तइयार कइला में कथा शिल्प के स्तर पर एगो प्रयोग करे कऽ कोशिश कइल गइल बा। बाकिर हमरा समझ से ई प्रयोग बहुत सराहनीय नइखे। अइसन बुझाता कि पहिले तऽ उनन्यासकार आजादी के आंदोलन में पूर्वांचल के लोगन के योगदान का पृष्टभूमि में, कथा के ताना–बाना बीने शुरू कइले बा बाकिर बाद में कथा के आधार भूमि जस–के–तस छोड़ि के एगो नये कथानक के रचना करे पर विवश हो गइल बा।

उपन्यास के पहिलका सात गो अध्याय में एकोर से आजादी के आंदोलन में तमाम ज्ञात–अज्ञात सेनानी लोगन के त्याग–बलिदान अउर ओह् लड़ाई में बलिया, गाजीपुर कऽ सक्रिय सहभागिता कऽ वर्णन बा जबकि आठवाँ से लेकर बीसवाँ अध्याय तक पूर्ववर्ती अध्याय से असंपक्त एगो नये कथा शुरू हो गइल बिया। एह् कथा के समय–संदर्भ भलहीं आजादी के लड़ाई कऽ होखे बाकिर एकर कवनो झलक पूरा कथा विस्तार में अंत ले नइखे लउकत। एह् में पूर्व जमींदार कुँवर जी, गोपाल जी, सबितरी, बुलाकी, भूपाल, भक्तिन, भगत जी, रमेश, शालिनी आदि पाचन आ थाना–कचहरी के माध्यम बना के, एगो अलगे कथा कहल गइल बा। पहिलका सात अध्यायन आ शेष उपन्यास का बीच अंतः संबंध ना रहल खटकत बा आ दूगो अलगा–अलगा विषय–सामग्री के जबरिया एक्के में साटि दिहला मतिन बुझाता। कहे कऽ मतलब ई बाटे या तऽ उपन्यास में आठवाँ अध्याय से शुरू हो रहल कथा का साथे स्वतंत्रता–संग्राम बाली बात के आगे बढ़ावल चाहत रहे या ओकरा के एकदमे हटा दिहल चाहत रहे। स्वतंत्रता आंदोलन के तथ्यात्मक वर्णन कथा विन्यसि में अनासो साटल लागत बा।

एह् विसंगति के नजर अंदाज कइल जाव तऽ बिना कवनो लाग–लपेट के कहल जा सकेला कि भाषा, शैली आ कथ्य की रोचकता का दृष्टि से 'बदरी से झाँकत चान' पठनीय उपन्यास बा। एक ओर जहवाँ एह् में स्वातंत्र्योत्तर पीढ़ी खातिर स्वतंत्रता'–संग्राम आ सेनानियन का बारे में जानकारी बा तऽ दूसरा ओर आजादी का बाद उत्तर भारत (विशेष रूप से पूर्वांचल) के गँवई समाज का भीतर तेजी से घुसपैठ करत कुंठा, द्वेष, चालबाजी, नशाखोरी, शोषण आ व्यभिचार जइसन विकृतियन के चित्रण काल्पनिक आधार कइल गइल बा। शिल्पगत कमी का बावजूद 'बदरी से झाँकत चान' एगो रोचक आ पढ़े–पढ़ावे जोग उपन्यास बा। मुद्रण, गेटअप आ प्रस्तुतिकरण बहुत बढ़ियाँ बा। ■ ■

आत्मानुभूति के सहज अभिव्यक्ति

■ डा0 अशोक द्विवेदी

'दुनिया के शतरंज बिछल बा' (कविता संग्रह) पाण्डेय कपिल

'शतरंज बिछल बा' भोजपुरी के यशस्वी कवि कथाकार का लमहर सिरजनशील रचनात्मकता के सिद्ध करेवाला कविता–संचयन ह। हालांकि –भोर हो गइल' (1971), कह ना सकलीं (1995) आ 'जीभ बेचारी का कही' आदि से उनका काव्य–प्रतिभा आ विवके के पता भोजपुरी जगत के चल गइल रहे। जिनिगी का आखिरी पड़ाव पर पहुँचियो के गीत–गजल लिखला, गवला आ गुनगुनइला के लकम एह समर्पित रचनाकार से ना छुटल। ई कविता–संग्रह उनका एकावन गो कवितन के अइसन संग्रह बा जवना में रचनाकार अपना उमिर का आखिरी दौर में पहुँच के दुनियावी शतरंज के बिसात पर जिनिगी के श्ह–मात देख रहल बा। संवेदना के धरातल पर अपना सुधियन के सुहुरावत अनुभूत–सत्य के उद्घाटन कर रहल बा। अइसे त एह संग्रह में गीत आ फ्री–वर्स संकलित बा बाकी अधिकांश गजले बा। संग्रह के रचना–संसार से गुजरत हमके लागल कि कवि अपना आत्मानुभूति आ 'निज' के सहज आ मुखर अभिव्यक्ति करत–सहचरी पत्नी, इयार–दोस्त, गाँव–घर, समाज–व्यवस्था, देश–परदेश आ गृहस्थी के बीच अनुभूत सत्य के स्मृति–चित्रण का साथ उकेरत बा।

उस्ताद आ आलोचक लोगन के पाण्डेय कपिल का एह गजलन में सपाट बयानी लउक सकेले बाकी हमरा लेखे ई उनकर सादगी आ साफगोई ह जवन उनका शेरन में बे सवख–सिंगार आ भाषायी जादूगरी के, प्रगट भइल बा। भाव–संवेदना आ जीवन के सहजता एमें छलकत मिली–

का पता, कब तलक चले के बा
मोम का कब तलक गले के बा
नेह जब तक बचल रही तब ले
जिन्दगी के दिया जले के बा

-------XXX-----

अब त ईहे गाँव–नगर आपन बाटे
बाकिर मन तरसेला शीतलपुर खातिर

-------XXX-----

इहवाँ माहौल नइखे कि कविता लिखीं
दिनवाँ ऊसठ बुझाता जनन्नाथ जी

-------XXX-----

बुढ़वा–बुढ़िया हमनी दुनू परानी जी
अपना गिरही में हमनी खुख बानी जी

संग्रह के जादातर गजल अपना गाँव–नगर आ पटना का स्थायी निवास से अलगा मुम्बई प्रवास में लिखाइल बाड़ी स। कवि सुरूवे से खेमा आ वाद से अलगा रहल बा आ एहू संकलन में ऊ कवनो प्रकार के पक्षधरता भा नकली प्रतिबद्धता के स्वांग नइखे कइले। मनुष्य आ मनुष्य के जीवन के राग–विराग, सुख–दुख आ चिंता–फिकिर संग्रहीत कवितन के मूल स्वर बा। जिनिगी के लय में लीन कवि के इहे सुभावित रचनाधर्मिता ओकरा कवि–कर्म के ईमानदारी के प्रमान बा।

संग्रह के मुद्रण–कलेवर आ प्रस्तुतीकरण आकर्षक बा। भोजपुरी के जाने–सुने आ अपनावे वाला पाठकन खातिर कवनो बड़ रचनाकार के एसे सुंदर तोहफा दूसर ना हो सके। ■ ■

पाती अक्षर-सम्मान 2014 आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया के छठवां अधिवेशन

पछिला साल नियर एहू साल भोजपूरी के अग्रणी साहित्यक/सांस्कृति पत्रिका 'पाती' का ओर से ''पाती अक्षर-सम्मान ''समारोह :विश्व-भोजपुरी सम्मेलन बलिया में के छठवाँ अधिवेशन टाउनहाल, बलिया में आयोजित कइल गइल। इह संयुक्त समारोह क मुख्य अतिथि, विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अन्तर्राष्ट्रीय माहसचिव डा0 अरूणेश नीरन आ विशिष्ट अतिथि श्रीमती डा0 प्रेमशीला शुक्ला का उपस्थिति में, ओ लोगन अंगवस्त्र आ नारियल से सम्मानित कइला का बाद 'अक्षर-सम्मान समारोह' के शुभारंभ दीप-प्रज्जवलन आ सरस्वती-प्रतिमा पर माल्यार्पण का बाद भइल। बरिस 2012 से : पाती' पत्रिका अपनामंच से जुड़ल भोजपुरी के चर्चित साहित्य कारन के गरिमामय सम्मान देबे शुरू कइले रहे। एह बेर ई ''अक्षर-सम्मान'' मंच से जुड़ल मउ के द गो यशस्वी भोजपुरी कवियन श्री दयाशंकर तिवारी आ डा0 कमलेश राय के दिहल गइल। शाल, स्मृति चिन्ह, प्रमाणपत्र आ नारियल से सम्मानित करे वाला ''पाती'' के संपादक डा0 अशोक द्विवेदी आ मुख्य अतिथि डा0 अरूणेश नीरन, सम्मानित कवियन का सतत् लेखन के सराहना कइल। ''भोजपुरी हिन्दी के भेद से भाषिक-अस्मिता के नुकसान विषय पर भइल विचार संगोष्ठी के विषय-प्रवर्तन श्री तुषरकान्त उपाध्याय, आ विष्णुदेव तिवारी कइल लोग। डा0 रघुवंश मणि पाठक एह विषय पर आपन आलेख पाठ कइलन। विशिष्ट अतिथि डा0 प्रेमशीला शुक्ल, भोजपुरी का उत्थान के हिन्दी का उत्थान से जोड़त कहली कि भोजपुरीहा, हमेशा अपना भाषिक निजता आ अस्मिता के परवाह ना क के हिन्दी के समृद्ध करत आइल बाड़न स तबो कुछ तथाकथित हिन्दीवादी भोजपुरी का भाषिक निजता आ ओकरा स्वतंत्र विकास के नजर अंदाज करत आइल लोग। आज भोजपुरी भाषा के साहित्य अपना निरंतर विकास आ समृद्ध लेखन से ई साबित कर देले बा कि ओकरो के, दुसरा भारतीय भाषा सब लेखा संवैधानिक मान्यता आ सम्मान के अधिकार बा। हिन्दी त अपना बोलियन आ लोकभाषाई साहित्यक समृद्धिये का कारन कि हिन्दी क श्रेष्ठ कहाये वाला साहित्य भोजपुरी क साहित्य, हिन्दीये क साहित्य मानल जाये के चाही। विश्व सहित्य में 'रामचरित मानस' अवधी भाषा में लिखाइल तब्बो ऊदेश, प्रान्त आ भाषा के सीमा तूरत जनप्रिय बा। कुछ कथित हिन्दी वादियन का अतार्किक बिरोध से भोजपुरी अपना श्रेष्ठ साहित्य का बावजूद, भारतीय सम्बन्ध में, सरकारी तौर प भले शामिल ना कइल गइल बाकि एकरा निजता में अतना शक्ति बा कि ऊआपन जगह खुद बना ली। भोजपुरिहन के एह भाषिक निजता' का सम्मान आ स्थान खातिर सचेत रहल ज्यादा जरूरी बा। विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया इकाई का ओर से छठवाँ अधिवेशन के पत्रक, कोषाध्यक्ष आ सचिव श्री हीरालाल 'हीरा' पढ़लन आ सम्मेलन का मासिक बइठकियन का साथ निरन्तर प्रकाशित होत रहे वाला पुस्तकन क हवाला देत कहलन कि भोजपुरी सम्मेलन का एह मंच से, हमहन के निरंतर कुछ अच्छा करत रहे के प्रेरना आ उर्जा मिलेले। विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया के एह आयोजन में, शैलेन्द्र आ ओमप्रकाश के गायन से श्रोता भाव विभोर रहलन। दुसरका सत्र में, प्रतिनिधि काव्य संगोष्ठी रहे, जवन कवनो स्तरीय कवि सम्मेलन से कम ना लागल। बाहर का जनपद से आइल कवि भालचंद्र त्रिपाठी, दयाशंकर तिवारी, आनन्द संधिदूत, मिथिलेश गहमरी, कमलेश,राय, अक्षय कुमार पाण्डेय, गिरिधर करूण भगवती प्रसाद द्विवेदी, तुषारकान्त,विष्णुदेव तिवारी, कुबेरनाथ मिश्र विचित्र का साथ डा0 अशोक द्विवेदी,हीरालाल हीरा, शिवजी पाण्डेय, विजय मिश्र,शशिप्रेम देव, त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम',डाठ जनार्दन राय,डा0 शत्रुधन पाण्डेय आदि का स्तरीय गंगा-जमुनी काव्य-धारा देर साँझ ले सुधी-सुविधा जन से खचाखच भरल सभागार के रस से आप्लावित करत रहे। अपना भाषा के सर्जनशील काव्य के सुनि के : पहिली बेर भोजपुरी रचनन के सुने वाला लोग अचंभित रहे। अब तक हिन्दी उर्दू के कवि सम्मेलन-मुशायरा सुने के आदी लोगन के बुझाइल कि 'भाषिक निजता' के महत्व का होला। ''पाती'' पत्रिका खाली भोजपुरी के साहित्यक मंच ना होके, समारोह के प्रथम सत्र के संचालन शशिप्रेमदेव आ दुसरका सत्र के संचालन कमलेश रायय कइलन। अध्यक्ष मंडल में सर्व श्री डा0 रघुवंश मणि पाठक, डा0 जनार्दन राय, दयाशंकर तिवारी, डा0 श्रीराम सिंह, डा0 शत्रुघ्न पाण्डेय रहे लोग। अधिवेशन का बाद विश्व भोजपुरी सम्मेलन का नया कार्यकारिणी के गठन भइल,जवना में अध्यक्ष श्री विजय मिश्र आ उपाध्यक्ष डा0 जनार्दन राय आ डा0 श्रीराम सिंह का साथ सचिव मण्डल में, सर्व श्री हीरालाल हीरा, शिवजी पाण्डेय, शशिप्रेम देव,राजेन्द्र भारती आदि

के नॉव का साथ कार्यकारिणी के मानद सदस्यन में डा0 अशोक द्विवेदी,डा0 शत्रुघ्न पाण्डेय, कन्हैया पाण्डेय, राजगुप्त, त्रिभुवन प्रसाद सिंह, प्रीतम, का साथ सक्रिय सदस्य का रूप में अनन्त प्रसाद रामभरोसे, व्रजेन्द्र प्रसाद अनाडी,गयाप्रसाद प्रेमी,शंकरशरण, बरमेशवरनाथ शर्मा, मृदुल, फतेहचंद बेचैन, नवचंद्र तिवारी,अंजनी कुमार उपाध्याय, महावीर प्रसाद गुप्ता, डा0 अमरनाथ शर्मा आदि प्रमुख रहे। ■ ■

गतिविधि-2 बिहार भोजपुरी अकादमी के एगो सुंदर गोष्ठी

■ विष्णुदेव तिवारी

संजय गांधी जैविक उद्यान, पटना के सभागार में अकादमी के एगो सुंदर गोष्ठी 21 जून 2014 के सम्पन्न भइल। श्री अभय पांडेय आ तुषारकांत उपाध्याय के संयोजन में 'अकादमी के दशा आ दिशा' पर भइल एह गोष्ठी के अध्यक्षता वरिष्ठ रचनाकार डा. तैयब हुसैन पीड़ित कइले। विशिष्ट अतिथि रहले सहृदय समालोचक डा. शंभूशरण सिन्हा, संचालन कइले प्रसिद्ध साहित्यकार भगवती प्रसाद द्विवेदी। आयोज के पीछे सुधि साहित्यकार बरमेश्वर सिंह के खास भूमिका रहे, बाकिर बरखा आ खराब स्वास्थ्य के कारन ऊ शामिल ना हो सकले। अकादमी के अध्यक्ष डा. चन्द्रभूषण राय अपना विद्वता, विनम्रता आ मधुर व्यवहार से सबकर दिल जीत लिहले। ऊ कबो अपना के भोजपुरी में आगा बढ़ के नाम रखले। भोजपुरी के तोपले ना। एह आयोजन में जे भी शामिल भइल रहे ओकरा मन में भोजपुरी भाषा, सहित्य आ संस्कृति के प्रति कुछ करे के सपना आ ललक रहे तअ कुछ शंको आ सवाल रहे। 'पाती' के गुणग्राही पाठकन खातिर बतकही के महत्वपूर्ण अंश क्रमशः प्रस्तुत कइल जा रहल बा।

भगवती प्रसाद द्विवेदी: कहले अध्यक्ष जी (अकादमी के) के पहल एगो लम्बा सन्नाटा के बाद स्वागत योग्य कदम बा

डा. चन्द्रभूषण राय (अध्यक्ष, बिहार भोजपुरी अकादमी पटना): छात्र राजनीति में रहला से साहित्य के विशेष लगाव ना रहे, बाकिर आज मातृभाषा के सेवा करे के मोका मिलल बा तअ ओकरा के ठीक से कइल जाय। रउआ सब मार्गदर्शन करहीं। अबे अकादमी के माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार के पास भोजपुरी भाषा के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करे खातिर अनुरोध पत्र भेंजले बा। हाल-फिलहाल भिखारी ठाकुर पर एगो संक्षिप्त कार्यक्रम भइल हा। दिसम्बर 2014 में 'श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल' में एगो अन्तर्राष्ट्रीय समागम करे के मन बा। तले कुछ विचार गोष्ठियन के आयोजन कइल जाव, जेसे अपना भाषा-संस्कार के जाने-समझे आ ओह से जुटे के अवसर मिले। अलग-अलग जगह पर काम करत लोग जब एक जगह जुटेला त हौसला मिलेला आ एकल काम आगे बढ़ेला।

अभय पांडेय (संयोजक) : आज भोजपुरी संस्कृति बलुक कहीं तक पूरा लोक संस्कृति आ साहित्य पर खतरा बा। ई संकट अप संस्कृति के फइलाव, भद्दा गायन आ भद्दा बजारू फिल्मन के कारन बा। भोजपुरी जगत में पुनर्जागरण के आवश्यकता बा, जेमे साहित्य लीड रोल में होखे। पुनर्जागरण के काम साहित्यकारे करेलन। हमनी के कोशिश रही कि भोजपुरी अकादमी, बिहार के साहित्यिक कार्यक्रम प्रखंड स्तर तक ले जाव।

तुषाकांत उपाध्याय (संयोजक): हम आपन बात 'पाती' (बलिया) के संरक्षक के रूप में रखत बानीं। डा. अशोक द्विवेदी, चूकि आवश्यक काम से बहरा होखे का वजह से एहिजा उपस्थित ना हो सकनीं, एह से ऊहों के बात हमरा रखे के बा। अकादमी अपना अकादमिक कार्य का ओर लवटे। एकरा अतीत के बहुत कुछ बहुत शानदार रहल बा। अकादमी के अपना पत्रिका के पुनर्प्रकाशनों कइल जरूरी बा आ ईहो देखल जरूरी बा कि नवकी पीढ़ी सृजन कार्य से जुटे। भिखारी ठाकुर पर काम होखे। ऊ हमनी के गौरव बाड़े, बाकिर हमनी के एहू पर ध्यान देवे के होई कि भोजपुरी उनहीं के पर्याय बन के मत रह जाव। भोजपुरी भाषा साहित्य के दूसरा विभूतियनों पर काम होखे के चाहीं, जेसे साहित्य आ संस्कृति के बृहत्तर क्षेत्र आ परिप्रेक्ष्य में समझे-बुझे आ अध्ययन करे के नया-नया झरोखा खुलअस।

प्रमोद किशोर तिवारी : जवना उद्देश्य खातिर अकादमी के गठन भइल रहे ऊ पूरा ना हो सकल। फंड के अनुपलब्धता हरमेस बाधा रहल। अकादमी के कार्यक्रम के एगो रोड मैप बने के चाहीं।

(दोसरा वक्ता के आमंत्रित करे से पहिले संचालक भगवती प्रसाद द्विवेदी कहलन कि आर्थिक पक्ष पर त संस्थे नू विचार करी। साहित्यकार लोग त साहित्ये पर विचार करी।)

डा. जयंकांत सिंह 'जय' (भोजपुरी विभाग लंगट सिंह महाविद्यालय मुजफ्फरपुर, बिहार): अकादमी के उद्देश्य आ बायलॉज स्पष्ट होखे के चाहीं। अकादमी 'अकादमिक' कार्य करे। साहित्य संगे-संगे इतिहास, व्याकरण आ भाषा विज्ञानों पर काम होखे के चाहीं।

डा. ब्रजभूषण मिश्र (कवि/ समालोचक): प्रकाशन के क्षेत्र में अकादमी के काम सराहनीय बा। दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती के 'बउधायन' पं. गणेश चोबे के भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस आदि कई कृतियन के प्रकाशन एकर प्रमाण बा। आगहूं श्रेष्ठ प्रकाशन होत रहे के चाहीं।

विष्णुदेव तिवारी (उप संपादक पाती) : अकादमी निपुन साहित्यिक टीम के गठन क के भोजपुरी साहित्य के इतिहास पर सम्यक काम करे आ इतिहास ग्रंथ के प्रकाशन करे। आज भोजपुरी साहित्य के इतिहास लेखन भ्रम आ विभ्रम के शिकार बा। अज्ञान, परिश्रम के कमी, चोर कटारी, तथ्यन के विश्लेषण क्षमता आ लोचकीय दृष्टि के अभाव से जवन इतिहास लिखाई ऊ साहित्य के सब कइल-धइल खा जाई। विश्वविद्यालय के प्रकाशन, वाराणसी से छपल 'भोजपुरी के इतिहास' में ई सब दुर्गुण सहजे देखल जा सकता बऋ

डा. अजय कुमार ओझा (संपादक निर्भिक संदेश) : भोजपुरी अकादमी, बिहार अपना स्वर्णिम अतीत के देखि के अकादमिक कार्य करे।

डा. आसिफ रोहतासवी (हिन्दी विभाग साइंस कालेज, पटना/ संपादक परास): अकादमी पत्रिका के प्रकाशन जतना जल्दी शुरू हो जाय, ओतने अच्छा। प्रकाशन में नांव ना, रचना के महत्व आब। ना खाली इतिहास बलुक हर विद्या के श्रेष्ठ रचनन के अलग-अलग संकलनों अकादमी प्रकाशित करे। रचनन में भोजपुरी गंध होखे। मैथिली अकादमी के अच्छा चीज 'एडॉप्ट' करे के चाहीं। विदेशी भाषा के श्रेष्ठ रचनन के भी विद्वानन से अनुवाद कराके प्रकाशित करावे के चाहीं।

ब्रजकिशोर दूबे (कहानीकार, गीतकार, गायक) : लोग संजय गांधी जैविक उद्यान में प्राण वायु सेवन करे खातिर आवेला। डा. चन्द्र भूष्ण राय के नेतृत्व में भोजपुरी अकादमी के प्राण वायु मिलल।

प्रतिभा भारद्वाज (पत्रकार) : भोजपुरी अकादमी अश्लीलता के खिलाफ आयोजन करे।

विश्वनाथ शर्मा (भोजपुरी सेवी आ संग्रहकर्ता) : अकादमी के कार्य समर्पण भाव से होखे के चाहीं, औपचारिक भाव से ना।

डा. वीणा कुमारी (व्याख्याता, पटना वीमेन्स कालेज) : अकादमी में भोजपुरी भाषा साहित्य के एगो लाइब्रेरी होखे के चाहीं।

ओमप्रकाश : भोजपुरी साहित्य से नयकी पीढ़ी के जोड़े खातिर अकादमी कार्यशाला के आयेजन करे।

विश्वंभर मिश्र (पत्रकार): महादेव प्रसाद पर काम होखे के चाहीं।

राकेश कुमार : भोजपुरी अकादमी, पटना के आपन साइट होखे के चाहीं।

संजय : भोजपुरी अकादमी अश्लीलता के खिलाफ सेंसर करे।

विद्याचंद विकल (अध्यक्ष अनुसूचित जाति आयोग): भोजपुरी में स्कोप पिछलका कार्यन के देखत आगे बढ़े के चाहीं। एक तरह से एह बैठकी में भविष्य के भोजपुरी के रूप में रेखा तय हो रहल बा कि एकइसवीं सदी में ई देश-विदेश तक फइलो। अकादमी के जरिये भोजपुरी लोक-परम्परा आ जन नाट्य के प्रदर्शन होखे। 'बिदेसिया' के टीम में यदि केहू बांचल होख, त ओकरा के बोलावल जाव।

श्रीकांत (पत्रकार/निदेशक): जगजीवन राम सामाजिक शोध सेवा संस्थान, पटना : पटना में लिटरेचर फेस्टिवल भइल रहे। हमनी का रामाज्ञा राम (बिदेसिया) के बोलवले रहनीं जा, ट्रेडिशनल कार्य के बरकरार रखत आगे बढ़े के चाहीं। भोजपुरी भाषा आ साहित्य में सामर्थ्य के कमी नइखे।

कंचनबाला (भूतपूर्व अध्यक्ष भोजुपरी अकादमी पटना): बिहार भोजपुरी अकादमी के एगो नियत आफिस होखे के चाहीं। अकादमी एह बात के आश्वस्तिक करो कि कर्मचारी लोगन के वेतन के दिकदारी मत होखे। भोजपुरी के शब्द-संपदा बेजोड़ बा। ई अश्लीलता के प्रतीक ना ह। अकादमी का ओर से समय-समय पर गोष्ठी-सम्मेलन होत रहे के चाहीं।

डा. शंभूशरण सिन्हा : हम कई हाली भोजपुरी अकादमी के गोष्ठियन में शामिल भइल बानीं। हम देखले बानीं कि हर जगह हर घड़ी लोग दू फांट में बंट जाला। भोजपुरी खातिर समवेत सच्चा कोशिशे ना भइल। हमरा आज पहिला हाली भोजुपरी से सम्बंधित गोष्ठी में सामूहिकता के दर्शन भइल। भोजपुरी साहित्य, संस्कृति आ संस्कार राजनीति से प्रभावित हो रहल बा आ जन-सामान्य अपना भाषा के उदात्रता से कटत जा रहल बा। राजनीतिजन का हित पद, पइसा आ कुर्सी बचावे तक सीमित हो गइला से भोजपुरी के हित बाधित हो रहल बा। अश्लीलता व्यवसायिकता के वजह से आइल बा। बाकिर ई टिकी ना। आज उहे लोग इतिहास लिख रहल बा जे प्रबुद्ध भा समृद्ध बा। एह में इतिहास सांच नइखे लिखात, सोच के लिखात बा। भोजपुरी अकादमी के पत्रिका निकले। मुफ्त में मत बंटाव। बंटला से पत्रिका के 'मूल्य' कम हो जाला। महादेव प्रसाद पर रूचि पूर्वक सम्यक काम होखे। ऊ खाली संग्रहकर्ते ना, मौलिक रचनाकारो रहले।

डा. तैयब हुसैन पीड़ित : भोजपुरी अकादमी से हमारा पुरान नाता बा। हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय', शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी जइसन लोगन के जमाना में अकादमी अच्छा काम कइलस। पहिले एगो कार्य समिति बनत रहे। ऊ बने के चाहीं। ई कार्य समिति सरकार पर दबाव-समूह के कार्य करी। जब भोजपुरी आठवीं अनुसूची में शामिल हो जाई तब अकादमी के महत्वपूर्ण कार्य शुरू होई। ओह घरी व्याकरण, भाषा-विज्ञान आ साहित्य के तमाम विद्या के सतरीय रचनन के पढ़े-पढ़ावे के जरूरत पड़ी तअ अबे से एह दिशा में चयन, संग्रह आ प्रकाशन के प्रयास शुरू हो जाये के चाहीं। लोकतत्व आ शिष्ट साहित्य दूनो पर काम होखे के चाहीं। मजदूर वर्ग के जीवन स्तर में जबले सुधार ना होई, तले ऊ सस्ते मनोरंजन प्राप्त करिहें। अश्लीलता के प्रमुख वजह में गरीबियो बा आ गरीबी उन्मूलन कवनो सस्ता काम नइखे।

संचालन के दौरान संचालक श्री द्विवेदी वक्ता लोग के सामान्य परिचय दिहला के साथ-साथ लोगन के वक्तव्यन पर सारगर्भित टिप्पणी करत जात रहलन। एही क्रम में उनकर आपनो विचार प्रगट होत रहले स। श्री द्विवेदी के विचार रहे कि आरम्भ में 'पत्रिका' के कुछ अंक मुफ्तो बंटा सकत बा।

गोष्ठी के समापन अकादमी के अध्यक्ष के धन्यवाद ज्ञापन से भइल। ऊ कहले कि आर्थिक रूप से सरकारे के ऊपर निर्भर रहल बहुत ठीक ना होई, तबो हम जानत बानीं, हर क्षेत्र में सरकार के महत्वपूर्ण हैसियत आ भूमिका होला। रउआ सब कार्य करीं। हर

में मिल के काम होखे। हम धन के कमी ना होखे देब। रउआ सब हमरा के अकादमी पत्रिका के एगो नांवो सुझाईं !

याद करे के बात बा कि पाती के अंक (69-70) में बिहार भोजपुरी अकादमी, पटना आ एकरा तत्कालीन अध्यक्ष के नियम विरूद्ध आ संस्कृति निंदक कार्यन के विस्तृत समीक्षा छपल रहे। अंक आवत-आवत बहुत कुछ नया-पुरान हो चुकल रहे। डा. चन्द्रभूषण राय, अकादमी के नया अध्यक्ष नियुक्त हो चुकल रहले। पाती के ओह अंक पर उनकर प्रतिक्रिया उत्साहवर्द्धक रहे। 'पाती' संपादक का नॉवे अपना पत्र में भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के विकास आदि में पूरा-पूरा पारदर्शिता बरते के जवन बात ऊ कहले रहले, ओकरा प्रमाण अकादमी के एह आयोजन से मिलल।

माता, मातृभाषा आ अपना धरती से प्रेम करे वाला कबो निराश ना होखे। सच्चा भोजपुरिया एह बात के जानेला। ऊ सृजनात्मक शक्तियन से अनाचार ना करे। आशा बा, गोष्ठी में उठावल गइल बिन्दुअन का दिशा में अकादमी के कार्य प्रगति पर होई। ■ ■

गतिविधि–3

डा0 राम मनोहर लोहिया सेवा-संस्थान, भागलपुर के सांस्कृतिक-सामाजिक आयोजन

■ हीरा लाल 'हीरा'

विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्व0 परमहंस त्रिपाठी का पुण्य–तिथि पर आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम दिनांक 29 जुलाई से 31 जुलाई 2014 तक ओह कर्मठ समाजसेवी के स्मृति के सार्थक संदेश देबे खातिर भइल। विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सतीश त्रिपाठी का सत्प्रयास आ सहभागिता से दिनांक 31 जुलाई 2014 के देवरिया में, जनपदीय अधिकारियन का सहयोग से 'समानता खातिर दौड़' (रन फार इक्वलिटी) हाफ मैराथन प्रतियोगिता, ओह नारी सशक्तीकरण अभियान से जुड़ल रहे, जवना खातिर स्वर्गीय परमहंस त्रिपाठी संघर्षशील रहलन। एह काम के गति देबे खातिर ऊ अपना क्षेत्र में बालिका–विद्यालय, स्वास्थ्य केन्द्र, महिला–प्रशिक्षण केन्द्र जइसन कई गो आनुषांगिक संगठन खड़ा कइले रहलन। अपना भोजपुरी क्षेत्र के विकास खातिर ऊ सबसे पहिले मानसिक पिछड़ापन दूर करे के साथ साम्प्रदायिक सद्भाव के स्थापना, सामाजिक समानता में भाषिक निजता के विकास, आ क्षेत्रीय युवा–उर्जा के रचनात्मक उपयोग के पक्षधर रहलन। डा0 राममनोहर लोहिया सेवा संस्थान, भागलपुर के केन्द्र बना के, ऊ एह दिसाईं प्रयत्नशील रहलन।

29 जुलाई 2014 के एही केन्द्रीय स्थल पर 'चिन्तन–बइठकी' में श्री सतीश त्रिपाठी क्षेत्रीय लोगन आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन के पदाधिकारियन आ साहित्यकारन का साथ विचार–विनिमय कइलन, जवना क उद्देश्य विश्व भोजपुरी सम्मेलन के रचनात्मक पुनर्गठन आ ओके फेर से व्यवस्थित सक्रियता प्रदान कइल रहे। रात में, श्री परमहंस जी का गाँवें मोहलिया धर्मेर में एक घंटा क एगो कैरीकेचर नाट्य–प्रस्तुति बम्बई के एगो कलाकार विजयकुमार कइलन आ ओकरा बाद एगो कवि–संगोष्ठी आयोजित भइल, जवन धीरे–धीरे क्षेत्रीय श्रोता आ गँवई लोगन का उत्साहवर्द्धक सक्रियता का कारन घंटन तक चलल। एह कवि–सम्मेलन में हर कवि आपन दू दू गो रचना सुनावल। तन्मय श्रोता वृन्द का बीच भोजपुरी भाषा के स्तरीय काव्य–धारा में, भोजपुरी बोले–बतियावे आ जिये वालन के ई आसा बन्हाइल कि उनहनो लोग के भाषा भोजपुरी में ताकत आ ऊँचाई बा। वयोवृद्ध कवि श्री गिरिधर 'करुण' का अध्यक्षता में यशस्वी कवि पं0 हरिराम द्विवेदी, श्री कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र', डॉ0 अशोक द्विवेदी, डॉ0 कमलेश राय, श्री सुभाष यादव, शशि प्रेमदेव आ हीरालाल 'हीरा' के गीत–गजल आ व्यंग्य कविता के आस्वादन करत लोग देर रात ले बइठल रहे। कवि–सन्धया के संचालन डॉ0 कमलेश राय कइलन। आ अन्त में श्री सतीश त्रिपाठी धन्यवाद ज्ञापन कइलन। ■ ■

गतिविधि–4

स्वतंत्रता दिवस पर, मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली के आयोजन

■ सान्त्वना

आई0 टी0 ओ0 का लगे 'प्यारेलाल भवन' का सभागार में 10 अगस्त 2014 के दिल्ली सरकार का ओर से सुख्यात कवि केदारनाथ सिंह का अध्यक्षता में भोजपुरी, मैथिली कवि सम्मेलन भइल। स्वतंत्रता दिवस का उपलक्ष्य में आयोजित एह कार्यक्रम में अकादमी के उपाध्यक्ष श्री अजीत दुबे, श्री केदारनाथ सिंह के ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलला के बधाई देत, अंगवस्त्र से संमानित कइला के बाद आमंत्रित कवियन के स्वागत गुलदस्ता देके कइलन। अपना उद्‌गार में, अकादमी का ओर से बोलत श्री अजीत दुबे कहलन कि मैथिली आ भोजपुरी दूनो सगी बहिन हई। एन डी ए सरकार पछिला बेर मैथिली के संवैधानिक मान्यता देले रहे। अब देश में फेर एन डी ए सरकार बिया, जवन भारतीय भाषा सब के उन्नति आ सम्मान क पक्षधर बिया। उमेद बा भोजपुरी जल्दिये संवैधानिक मान्यता आ सम्मान पाई जवना के ऊ हकदार बा।

अकादमी के सचिव श्री राजेश सचदेवा गरिमामय ढंग से, आगंतुक मुख्य अतिथि आ कवियन क स्वागत करत अकादमी के आयोजन का प्रति आपन प्रतिबद्धता आ उछाह दरसवलन। महानगर का आपाधापी का बावजूद सभागार में भरपूर श्रोता उपस्थित रहलन। आजादी के उत्सव का उपलक्ष्य में भइल एह कवि संमेलन में मैथिली भोजपुरी के कवियन में श्रीमती शेफालिका वर्मा, श्री बुद्धिनाथ मिश्र, श्री अशोक द्विवेदी, श्री गुरूचरन सिंह, श्री सियाराम झा, श्री मंजर सुलेमान, श्री विनय कुमार शुक्ल, श्रीमती सुभद्रा वीरेन्द्र, श्री अजीत 'आजाद', श्री विजय झा, श्री जौहर शफियाबादी, श्री देवकान्त पाण्डेय, श्री मनोज भावुक, सुश्री कुमकुम झा, श्री चन्द्रेश, श्री मुन्ना पाठक, श्री संतोष पटेल आ श्री कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र' उपस्थित रहलन।

कवियन के सरस भाव प्रवण काव्य पाठ से श्रोता गण भाव विभोर रहे। सामयिक सन्दर्भ, देश समाज के सोच सरोकार आ चिन्ता से जुडल गीत आ गजलन के हर मर्मस्पर्शी लाइन पर सभागार में तालियन के गड़गड़ाहट ई प्रमाणित कइलस कि अकादमी के ई आयोजन सफल आ प्रभावी रहल। ■ ■

कुछ तीर कुछ तुक्का

■ ऋचा

स्वतंत्रता दिवस पर देश का प्रधान सेवक का रूप में लाल किला प प्रधान मंत्री के नया अन्दाज आ तौर तरीका में संबोधन का बाद टीवी चैनल वाला, एगो 'टी स्टाल' प बटुराइल लोगन किहाँ रायशुमारी करे पहुँचलल सऽ। उहाँ कुछ कांग्रेसी, कुछ भाजपाई कुछ राजद, जदयू वाला पहिलहीं से जमल रहलन, सऽ। बतकूचन जारी रहे। कवनो कांग्रेसी भाई कहत रहलन,

– 'प्रधानमंत्री के अइसन खराब आ कमजोर भासन हम ना सुनले रहनी। बिना लिखल भासन में कवन कमाल बा? एकरा पहिले कूल्हि कांग्रेसी प्रधान मंत्री बिना लिखले भासन देले बाड़न स।'

– 'पहिला बेर कवनो प्रधानमंत्री जनता से सोझ साफ आ जनधर्मी मुद्दा पर आपन बात रखले बा। बिना बुलेट प्रूफ शीशा के, बहुमत का बजाय सबका सहमति से आगा बढ़े बढ़ावे आ बुनियादी बातन प धेयान देबे के बात पहिले कहाँ होत रहे? गाँव का हर गरीब के चिन्ता, नौजवानन के चिन्ता, आ बेटियन का भविष्य के चिन्ता कूल्हि देखे के मिलल।' हर किसान के बीमा, आ मजूर के वित सहायता इहे न 'जरि से' बिकास हऽ!'

– 'लालकिला से जवन संदेश जाला ऊ पूरा संसार खातिर जाला। हमके त बड़ा शर्म आ दुख भइल जब प्रधानमंत्रीजी छोट बड़ इस्कूलन में लइका, लइकिन के टायलेट बनावे क बात कइलन, संसार क लोग का सोची?'

– 'सोची का? ऊ जान जाई कि साठन बरिस से राज करे वाला आजु ले टायलेट तक नइखन स बनवले?'

– 'त लोग आज ले टायलेट कहाँ करत रहल?'

– 'सड़की का किनारे या रेल लाइन पर! नहर पर, गंगा जी का घाट पर ना त घर का पिछुवारा? टायलेट खातिर जगहे के कमी बा हेतना बड़ देश में?'

– 'ऊ साम्प्रदायिकता पर साँसो ना घिंचलन।' देश में संप्रदायिकता फइल रहल बा!'

– 'ओकर त तोहन लोग पहिलहीं कचूमर निकाल चुकल बाड़ऽ जा।' चायो वाला मुस्कियाइल।

– 'पहिला बेर कवनों प्रधानमंत्री, बेटा–बेटी में फर्क के लेके, बाप–महतारी के संबोधन कइले बा। राष्ट्रमंडल में बेटियन का पदक जितला पर गर्व कइले बा। भ्रूण हत्या पर डॉक्टरन के तिजोरी भरला खातिर झाड़ लगवले बा।'

– 'छोड़ ऽ ना, ई सब त पहिलही कांग्रेस कर चुकल बिया।'

– 'हँ हँ तबे नऽ रेप करे वालन के मन अउरू बढ़ते गइल, तबे न खेल खेल में कामनवेल्थ–गेम घोटाला हो गइल। 2जी घोटाला, कोइला घोटाला, आदर्श घोटाला का का ना भइल? पशुअन के चारा ले खइलऽ जा।

– 'अरे इयार ऊ कवनो पार्टी के ना, समूचा देश के प्रधानमंत्री के भासन रहल। तबे न, 'शस्त्र छोड़ शास्त्र' के बात भइल। तबे न 'बंदूक का जगहा नवजवानन से हल उठावे' के अपील कइल गइल। पड़ोसी देशन आ आतंकियन के इहे सनेस रहे। सबके मिल जुल के आगा बढ़े के चाहीं। का भाईचारा आ शांति के बात ना होखे? बिवेकानंद के याद कइल खराब बा?

– 'त काहे ना कांग्रेस के बिपक्ष के नेता के पद दियाइल? काहे ना ए पार्टी के 'डिप्टी स्पीकर' चुनल गइल?

– 'कूल्हि थरिया हरमेसा तोहने लोग खातिर परोसल जाई? अउरियो लोग बा बिपक्ष में। एकाध बेर ई पद ओहू लोग के मिले के चाहीं। तवन भइल।

– 'इहाँ तानाशाही आ तालिबानी ढंग वाला रवैया चलावल जा रहल बा।'

– 'सत्य, न्याय आ धर्म के गला घोंटे वालन के एकर इयाद तब आवेला जब ऊ खुद संकट में परेलन सऽ।

टीवी चैनल वाला ई झाँव–झाँव सुनत पगलइला लेखा चिचियाइल, 'तोहन लोग का एह बकबक पर 'इमर्जेन्सी' लगा देबे के चाहीं।'

– 'काहें भाई? का ई कांग्रेस के राज हवे?' चाय वाला सवाल दगलस

– 'अरे भाई इहाँ त केहू, केहु क बाते नइखे सुनत! बस तू तू–मैं मैं में लागल बा।'

– 'इंहे नु 'लोकतंत्र' हऽ!' चाय वाला हँसत इतमीनान से बोलल, ''लऽ चाह पिय ऽ जा! आज प्रधानसेवक के शानदार भासन सुन के, तहन लोग के फिरी में पियावत बानी!'' ■■

भासा के खेल

■ शिलीमुख

हमसे का मतलब
ऊ भासा के चबाय-खाय भा चीखे ?
बाकिर भासा कवनो 'चिखना' त हऽ ना
कि जीभ से छुवाते
चटक सवाद क पता चल जाय
एसे, कुछ लोग पहिले हाली-हाली
ओके हूर लेला
फेर धीरे-धीरे चबात-खात पगुरावेला !

का फरक पड़त बा जदी कुछ लोग
एही का नाँव पर
आपन रोजिगार चलावऽता ?
हम भासा क ठीकदार थोरे हईं !

वइसे, कुछ नया सेवको
पैदा हो गइल बाड़न स एघरी भासा के
जे सेवकाई का नाँव पर कवि लेखकन के
नाँव, जस, पुरस्कार आ सम्मान के लेमनचूस
देखाइ के फुसिला लेलन सऽ
अकासबानी दूरदर्शन, कवि सम्मेलन भा
दान-दच्छिना भेंटाये वाला जगहा प
बोलवावे के तिकड़म बइठावेलन सऽ
कुछ त बकायदा अपना खास चेलन के
सम्मान भा पुरस्कार दियवाइ के
आपन पीठि ठोंकत
बाँहि पुजवावेलन सऽ !

अब भासा बेचारी का करो ?
देसी का नाते ना कवनो खास पहिचान ना पूछ
अबरा क मेहरि
भर गाँव क भउजाई !
हम भासा के देवर आ भासा के भसुर
बहुत देखनी, बाकि कुछ ससुर लोग बा,
जे ओकर जीयल काल क देले बा !
कुल लंगो-चंगो का बादो बेचारी भासा
जियते बिया/आपन ईजत बचावे बदे
खोंचियाइल नोचाइल बस्तर पर
पेवन सियते बिया !

हम बेर बेर दुखइनी/ओकरा के सुहरावत,
सइहारत आ सँवारत/माई अस सेवते रहि गइनी
ओकरा नाँव प जब जब जलसा भइल
त ससुर, भसुर आ देवर लोग
भासा क कूल्हि बड़का 'टेन्डर' ले लिहल !

त हे भाई लोगे
भासा का एह देसी खेल में
गलदानी आ गलदोदई खूब बा।
हमहूँ बेर बेर अपना मन के
इहे समझावत बानी
कि चलऽ, एह बेरी ना त
अगिले बेर सही
भासा का पूत के/कब्बो त दाँव पलटी !

■■

रजि० नं० – आर०एन० 3548/79 (वर्ष 1979)

पाती अंक 72-73/जून-सितंबर, 2014

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

40/76, LGF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 09310612995 E-plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक–सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ १११८, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-१९ से प्रकाशित।